हिंदीसे मराठी स्वयंशिक्षक

पंडित म. तु. कुलकर्णी

हिंदीसे मराठी स्वयंशिक्षक

मराठी—भाषा, व्याकरण, रचना, विचारका ज्ञान
महाराष्ट्र—सभ्यता, इतिहास, परिचय, साहित्यकी झाँकी।

* * *

लेखक
पंडित म. तु. कुलकर्णी

मूल्य ३.५० रुपये

चित्रशाला प्रकाशन : पुणे २

मुद्रक व प्रकाशक :
दा. त्र्यं. जोशी, बी. ए. (टिळक),
व्यवस्थापक, चित्रशाळा प्रेस,
१०२६ सदाशिव, पुणें २.

* * *

संशोधित व पुनर्वर्धित
दूसरा संस्करण

१९५९

कीमत : रु. ३.५०

* * *

मनोगत

निजके लिये—

यह कहते हुऐ मुझे बडा हर्ष होता है कि संघराज्यकी अटूट भावनाने मुझे 'हिंदीसे मराठी स्वयंशिक्षक' लिखनेमें बाध्य किया। इसी लिये यह तुच्छ भेंट आपकी सेवामें समर्पण करनेका मैं ढाढस कर रहा हूँ। मेरी यह धारणा है कि भारतवर्षकी नीतिको संपन्न बनाये रखनेके लिये प्रत्येक लेखक अपने लेखनमें संघकी भाषाको प्रथम स्थान दे और अनंतर प्रांतीय भाषाको। यदि सभी भाषाभाषी इस सिद्धान्तपर चलेंगे तो भारतवर्ष एक शक्ति ऐवं संपन्न देश बनेगा। अपनी इस निजी कल्पनाके अनुसार मैं हिंदीकी सेवा करता हूँ। यही कारण है कि हिंदी प्रांतसे सुदूर रहकर भी मैं कुछ हिंदी पुस्तकें लिख सका। जिनका यथोचित गौरव होनेसे मैं कृतार्थ बना। खासकर **धर्मवीर जुगल किशोरजी बिरला** का पुरस्कार तथा **श्री. रा. ब. विचारे** की आर्थिक सहायताको मैं कदापि नहीं भूल सकता, सेवाके बलपरही आजभी मैं अपना यह मनोगत गा उठता हूँ।

स्वयंशिक्षककी विशेषता—

आजकल **सभी विद्वत्जन यह चाहते हैं कि भाषाके साथ साथ जिस प्रांत या देशकी भाषा सीखनी है उस प्रांत या देशकी समूची जानकारी प्राप्त करें जिससे हमारे देशको हम लाभ पहुँचा सकें। कुछ सीख सकें।** केवल इसी लक्षको अपने संमुख रखकर मैंने यह पुस्तक लिखी है। मराठी भाषा और व्याकरणकी संपूर्ण जानकारी देनेके बाद भी इस पुस्तकके द्वारा छोटे छोटे पाठोंसे महाराष्ट्रके आचार-विचार व रीतिरिवाज की झाँकी दिखानेका मैंने प्रयास किया है। इससे मराठी सीखनेवालोंको और सीखे हुओंकोभी इससे कुछ लाभही होगा। मेरी यह धारणा है कि आजतक किसीने इस ढंगको नहीं अपनाया है। भविष्यतमें इससे कम जियादा प्रयत्न करके हिंदी भाषी जगत् की सेवाको संपन्न बनानेके लिये मेरी यह पुस्तक जड के रूपमें क्यों न हो काम आ सकती है। यह संशोधित तथा वर्धित दूसरा संस्करण अपना परीचय करानेमें स्वयं समर्थ बनेगा।

मेरे लिये यह गौवरकी बात है कि 'अखिल भारतीय हिंदी परिषद, आगरा'के द्वारा श्रद्धेय राजेंद्र बाबूजीने यह पुस्तक स्वीकृत की है जो 'पारंगत' परीक्षाके लिये नियत है। कतिपय विश्वविद्यालयोंने आंतरप्रांतीय भाषाओंके अध्ययनका प्रबंध किया है जिनमें मराठीभी एक है। अतः मेरी यह पुस्तक संघराज्यकी नीतिके अनुसार निश्चयही विश्वविद्यालयके लिये उपयुक्त सिद्ध होगी। जिन विश्वविद्यालयोंने आंतरप्रातीय भाषाओंको सिखाने का आयोजन किया है उन विद्यापीठोंके कर्णधार धन्य हैं। क्यों कि भविष्यत भारत का अपूर्व चित्र वे खींचना चाहते हैं।

कुछ आपसे—

मराठी कुछ कठीन अवश्य है परंतु पढनेवालोंके लिये नहीं। मराठीको आसान बनानेके उद्देश्यसे भाषा और व्याकरणका यथोचित परिचय कर देनेके बाद जानबूझकर इस पुस्तकमें पुनरुक्तियोंकी शरण मुझे लेनी पडी है। फिरभी ये पुनरुक्तियाँ मराठीका ज्ञान प्राप्त करानेके लिये दोषभाजनही बनेंगी। अतः त्रुटियोंकी ओर सहानुभूतिसे देखें और यह अनुभव प्राप्तकर मुझे सूचनाओंसे कृतार्थ बनाएँ। अगर बन सकें तो आपकी सहायतासे उन दोषोंकोभी दूर करनेमें मैं समर्थ बन सकूँगा। मात्र मुझे अपने द्वारा कृपापात्र बनानेपर यह निर्भर है। प्रथम संस्करणके बाद जो भी सूचनाएँ मुझे मिलीं उन सभीको मैंने बडे आनंदके साथ अपनाया और इस द्वितीय संस्करणमें उनका सदुपयोग किया है। जिससे व्याकरण व भाषाके अध्ययनमें बहुत कुछ सुविधा होनेकी उमीद रखता हूँ। मुझे विश्वास है कि मेरी सेवाको आप कृतार्थ बनाएँगे।

मकरसंक्रमण, संवत् २०१५
५६८ नारायण पेठ, पूना २

प्रार्थी
पं. म. तु. कुलकर्णी

क्यों और कैसे ?

यदि आप मराठी सीखेंगे तो—(१) प्रांतिक दुरभिमान जाता रहेगा। (२) महाराष्ट्रसे परिचित होंगे। (३) मराठी साहित्यकी बाढ को हिंदी सागरमें प्रवाहित कर सकेंगे। (४) महाराष्ट्रियोंके गुण-विशेषको आत्मसात् करेंगे। (५) एकत्वकी भावनाको व्यवहारमें लाएँगे।

(१) यह पुस्तक स्वयंशिक्षक है।

(२) पुस्तक योंही यदि आप पढते गये तो मराठीसे परिचित होंगे।

(३) मराठी का ढाँचा, रचना, व्याकरण अलग अलग भागोंसे अपना अपना परिचय करानेमें समर्थ होगा।

(४) 'महाराष्ट्र' की मराठी परिचित होनेके बाद उसके गुण-विशेषसे आप संतुष्ट होंगे।

(५) ज्ञानेश्वर, रामदास, तुकाराम आदि संतोंके दर्शन आप कर सकेंगे।

(६) 'डायरेक्ट मेथड' याने प्रत्यक्ष पद्धतिसे पुस्तक लिखनेके कारण अन्य प्रांतिक भाषाओंसे मराठी भाषा मुश्किल होते हुए भी आपको आसान प्रतीत होगी।

(७) महाराष्ट्रको, उसकी वृत्तिसे, आचारविचारोंसे इस छोटीसी पुस्तक द्वारा भी आप परिचित होंगे।

इसके अतिरिक्त क्यों और कैसे का उत्तर किस प्रकार मैं दे सकता हूँ? उचित यही होगा कि आप प्रथम मराठी भाषा सीखें। यही ठीक ठीक उत्तर हो सकता है।

—लेखक

: अनुक्रम व पाठपरिचय :

[अतिरिक्त अभ्यास, सूचनाएँ व प्रश्नपत्रसे भाषाविषयक ज्ञानको बढानेकी उचित सामग्री इस पुस्तकमें काफी है।]

* * *

१ : : वर्णक्रम और उच्चारण

हिंदी और मराठी इन दोनों भाषाओंका मातृ-स्थान एकही 'संस्कृत' है। भाषाएं अलग अलग हैं परन्तु दोनोंकी लिपि एकसी है। फरक केवल व्यंजनोंमें ळ, और ज्ञ का है। हिंदीमें ळ के बजाय ल, ज्ञ के ऐवजमें ग्य या ज्ञ के रूप उच्चारित किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त वर्णक्रममें कोई विशेष फरक नहीं है। ॠ, ॡ आदि स्वर हिंदीके अनुसारही मराठीमें हैं।

अ, झ, ण, ये रूप मराठीमें पहलेहीसे हैं। हिंदीमें भी अब इन रूपोंका प्रयोग किया जा रहा है।

ल का उच्चारण जिस प्रकार हम करते हैं उसी प्रकार परंतु ज़बानको अधिक पीछे हटाकर जोरसे यदि उच्चारण करेंगे तो ळ की ध्वनि स्वयं बाहर निकल आएगी। क्ष या क्ष के उच्चारणमें फरक नहीं है। मराठीमें भी अब क्ष के स्थानपर क्षही लिखा जा रहा है। ज्ञ के उच्चारणकी पूर्ति ग्य से नहीं होती। यदि आप द् + न् + य इन वर्णोंका उच्चारण एक साथ मिलाकर करेंगे तो ज्ञ का उच्चारण बिलकुल ठीक हो जाएगा।

क़, ख़, ग़, ज़, फ़, ड़, ढ़ इन वर्णोंके नीचे उच्चारणके स्पष्टीकरणार्थ बिन्दी लगानेकी पद्धति हिन्दीमें है। ये वर्ण बिंदीके साथ और बिंदीके अतिरिक्त भी हिंदीमें लिखे जाते हैं। दोनोंके उच्चारणमें और अर्थमें

फरक होता है। मराठीमें यह सुविधा नहीं है। उक्त बिंदीवाले वर्ण और बिना बिन्दीके वर्णोंको एकही रूपमें '**बिंदीविना**' लिखा जाता है और इन वर्णोंका उच्चारण अलग अलग होता है। जिससे असुविधा अवश्य होती है। परंतु आदतके कारण मराठी भाषाभाषी अर्थभेदको समझ लेते हैं। हिंदीवालोंको कुछ कठिनाई होगी। परंतु आदत और अभ्याससेही वह दूर हो सकती है। हिंदीमें च वर्गका उच्चारण संस्कृतके अनुसार करते हैं। उदा० **च्य**। मराठीमें च़ और च्य दोनों उच्चारण प्रचलित हैं। उनमें भेद नहीं है।

वर्ण-विशेषताके कारण मराठीकी वर्णावलीमें कोई फरक नहीं है। एक तो शब्दसंपत्ति पर्याप्त है और शब्दोंपर वर्ण उच्चारणका कोई विशेष प्रभाव माना नहीं जाता है। अतः मराठीमें वर्णक्रम और उसके उच्चारणमें कोई ख़ास फरक नहीं है। हिन्दीमें भी आजकल बिंदियोंका उपयोग कम किया जा रहा है। बिंदीरहित वर्ण-उच्चारणके अनुसारही मराठी वर्णक्रमके उच्चारण हैं।

क्र को क्‍र, प्र को प्‍र, द्व को द्‌व, ध्द को द्‌ध आदि जोडाक्षरोंकी लेखनशैलीमें जो परिवर्तन प्रचलित होता जा रहा है। वह आसान, सुयोग्य और परिचित होनेके कारण उसके समझनेमें कोई कठिनाई उपस्थित नहीं हो सकती। हिंदी के विद्वान साहित्यिक भी इन सुझावोंको स्वीकृत करते हैं और कतिपय सज्जन इस सुधारके अनुसार लिखतेभी हैं। अ आ की बारहखडीमें मात्र इ, उ, ए के रूप मराठीमें परिवर्तित हो रहे हैं। व्यंजनोंमें जिन चिन्होंका उपयोग किया जाता है उन्हीं चिन्होंका उपयोग अ आ की बारहखडीमें किया गया तो ये रूप बहुत जल्द आप सीख सकेंगे। यदि आपने इ, उ, ए के रूपोंको भी लिखा तो वे ग़लत नहीं हैं। ये दोनों रूप प्रचलित हैं परंतु पहले के रूप अब लुप्त होते जा रहे हैं।

च वर्ग के उच्चारणपर विशेष ध्यान दें। क, ख, ग, ड, ढ इनके उच्चारण समान होते हैं।

अनुस्वार की एकही पद्धति मराठीमें चालू है। अर्ध अनुस्वारके लिये हिंदीमें ँ (चंद्रबिंदी) चिन्ह लगाया जाता है। अक्षरके ऊपर मराठीमें केवल अनुस्वार देते हैं। पूर्ण अनुस्वारके लिये न, ण, म का उपयोग भी किया जाता है। उ०:—संबंध को सम्बन्ध, नंतर को नन्तर, भंडार को भण्डार, अर्थात अनुनासिक या अनुस्वारयुक्त अक्षरोंपर अनुस्वार लगाकर उसका उच्चारण अनुनासिकके अनुसार करते हैं। शब्दसंग्रहसेही भाषाका अभ्यास होता है।

मतलब यह है कि हिंदी और मराठी के वर्णक्रम और उनके उच्चारणमें कोई विशेष अंतर नहीं है। आप आसानीसे मराठी सीख सकते हैं। बारह खडीकी पढाई हिंदीके समानही मराठीमें होती है।

स्वर—	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
व्यंजन—	क	ख	ग	घ	ङ	
	च	छ	ज	झ	ञ	
	ट	ठ	ड	ढ	ण	
	त	थ	द	ध	न	
	प	फ	ब	भ	म	
	य	र	ल	व	श	
	ष	स	ह	ळ	क्ष	ज्ञ

* * *

२ : : (परिचय) ओळख

[२ से ४ पाठ केवल पढाईके लिये हैं]

माझें नांव यशवंत गणेश खरे आहे.
मी नूतन विद्यालयांत शिकतों.
सहावीचा मी वर्गप्रमुख आहें.
आमच्या वर्गात बावीस मुलें आहेत.
अकरा मुलीहि आहेत.
आमच्या येथें सहशिक्षण चालू आहे.
माझें वय अकरा वर्षांचें आहे.
मी अत्यंत गरीब आहें.
माझे वडील पेन्शनर आहेत.
मी डॉक्टर होणार आहें.
माझी उंची ४ फूट ३ इंच आहे.
माझें वजन ९२ पौंड आहे.
मी नियमित वागतों.
आम्ही मनानें श्रीमंत आहोंत.
मला शिक्षण घेतलेंच पाहिजे.
आमच्या वर्गात १० बाकें व १ खुर्ची आहे.
शाळेंत एक बाग आहे.
बागेंत फुलें येतात.
मी बागेचें काम करतों.
शाळेंतहि कामें करतों.
म्हणून मी नादार आहें.
मी माधुकरी मागतों.
वर्तमानपत्रेंहि विकतों.

माझा खर्च मी करतों.
मी पांच रुपये महिना मिळवितों.

कठिन शब्दार्थ

ओळख–स्त्री. परिचय, पहचान **माझें**–नपुं. मेरा **नाव**–नपुं. नाम **आहे**–क्रि. है **मी**–स. मैं **मध्यें**–में **शिकतों**–क्रि. पढता हूँ **मुलें**–नपुं. लडके **वर्ग**–पु. कक्षा, दरजा **सहावी**–स्त्री. छटी **चा**–विभक्ति प्रत्यय. का **आमच्या**–हमारे, हमारा **वर्गांत**–पु. कक्षामें **बावीस**–वि. बाईस **वडील**–पु. पिता **होणार**–क्रि. होनेवाला **आहेत**–क्रि. हैं **अकरा**–वि. ग्यारह **मुली**–स्त्री. लडकियाँ **हि**–अ. भी **येथें** अ. यहाँ **वय**–नपुं. आयु **अत्यंत**–अ. बहुतही **पाहिजे**–क्रि. चाहिये **फुलें**–नपुं. फूल **म्हणून**–अ. इसी लिये **विकतों**–क्रि. बेचता हूँ **वजन**–नपुं. तौल **वागतो**–क्रि- बर्ताव करता हूँ **मनाने**–नपुं. दिलसे **आहोंत**–क्रि. हैं **मला**–स. मुझे **शिक्षण**–नपुं. शिक्षा **घेतों**–क्रि. लेता हूँ **शाळेंत**–स्त्री. शालामें **येतात**–क्रि. आते हैं **मानतों**–क्रि. माँगता हूँ **मिळवितों**–क्रि. कमाता हूँ।

[शब्दार्थकी रचना उनके उपयोगपर निर्धारित की गयी है। इससे भाषाका परिचय बहुत जल्द होता है।]

इस पाठमें

वर्तमानकालवाचक वाक्य हैं।
पुल्लिंग, उत्तम पुरुषकाही उपयोग किया है।
गरीब विद्यार्थीके जीवन का ढाँचा है।
एक अनाथ विद्यार्थीके जीवन का परिचय है।

आप बतला सकते हैं

इस पाठमें कौन कौनसी क्रियाएं हैं?
सर्वनाम कितने हैं?
बहुवचन कितने हैं?
एकवचनकी संख्या क्या है?
विभक्तिप्रत्यय (कारक) के प्रयुक्त रूप कितने हैं?

* * *

३ : : खेळांतील आई

मी आई आहें. मला एकहि मूल नाहीं. मी लहान आहें. खेळांतली आई आहे. मला माहेर आहे. सासरहि आहे. मुलांची मी काळजी घेतें. त्यांचे कपडे शिवतें. त्यांना न्हाऊं घालतें. स्वयंपाक करतें. माझा मुलगा हुशार आहे. मुलगी अडाणी आहे. आम्ही रोज खेळतों. सरोज, रमा येतात. मी शाळेंत जातें. त्याहि येतात. आम्ही बरोबर शिकतों. मी थंड पाण्यानें अंग धुतें. रमेश ऊन पाण्यानें आंघोळ करतो. आई आम्हांला खेळ शिकविते. आम्ही खेळ खेळतों. खेळांत भांडणें होतात. आम्ही रागावत नाहीं. रागावलों तरी विसरतों. म्हणूनच मी आई आहें.

कठिन शब्दार्थ

सूल–नपुं. बालक लहान–वि. छोटी, छोटा खेळांतली–स्त्री. खेलमेंकी माहेर–नपुं. मायका सासर–नपुं. ससुराल मुलांची–नपुं. बच्चोंकी काळजी घेते–स्त्री. फिक्र करती हूँ हुशार–वि. होशियार मुलगी–स्त्री. लडकी अडाणी–वि. गँवार आम्ही–सर्व. हम त्यांचे–सर्व. उनके शिवतें–स्त्री. क्रि. सीती हूँ त्यांना–सर्व. उनको न्हाऊं घालतें–क्रि. नहलाती हूँ स्वयंपाक–पु. भोजन करते–क्रि. बनाती हूँ मुलगा–पु. लडका थंड–वि. ठंडे, शीतल पाण्यानें–नपुं. पानीसे अंग–नपुं. शरीर धुतें–क्रि. धोती हूँ रोज–रोजाना, हररोज खेळतों–क्रि. खेलते हैं येतात–क्रि. आती हैं जातें–क्रि. जाती हूँ बरोबर–अ. साथ शिकतों–क्रि. पढते हैं नाहींत–क्रि. नहीं हैं विसरतों–क्रि. भूलते हैं ऊन–नपुं. गरम आंघोळ करतो–क्रि. नहाता हूँ आम्हांला –सर्व. हमें भांडणें–नपुं. झगडे रागवत नाहीं–क्रि. गुस्सा नहीं होते तरी–अ. फिरभी.

इस पाठमें

वर्तमानकालके वाक्य हैं।

स्त्रीलिंग उत्तम पुरुषका प्रयोग है।

माताके स्वभावका चित्रण है।

बालिकाके जीवनका निर्देश है।

बतलाइये :—क्रियायें, वचन, लिंग, सर्वनाम, इस पाठमें कौन कौनसे हैं?

* * *

४ : : तो, ती, तें

तें फळ आहे. फळें चांगलीं असतात. सीताफळ, रामफळ, फारच चांगलें. तीं रसाळ व गोड असतात. पचनास चांगलीं व पौष्टिक असतात. ती घरीं जात आहे. त्या पास झाल्या. तो घर बांधीत आहे. तूंहि लौकर बांध. मी त्या घरांत राहतों. तुम्ही घरीं जा. त्याचें घर चांगलें आहे. तुमचें फारच मोठें आहे. माझें लहान व सुंदर आहे. त्या झाडांना कांटे आहेत. म्हणून तीं झाडें वाईट. फुलांना सुगंध असतो. कांटेहि असतात. फुलांचे हार करतात. त्यांना फुलें आवडतात. तो फुलें विकतो, ती फुलें विकते, तें फुलें विकतें. यांचा हा धंदा आहे.

कठिन शब्दार्थ

तो,ती, तें–सर्व. वह चांगलीं–वि. अच्छे माणसें–पु.मनुष्य फळें–नपुं. फल खातात–क्रि. खाते हैं रसाळ–वि. रसयुक्त गोड–वि. मीठा पचनास–नपुं. हजमियत के लिये राहतों–क्रि. रहता हूँ तुम्ही–सर्व. तुम जा–क्रि. जाओ, जाइये, जा त्योंच–सर्व. उसका मोठे–वि. बडे त्याला–

सर्व. उसको कांटें–पु. काँटे हा, ही, हें–सर्व. यह धंदा–पु. व्यापार, धंधा त्यांचा–सर्व. उनका घरीं–नपुं. मकानको, मकानमें जात–क्रि. जाती तें, त्या, तीं–सर्व. वे झाल्या–क्रि. हुई बांधीत–क्रि. बांध रहा लौकर–अ. जल्दी तूंहि–सर्व. तूभी त्या–सर्व. उस झाडें–नपुं. झाड, दरख्त वाईट–वि. बुरे, खराब फुलांना–नपुं. फूलोंको असतो–क्रि. रहता है, होता है हार–पु. मालाएं करतात–क्रि. करते हैं आवडतात –क्रि. भाँते हैं विकतात–क्रि. बेचते हैं वेचितात–क्रि. चुनते हैं

इस पाठमें

प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरुषके रूप हैं। सर्वनाम, उनके वचन और लिंग हैं। मराठीके अनुसार तीनों लिंगोंका परिचय है। षष्ठी, द्वितीया, सप्तमीके विभक्तिके रूप हैं। वर्तमान क्रियाओंके रूप हैं। दर्शक सर्वनामभी हैं।

अभ्यास

[गत तीनों पाठ केवल पढाईके लिये, मराठी भाषाका स्वरूप समझानेके हेतु दिये गये हैं। अतः इन पाठोंमें जिन संज्ञाओंका उपयोग किया गया है उनको समझानेकी चेष्टा नहीं की गयी। मात्र यदि हो सकें तो इन पाठोंका हिंदीमें अनुवाद अवश्य कीजिये।]

शब्दार्थ बतलाइये:—

वय, मुलगा, मुलें, शिक्षण, वजन, गोड, त्याला, हा, ही, चांगला, धंदा, अडाणी, थंड, मी.

लिंग बतलाइये और वचन कहिये:—

मुलें, मुलगा, मुली, फळें, तें, तो, फूल, झाडें, पक्वान्न, शाळा, त्या, आम्हीं.

क्रियाओंके वचन और अर्थ बतलाइये:—

घेतो, शिकतात, जातात, करितों, मागतात, विकणें, वेंचतो, धुतो, विकते, खेळतो, येतो, मिळवितात.

* * *

५ : : व्याकरणविषयक शब्दार्थ

नाम—वस्तुओंके नाम उ.:-घोडा, राम आदि.

सर्वनाम—वस्तुओंके और भावोंके ऐवजमें लिखे जानेवाले शब्द। उ०:-तो, जो, हा.

विशेषण—संज्ञाओंकी विशेषता बतलानेवाले शब्द। उ०:-काळा, पांढरा, गोड.

क्रियापद—कार्यपूर्तिके सूचक शब्द। उ०:-गेला, जाईल, खातो, घाबरला, जाणें, येणें, बसणें.

कर्ता—कार्य करनेवाला। 'गणू आंबा खातो.' इस वाक्यमें 'गणू' कर्ता, 'आंबा' कर्म, और 'खातो' क्रिया।

कर्म—कार्य. इसपर कृतिका परिणाम होता है।

अव्यय—वे शब्द जिनमें फरक नहीं होता। जिनका व्यय नहीं होता। उ.:-जर, तर, कारण इत्यादि।

विभक्तिप्रत्यय—क्रियासे संबंध निर्धारित कर देनेवाला पद। उ०:-नें, शीं, चा आदि; शरिरास, शरिरानें.

वचन—गिनती सूचक शब्द, विभाग दो: एकवचन और बहुवचन।

विशेषनाम—वस्तुओंको पहचाननेके लिये खासकर जो संज्ञा दी जाती है। उ०:-राम, सीता आदि.

सामान्यनाम—सर्वसाधारण नाम। उ०:-खुर्ची, ब्राह्मण, शिंपी, शिक्षक, लाकूड.

लिंग—जातिबोधक शब्द। राम (पु.), सीता (स्त्री.), घर (नपुं.)

उपसर्ग—शब्दोंके प्रारंभमें आनेवाला पद। उ०:-अ + कारण = अकारण; शब्द + अर्थ-शब्दार्थ.

उपपद वा प्रत्यय—शब्दके अंतमें आनेवाला पद।

कुत्रा

एक होता कुत्रा. तो फार इमानदार होता. त्याचें नांव होतें जॉन. घराची राखण करणें, अपरिचित माणसाला घरांत न येऊं देणें हें त्याचें काम. तो भुंकत असे पण क्वचित्. भुंकला कीं त्याची भीति वाटत असे. त्याच्यांत एक खोड होती. तो चावत नसे. आणि म्हणूनच त्याच्या भुंकण्याला किंमत नव्हती. शेजारचीं मुलें जातां येतां त्याला दगड मारीत. यामुळें तो फार चिडत असे.

एकदां अंगणांत झोपला असतां त्याला मुलांनीं खूप दगड मारले. तेव्हां तो रागावला आणि एका मुलाला चावला. तेव्हांपासून त्याची सर्वांना भीति वाटूं लागली. आतां तो मजेनें झोपत असे. घराचीहि उत्तम राखण करीत असे. दुसऱ्याला चावल्यामुळें मालकानें त्याला फार मारलें. त्याला जेवण दिलें नाहीं. तरी पण तो घर सोडून गेला नाहीं. मालकावर रागावला नाहीं. त्याचें चावणें मात्र मालकाला व त्याला लाभदायक ठरलें.

कठिन शब्दार्थ

होता–क्रि. था फार–वि. बहुत त्याचें–सर्व. उसको राखण–क्रि. रक्षा हें–सर्व यह. भुंकत असे–क्रि. भूंकता था कीं–अ. क्रि वाटत असे–लगता था त्याच्यांत–स. उसमें. खोड–स्त्री. आदत. चावत नसे–नहीं काटता था नव्हती–क्रि. न थी शेजारचीं–पडोसके मुलें–लडके चिडत असे–चिढ़ता था झोपला असतां–सोनेपर दगड–पु. पत्थर तेव्हांपासून–तबसे जेवण–नपुं. खाना सोडून–क्रि. छोडकर ठरलें–क्रि. सिद्ध हुआ।

अभ्यास

मराठीमें उत्तर दीजियेः—१. कुत्ता कैसा था? २. उसमें कौनसी आदत थी? ३. उसने क्यों काटा? ४. नतीजा क्या हुआ?

* * *

६ : : कारक व पुरुष

व्याकरणविषयक लिंग, वचन, कर्तरि, क्रिया आदि प्रयोग हिंदीके अनुसारही मराठीमें हैं। मराठीमें संज्ञाको **नाम** और क्रियाको **क्रियापद** कहते हैं। इनके अतिरिक्त जितने भी व्याकरणविषयक शब्द हिंदीमें हैं वे मराठीमें भी हैं। बहुवचनको **अनेकवचन** कहते हैं। बहुवचन भी प्रचलित है। कारकको मराठीमें **विभक्ती** कहते हैं। जैसे प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, संबोधन । मराठीमें निम्न कारक हैं।

विभक्ती	अर्थ	हिंदी प्रत्यय	मराठी प्रत्यय	
			ए. व.	ब. व.
प्रथमा	कर्ता	० ने	नें	नें
द्वितीया	कर्म	० को	स, ला, तें	स, ला, ना, तें
तृतीया	करण	से	नें, एं, शीं,	नीं, हीं, शीं
चतुर्थी	संप्रदान	को	स, ला, तें	स, ला, ना, तें
पंचमी	अपादान	से	ऊन, हून	ऊन, हून
षष्ठी	संबंध	का, की, के	चा, ची, चे	चें च्या, चीं
सप्तमी	अधिकरण	में, पर, पै	त, ई आं,	त, ई, आं
संबोधन				नो

स्पष्टीकरण

वह कलकत्ता या कलकत्तेको जाता है = तो कलकत्त्याला जातो. अथवा कलकत्त्यास जातो. अन्य कारक याने विभक्ती प्रत्यय स्वयं लगाकर आप देख सकते हैं।

हे राम, का मराठी प्रयोग '**हे राम या अरे राम**' हे सीता या अरी सीता का '**हे सीते या अग सीते**' होता है। भाइ यों और बहनों का मराठी प्रयोग 'बंधूंनों आणि भगिनींनों' इस प्रकार होता है ।

रक्षा, शिक्षा, चेष्टा, तमाशा, रांड आदि शब्दोंके मराठीमें बहुत विपरीत अर्थ होते हैं। अतः शब्दप्रयोग बहुत सावधानीसे करना चाहिये। उक्त शब्दोंके मराठी अर्थ भस्म (राख), सजा, दिल्लगी, नाचरंग, वेश्या आदि हैं। मात्र इन शब्दोंके कारण कोई संभ्रम न निर्माण होना चाहिये। ऐसे शब्द बहुत कम हैं। निर्भय होकर आप बोलते जाइये !

पुरुषवाचक सर्वनाम

	ए. वचन	बहुवचन
प्रथम या उत्तम पुरुष :	मैं–मी	हम–आम्ही
द्वितीय या मध्यम पुरुष :	तू–तूं	तुम–तुम्ही आप–आपण
तृतीय या अन्य पुरुष :	वह–तो, ती, तें;	वे–ते, त्या, तीं

मैं हूँ–मी आहें	हम हैं–आम्ही आहोंत
तू है–तूं आहेस	तुम हो–तुम्ही आहांत आप हैं–आपण आहांत

वह है–तो, ती, तें, आहे; वे हैं–ते, त्या, तीं आहेत.

तृतीय पुरुषके ये जो तीन प्रत्यय दिये हैं वे पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंगके लिये हैं। हिंदीमें पुल्लिंग और स्त्रीलिंगके लिये वह, वे-काही प्रयोग होता है। उदा.:—'वह है के लिये तो आहे, ती आहे, तें आहे भी होगा।

हिंदीमें (।) दण्ड देकर पूर्णविरामकी पूर्ति करते हैं। मराठीमें दण्ड कदापि नहीं दिया जाता, (.) पूर्णविराम दिया जाता है। प्रारंभहीमें इसका ध्यान रहे। मात्र यह दण्ड काव्यमें चरण पूर्ण होनेके बाद दिया जाता है। इसको **चरणरेघ** कहते हैं। उद्‌गार, प्रश्न, स्वल्प,

अवतरण आदि चिन्ह हिंदीके अनुसारही मराठीमें दिये जाते हैं। कोष्ठक को मराठीमें कंस कहते हैं।

फुलें

फुलांच्या पुष्कळ जाति आहेत. मोगरा, जाई, जुई, शेवंती इत्यादि. कांहीं फुलें शोभेचीं असतात. तीं मोठीं डौलदार दिसतात. कांहीं फुलें रानटी असतात. त्यांच्यांत सुगंध असतो. परंतु तो लांबूनच घ्यावयाचा असतो, जवळून नव्हे. शोभेचीं फुलें रातराणी, सूर्यफूल इत्यादि आहेत. हीं शोभेचीं फुलें विदेशी आहेत.

फूल प्रत्येकाला आवडतें. कारण तें डोळ्यांना व मनाला प्रफुल्लित करतें, शोभा वाढवितें. सुगंध पसरवितें. म्हणून प्रत्येकाला फूल हवें-हवेंसें वाटतें. कांहीं फुलांचें अत्तर करितात. अत्तर महाग असतें. गरीब लोक अत्तर वापरूं शकत नाहींत. अत्तर सुगंधित जरी असलें तरी फुलांचे गुण त्यांत नसतात. फुलांच्या पानांनीं वाऱ्यांतील दोष नाहींसे होतात. सुगंधानें दुर्गंधी नाहींशी होते. अत्तरामुळें सुगंध पसरतो. पण दुर्गंध नाहींसा होत नाहीं. दुर्गंध, आपल्या दुष्परिणामानें हानि करतोच. म्हणून अत्तरापेक्षां फुलांचा उपयोग करावा. आकारानें, रंगानें, रूपानें व वासानें गुलाबाचें फूल सर्वश्रेष्ठ आहे. म्हणून गुलाबाच्या फुलाला फुलांचा राजा म्हणतात. फुलें रोपट्यांवरच शोभून दिसतात. त्यांना तोडणें पाप आहे, कारण त्यांनाहि जीवन असतें.

कठिन शब्दार्थ

पुष्कळ—वि. बहुत, कई **मोगरा**—पु. मोतिया **जाई**—स्त्री. जाही **जुई**—स्त्री. जूही **शेवंती**—स्त्री. एक फूलका नाम **डौलदार**—वि. सुडौल **रानटी**—वि. जंगली **लांबूनच**—दूरहीसे **घ्यावयाचा असतो**—लेना पडता है **जळून नव्हे**— नजदीकसे नहीं **आवडतें**—क्रि. भाता है **सुगंध**—पु. (हिंदीमें स्त्रीलिंग) खुशबू **डोळ्यांना**—पु. आँखोंको **हवेहवेसे**

वांटतें–चाहता है अत्तर–नपुं. इत्र महाग–वि. महँगा तोडणें–क्रि. काटना रोपटें–नपुं. पौधा शोभेची–स्त्री. शोभा देनेवाली पसरविते–क्रि. फैलाती है वापरणें–क्रि. उपयोगमें लाना वास–पु. गंध, बू.

अभ्यास

१. मराठीमें उत्तर दीजियेः—गुलाबको फूलोंका राजा क्यों कहते हैं ? फूलोंका उपयोग किस प्रकार लेना चाहिये ? कुछ फूलोंके नाम बताइये। फूलोंको काटना पाप क्यों है।

२. फूल इस पाठसे बहुवचनी और एकवचनी क्रियाएं बतलाइये क्रियाओंमें परिवर्तन कीजिये।

* * *

८ : : क्रियाओंके रूप

क्रियाका मूल रूप, वर्तमान, भूत और भविष्य इस संग्रह में हमने प्रथम दर्शित किये हैं। क्रियाओंके परिवर्तनोंपर अवश्य ध्यान दें। नियम अवश्य देखें परंतु यदि आप अभ्यास बढाएंगे तो ये नियम स्वयं पाठांतरित हो जाएंगे। निम्न रूपोंके कर्ता तृ. पु. पुल्लिंग और ए. व. हैं।

क्रियाएं	वर्तमान	भूत	भविष्य
देणें–देना	देतो	दिला	देईल
घेणें–लेना	घेतो	घेतला	घेईल
हरवणें–खोना	हरवतो	हरवला	हरवील
आणणें–लाना	आणतो	आणला	आणील
घालविणें–गँवाना	घालवितो	घालविला	घालवील
बनविणें–बनाना	बनवितो	बनविला	बनवील

सांगणें–कहना	सांगतो	सांगितला	सांगेल
समजाविणें–समझाना	समजावितो	समजाविले	समजावील
घाबरणें–डरना, घबराना	घाबरतो	घाबरला	घाबरेल
झोपणें–सोना	झोपतो	झोपला	झोपेल
धुणें–धोना	धुतो	धुतला	धुईल
वसविणें–बसाना	वसावितो	वसाविला	वसवील
येणें–आना	येतो	आला	येईल
जाणें–जाना	जातो	गेला	जाईल
होणें–होना	होतो	होता, झाला	होईल
वसणें–बैठना	बसतो	बसला	बसेल
खाणें–खाना	खातो	खाल्ला	खाईल
असणें–होना	आहे	होता	असेल
नसणें–न होना	नाहीं	नव्हता	नसेल

मराठीमें **पुल्लिंग, स्त्रीलिंग** और **नपुंसकलिंग** ये तीन लिंग हैं। लिंग समझनेमें कठिनाई होनेके कारण अन्यभाषिक मराठी बोलते समय बहुतसी गलतियाँ कर बैठते हैं। अतः प्रत्येक शब्दका लिंग समझना बहूत जरूरी है। अन्यथा अर्थका अनर्थ होगा।

क्रियाका रूप और वचन सकर्मक और अकर्मक क्रियाओंके अनुसार बदलता है। विशेषणके रूप हिंदीके अनुसारही बदलते हैं।

देणें क्रियाका उपयोग

वर्तमान	भूत	भविष्य
मी देतों –मैं देता हूँ पु.	दिलें–दिया	देईन–दूँगा
” देतें –मैं देती हूँ स्त्री.	दिलें–दिया	देईन–दूँगी
आम्ही देतों–हम देते हैं पु.	दिलें–दिया	देऊं–देंगे
” देतों –हम देती हैं स्त्री.	दिलें–दिया	देऊं–देंगी

तूं देतो —तू देता है पु.		दिलें–दिया	देशील–देगा
” देते–तू देती है स्त्री.		दिले–दिया	देशील–देगी
तुम्ही देतां–तुम देते हो पु.		दिलें–दिया	द्याल–दोगे
” देतां –तुम देती हो स्त्री.		दिलें–दिया	द्याल–दोगी
आपण देतां–आप देते हैं पु.		दिलें–दिया	द्याल–देंगे
आप देती हैं स्त्री.		दिलें–दिया	द्याल–देंगी
तो देतो–वह देता है पु.	त्यानें	दिलें–दिया	देईल–देगा
ती देते–वह देती है स्त्री.	तिनें	दिलें–दिया	देईल–देगी
तें देतें–(रूप नहीं है) नपुं.	त्यानें	दिलें–(रू.न.)	देईल–(रू.न.)
ते देतात–वे देते हैं पु.	त्यांनीं	दिलें–दिया	देतील–देंगे
त्या देतात–वे देती हैं स्त्री.	त्यांनीं	दिलें–दिया	देतील–देंगी
तीं देतात (रूप नहीं है) नपुं.	त्यांनीं	दिलें–(रू.न.)	देतील–(रू.न.)

हिंदीमें भाषांतर कीजिये–

रामा दूध आणतो. गणेश दही खातो. ताक स्वस्त असतें. लोणी महाग असतें. दुधापासून दही, ताक, लोणी व तूप करतात. ताक पाचक असतें. दुधानें शक्ति वाढते. गाईचें दूध सर्वांत चांगलें असतें. म्हशीच्या दुधानें लठ्ठपणा येतो. शेळीचें दूध उत्तम असतें. गवळी दूध आणतो. मुलें दूध पितात. गाई चारा खातात; पाणी पितात. गोठ्यांत झोपतात. रानांत चरतात. गाइचें शेण उपयोगी पडतें. त्याच्या गोवऱ्या लावतात. गाईचें दूध गवळी काढतो. वासरूं आलें कीं गाय हंबरते. गाईचा उपयोग फार होतो. म्हणूनच ती पूज्य मानतात. गाईला चार पाय असतात. दोन डोळे असतात. दोन शिंगें असतात.

कठिन शब्दार्थ

ताक–नपुं. छाछ **लोणी**–नपुं. माखन. **दुधापासून**–दूधसे तूप–नपुं. घी **म्हैस**–स्त्री. भैंस **लठ्ठपणा**–वि. मोटापा **शेळी**–स्त्री. बकरी

चारा–पु. घास **गवळी**–पु. गोप **गोठ्यांत**–पु. जानवर बांधनेका स्थान. **गोवऱ्या**–स्त्री. उपले **गुराखी**–पु. चरवाहा **वासरूं**–नपुं. बछडा **हंबरते**–क्रि. रंभाती है ।

अभ्यास

१. मराठीमें उत्तर दीजिये:— गौको कहाँ बांधते हैं ? गौको कौन चराता है ? गौका दूध अच्छा क्यों ? दूधसे क्या क्या बनता है ? हम किन किन जानवरोंका दूध पीते हैं ? गौको हम पूजनीया क्यों मानते हैं ? गौका वर्णन करो ।

२. मराठीमें लिंग और वचन बतलाइये:— दूध, दही, गोवरी, गुराखी, वासरूं, गोंठा.

३. उपर्युक्त भाषांतरसे क्रियाओंके लिंग और वचन पहचानिये !

* * *

८ : : लिंगकी पहचान

मराठी भाषामें ३ लिंग होनेके कारण यह भाषा सीखनेमें किसी अंशमें मुश्किल अवश्य प्रतीत होती है । मात्र निम्न तालिका यदि अभ्यासपूर्वक ध्यानमें रखी गयी तो लिंग पहचाननेमें विशेष कठिनायी न होगी और यदि लिंग पहचाननेके आप अभ्यस्त हो गये तो निश्चयही मराठी भाषापर आप विजय पा सकेंगे ।

क्रियाओंके रूप या विशेषणके रूप भी लिंगोंके अनुसार बदलते जाते हैं । क्रियाओंके या विशेषणोंके मूल रूप समझनेमें आसान हैं । क्यों कि हिंदी और मराठी भाषाका सर्वसामान्य ढाँचा संस्कृतसे निर्मित है ।

वचन व लिंगका ढाँचा

नीचे संज्ञाओंका अंत्याक्षरी ढाँचा दिया गया है। इस ढाँचेको ठीक ठीक समझ लीजिये। जिससे अनायास लिंगभेदको समझ सकेंगे। साथ साथ वचनको भी जान सकेंगे। संज्ञाके अंतमें जो स्वर आता है उसके परिवर्तनपर ध्यान दीजिये।

पुल्लिंग	अंत्याक्षर	एकवचन	बहुवचन
	अकारान्त	बैल	बैल
	आ ,,	घोडा	घोडे
	इ ,,	अग्नि	अग्नि
	ई ,,	मोती	मोती
	उ ,,	साधु	साधु
	ऊ ,,	लाडू (लड्डू)	लाडू
स्त्रीलिंग			
	अ ,,	गोष्ट (कहानी)	गोष्टी
		वीट	विटा
	आ ,,	कांता	कांता
	इ ,,	युक्ति	युक्त्या
	ई ,,	जंत्री	जंत्र्या
		स्त्री	स्त्रिया
	उ ,,	धेनु	धेनु
	ऊ ,,	वधू	वधू
	ओ ,,	बायको	बायका
नपुंसकलिंग			
	अ ,,	घर	घरें
	ई ,,	दही	दही
	ऊ ,,	कोकरूं	कोकरें
	ए ,,	तळें	तळीं

भाषामें अत्यधिक प्रचलित शब्दोंकेही अंत्याक्षरों द्वारा लिंग पहचाननेका साधन सुगमताके लिये आपके संमुख रखा है। प्रवेशके लिये यह पर्याप्त है।

लिंग पहचाननेके लिये मराठीभाषी शब्दके पीछे तो, ती, तें (सर्वनाम) लगाकर वाक्य बनाते हैं और लिंगको पहचानते हैं। हिंदी भाषी यदि शब्दका उपयोग तो, ती, तें लगाकर करेंगे तो वे भी उस शब्दको लिंग आसानीसे समझ सकेंगे।

मात्र यह नियम नहीं है। एक साधन मात्र है, साथ साथ यहभी स्पष्ट है कि उक्त अंत्याक्षरी तालिकाके अतिरिक्त भी ऐसे कुछ शब्द आप पा सकेंगे कि वे इस तालिकाके अनुसार न लिंग ठीक ठीक बतला सकेंगे और न बहुवचन। इत्यर्थ यह तालिका सुगमताके लिये भाषाके अनुमानसे निर्धारित की गयी है। मात्र यह निःसंदेह कह सकते हैं कि यह साधन आपको अत्यधिक उपयोगी होगा। इस तालिकासे वचनकी जानकारी अवश्य होगी और वचनके आधारसे लिंग भी पहचान सकेंगे।

शब्दसंग्रह

मराठी	लिंग	अर्थ	अनेकवचन
घर	नपुं.	मकान	घरें
भिंत	स्त्री.	दीवार	भिंती
कोनाडा	पु.	आला, ताक	कोनाडे
मोरी	स्त्री.	पनाली, मोरी	मोऱ्या
खिडकी	स्त्री.	झरोखा	खिडक्या
दिवा	पु.	दिया	दिवे
चूल	स्त्री.	चूल्हा	चुली
शेण	नपुं.	गोबर	शेण
फरशी	स्त्री.	फर्श	फरशा
कोळसा	पु.	कोयला	कोळसे
लाकूड	नपुं.	लकडी	लाकडें

हिंदी कीजिये (कारकका एकवचनी उपयोग)

प्रथमा—राम दूध घेतो.

द्वितीया—{ रामाला घर आहे.
रामास घोडा दिला.

तृतीया—रामाशीं रहीम भांडला. (झगडा किया)

चतुर्थी—रामाला (स) पत्र आलें.

पंचमी—रामाहून लक्ष्मण लहान (छोटा) आहे.

षष्ठी—रामाचा चेंडू (गेंद) घेतला.

सप्तमी—घरांत दिवा आहे.

" घरावर छप्पर (छत) आहे.

यह ध्यानमें रखें कि—लिंग और वचनके अनुसार संज्ञामें, वचनमें परिवर्तन होता है ।

मराठी कीजिये

दीवारमें आला है । घरमें चूल्हा है । घरमें कोयला नहीं है । मकान सुंदर है । राम नहाया । लक्ष्मण गया । सीता आई । हमने खाया । मकानमें फर्श है । घोडा खडा है । घरमें दिया नहीं है । हमसे राम बडा (मोठा) है ।

'नहीं है' का मराठी भाषांतर 'नाहीं आहे' इस प्रकार कभी नहीं होता । मराठीके वाक्योंमें अधिकतर एकही क्रिया होती है यह ध्यानमें रहे । हिंदीमें 'नहीं' क्रियाविशेषण है । मराठीमें 'नाहीं' किया है ।

* * *

९ : : महत्त्वपूर्ण षष्ठि-विभक्ति प्रत्यय

मराठीमें षष्ठिके कारकपर विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता है। चा के लिये हिंदीमें 'का' का प्रयोग होता है। ची के लिये और च्या के लिये 'की' का प्रयोग होता है। चे और च्या के लिये हिंदीमें 'के' का प्रयोग होता है। उसी प्रकार नपुंसकलिंगी चें चीं का स्त्रीलिंगी प्रयोग 'की' होगा और पुल्लिंगी प्रयोग 'के' होगा। अभ्यासके लिये पृष्ठ २२ पर तालिका देखिये।

उक्त तालिका आप विशेष गौरसे देखें। आप यह जान सकेंगे कि केवल शब्द की प्रथमा विभक्ति प्रत्ययके अवसरपर चा, ची, चें और चे, च्या, चीं का प्रयोग होता है। अन्यत्र सभी विभक्ति-प्रत्ययोंके उपयोग पर च्या बनता है। मतलब षष्ठिके कारकका विकृत रूप बनता है। इस तालिकासे एक वचन और बहुवचनी रूपकोभी आप भली भाँति जान सकेंगे।

हिंदीमें भाषांतर कीजियेः—राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न असे हे चार भाऊ होते. रामाच्या वडिलांचें नांव दशरथ होतें. आईचें कौसल्या होतें. रामाचें लालनपालन कैकयीनें केलें. कैकयीला भरत नांवाचा एक मुलगा होता. जेव्हां रामाचें राज्यारोहण होतें, तेव्हां कैकयीनें दशरथापासून दोन वर मागून घेतले. "प्रभु रामचंद्राचा वनवास" हा विषय त्या वेळीं ज्याच्या त्याच्या तोंडीं होता. दशरथ राजे यामुळेंच लौकर वारले. कैकयीला परिणामाची कल्पना नव्हती. दशरथ राजे वारल्यामुळें व राम वनवासाला गेल्यामुळें सर्व लोक तिला अपराधी म्हणूं लागले. कैकयीला फार पश्चात्ताप झाला. यामुळें रामहि अवतारी पुरुष झाले.

कठिण शब्दार्थ

वारल्यामुळें–सिधारनेके कारण वडिलाचें नांव–पिताजीका नाम जेव्हां–जब तेव्हां–तब दशरथापासून–दशरथसे तोंडी–जबनपर नव्हती–न थी।

षष्ठि-कारककी तालिका

पुल्लिंगः—घराचा खांब—घरका खंभा	घराचे खांब—घरके खंभे
घरांचा मालक—घरोंका मालिक	घरांचे मालक—घरोंके मालिक
स्त्रीलिंगः—धनगराची मेंढी—गडरियेकी भेड	धनगराच्या मेंढ्या—गडरियोँकी भेडें
धनगरांची गल्ली—गडरियोंकी गली	धनगरांच्या गल्ल्या—गडरियोंकी गलियाँ
नपुंसकलिंगः—मुलाचें घड्याळ—लडकेकी घडी	मुलाचीं घड्याळें—लडकेकी घडियाँ
मुलांचें घड्याळ—लडकोंकी घडी	मुलांचीं घड्याळें—लडकोंकी घडियाँ
वृक्षाचें फळ—पेडका फल	वृक्षाचीं फळें—पेडके फल
वृक्षांचें वन—पेडोंका बन	वृक्षांचीं वनें—पेडोंके बन

षष्ठिकारकोंके विकृतरूप

पुल्लिंगः— घराच्या खांबास—घरोंके खंभेको	घराच्या खांबांना—घरके खंभोंको
घरांच्या मालकास—घरोंके मालिकको	घरांच्या मालकांना—घरोंके मालिकोंको
स्त्रीलिंगः— धनगराच्या मेंढीस—गडरियाकी भेडको	धनगराच्या मेंढ्यांना—गडरियाकी भेडोंको
धनगरांच्या गल्लीस—गडरियोंकी गलीको	धनगरांच्या गल्ल्यांना—गडरियोंकी गलीयोंको
नपुंसकलिंगः— मुलाच्या घड्याळास—लडकेकी घडीको	मुलांच्या घडयाळांना—लडकेकी घडियोंको
मुलांच्या घडयाळास—लडकोंकी घडीको	मुलांच्या घडयाळांना—लडकोंकी घडियोंको
वृक्षाच्या फळास—पेडके फलको	वृक्षाच्या फळांना—वृक्षके फलोंको
वृक्षांच्या वनास—वृक्षके बनको	वृक्षांच्या वनांना—वृक्षोंके बनोंको

अभ्यास

१. मराठीमें उत्तर दीजियेः—१. दशरथ राजाके कितने सुपुत्र थे ? २. कैकयीने कौनसे वर माँगे और क्यों ? ३. रामचंद्रजी जब वनवास गये तों दशरथ राजाकी क्या दशा हुई ? ४. कैकयीको पश्चात्ताप क्यों हुआ ?

२. विभक्ति प्रत्ययको बतलाअियेः— रामाने, कैकयीला, रामाचें, दशरथाचें

३. क्रियाओंके लिंग और वचन बतलाइयेः— मारलें, होतें, केलें, घेतलें, वारलें, नव्हती, लागलें, गेल्यामुळें, झाला.

* * *

१० : : वर्तमान, भूत, भविष्य

क्रियाको जब प्रत्यय लगता है तब क्रियाका मूलरूप धातु हिंदीके अनुसारही उपयोगमें लाया जाता है। **मात्र लिंग और वचनके अनुसार उसपर विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता होती है।**

मराठी क्रिया	हिंदी	मूलरूप	वर्तमान	भूत	भविष्य
देणें	देना	दे	देतो	दिला	देईल
करणें	करना	कर	करतो,	केला	करील
खेळणें	खेलना	खेळ	खेळतो	खेळला	खेळेल
पळणें	भागना	पळ	पळतो	पळाला	पळेल
बसणें	बैठना	बस	बसतो	बसला	बसेल

क्रियाका मूलरूप ही हिंदीके अनुसार आज्ञार्थके एक वचन का रूप होता है। कर्ता या कर्मके अनुसारही क्रियाका लिंग वचन [हिंदी जैसे] बदलता रहता है।

शब्दसंग्रह

शब्द	लिंग	अर्थ	बहुवचन
पेरू	पु.	अमरूद	पेरू
आंबा	पु.	आम	आंबे
हुतुतु	पु.	कबड्डी	हुतुतु
चरित्र	नपुं.	जीवनी	चरित्रें
माकड	नपुं.	बंदर	माकडें
भीक	स्त्री.	भीख	भीक

क्रियाएं

सांगणें–कहना
विकत घेणें–खरीदना
गर्जना करणें–गरजना
जाणणें–जानना
रडणें–रोना
लिहिणें–लिखना
ऐकणें–सुनना
बसणें–बैठना
पळणें, धांवणें–भागना
पडणें–गिरना
वाचणें, शिकणें–पढना
वर्षणें–बरसना
मागणें–माँगना
राहणें–रहना
घेणें–लेना
शिकणें–सीखना
विचार करणें–सोचना
उठणें–उठना
सरकणें–हटना
जाणें–जाना

मराठी कीजिये

मैं पढता हूं। तुम्हारे पिताजी गये। माताजी घरमें हैं। मंदिरपर बंदर है। बंदर भागता है। सीता सीखती है। हम गये थे। वे पढती हैं। रोना योग्य नहीं है। वह सुनता है। वे गयीं। हम दौडे। राम गाता है। सीता सीती है।

हिंदी कीजिये

तो घेतो. ती पळते. ते लिहितात. तो भीक मागतो. ते घरीं बसतात. त्या रडतात. ती घेते. राम आले. लक्ष्मी राहाते. वर्मा आंबे आणतो. तें मूल पडलें. हा रस आंबट आहे. हें फळ कुणाचें आहे? हे धावतात.

अभ्यास

१. बसणें, उठणें, देणें, घेणें इन क्रियाओंके वर्तमानरूपोंका वाक्योंमें प्रयोग कीजिये ।

२. पेरू, आंबा, हुतुतु, चरित्र इन शब्दोंके चार चार वाक्य बनाइये ।

३. लिहिणें, वाचणें, ऐकणें, रडणें, शिकणें इन क्रियाओंके वर्तमान, भूत और भविष्य रूप समझाइये ।

४. प्रांत, जिल्हा, गांव, तालुका, संत्रें, नदी, पोस्टमन, शिक्षक, विद्यार्थी, कुत्रा, पोस्ट ऑफिस, उद्योग, प्रयत्न आदि मराठी शब्दोंका हिंदीमें अगर बन सकता हो तो रूपांतर कीजिये और मराठी वाक्योंमें इनका उपयोग कीजिये ।

* * *

११ : : राजा

हिंदी कीजिये

सूर्य हा आकाशाचा राजा आहे. हिमालय हा पर्वतांचा राजा आहे. गहूं हा धान्यांचा राजा आहे. गुलाब हा फुलांचा राजा आहे. आंबा हा फळांचा राजा आहे. सिंह हा जनावरांचा राजा आहे. गीतारहस्य पुस्तकांचा मुकुटमणी आहे. महात्मा गांधी संतांतील रत्न आहेत. रवींद्रनाथ कवींचे कवि आहेत. लोकमान्य टिळक राष्ट्रपिता होत. शेतकरी हा जगाचा राजा आहे. अणुबॉंब शस्त्रांचा राजा आहे.

१५ ऑगस्ट हा स्वातंत्र्यदिन आहे. भविष्य काळ हा भूतकाळाचा अनुवाद आहे. वर्तमान काळ हा भूत भविष्याचा संयोग आहे. पुणें हें महाराष्ट्राचें राजधाम आहे. महाराष्ट्र भारताचें भूषण आहे. वेद हा शास्त्रांचा राजा आहे. शिक्षक हा जगाचा शास्ता आहे. जवाहरलाल हा भारताचा हिरा आहे. फडके क्रांतिकारकांतील पहिला वीर आहे. शेतकरी हा कर्मवादाचा आदर्श आहे. चार आश्रम, वेदांचें सार आहे. चार आश्रम व्यवहारांचें निदान आहेत. व्यवहारवाद नेहमींच श्रेष्ठ आहे. संतांनीं तो हीन ठरविला. वादविवादांच्या आहारीं जाऊं नये. सद्गुणाच्याहि आहारीं जाऊं नये. मानव्य हा धर्माचा राजा आहे. नागरिक राज्याचा वारस आहे.

कठिन शब्दार्थ

एकवचन शब्द	लिंग	अर्थ	अनेकवचन
जग	नपुं.	दुनिया, संसार	जग
शेतकरी	पु.	किसान	शेतकरी
भूषण	नपुं.	गहना, अभिमान	भूषणें
धाम	नपुं.	स्थान	धामें
शास्ता	पु.	शासक	शास्ते
निदान	नपुं.	अनुमान, चिकित्सा	निदानें
हीन	वि.	तुच्छ	हीन
ठरविला	क्रि.	ठहराया, क्रिया	ठरविलें
आहारी	वि.	आधीन	आधीन
वारस	पु.	उत्तराधिकारी	वारस
हा	सर्व.	यह	हे
गहूं	पु.	गेहूँ	गहूं
आंबा	पु.	आम	आंबे
सिंह	पु.	शेर, सिंह	सिंह
जनावर	नपुं.	जानवर	जनावरें

* * *

१२ : : जनावर

मराठी कीजिये

जानवरोंमें दो प्रकार होते हैं। जंगली और पालतू। जंगली जानवर जंगलोंमें रहते हैं और पालतू गांवमें। शेर, भेडिया, सुव्वर, बाघ ये हिंस्र पशु हैं। हिरन, खरगोश, मोर, लोमडी ये शिकारी जानवर हैं। बकरी, गाय, भैंस, घोडा, बैल, कुत्ता ये उपयोगी जानवर हैं। गौको हम देवता मानते हैं। देवताके गुण उसमें हैं। चिडिया, कौआ, कोयल, तोता ये पक्षी हैं। गीदड, गधा, सुव्वर, ये अशुभकारी हैं। सभी जानवर काम आते हैं। उनका उपयोग लेना चाहिये। उन्हें शिक्षा देनी चाहिये। बंदर, कुत्ता, बिल्ली, तोता, ये बहुत होशियार जानवर हैं। जानवरोंकी अलग अलग भाषाअें होती हैं। अभ्याससे इन भाषाओंको हम समझ सकते हैं। मनुष्योंमेंभी जानवर होते हैं। गधेभी होते हैं। गधेको गधा कहना स्वाभाविक है।

कठिन शब्दार्थ

हैं–(क्रि.) आहेत **बाघ**–(पु.) वाघ **जंगली**–(वि.) रानटी **गीदड**–(पु.) कोल्हा **जंगल**–(न. पु.) अरण्य, रान, जंगल **हिरन**–(न. पुं.) हरण **पालतू**–(वि.) पाळीव **गधा**–(पु.) गाढव **बकरी**–(स्त्री.) शेळी, बकरी **खरगोश**–(पु.) ससा **भैंस**–(स्त्री.) म्हैस **काम आना**–उपयोगी पडणें **कुत्ता**–(पु.) कुत्रा **मोर**–(पु.) मोर **चिडिया**–(स्त्री.) चिमणी **लेना**–(क्रि.) घेणें **पक्षी**–(पु.) पक्षी **लोमडी**–(पु.) खोकड **शेर**–(पु.) सिंह **शिक्षा**–(नपुं.) शिक्षण **कौआ**–(पु.) कावळा **बंदर**–(पु. नपुं.) वानर, माकड **भेडिया**–(पु.) लांडगा **बिल्ली**–(स्त्री.) मांज **कोयल**–(स्त्री) कोकिळा **होशियार** (वि.)–हुशार **सुव्वर**–(नपुं.) डुक्कर **अलग अलग**–वेगवेगळ्या **तोता**–(पु.) पोपट **भाषाअें**–(स्त्री. बहूवचन) भाषा.

* * *

१३ : : सामान्य रूप

विकृतरूपकोही मराठीमें सामान्य रूप कहते हैं। हिंदीमें आकारान्त पुल्लिग संज्ञाकाही विभक्ति प्रत्यय जोडनेके पूर्व विकृत रूप होता है। परंतु मराठीमें स्त्रीलिंगी ईकारान्त और उकारान्त रूपोंमें केवल फरक नहीं होता। अन्य सभी रूपोंमें फरक होता है! उदा. (पत्थर) दगड-दगडानें, (दगडांनीं) (कहानी) गोष्ट-गोष्टीचा, गोष्टींचा; घर, घराची-घरांची; कुत्रा-कुत्र्यानें; कुत्र्यांनीं-शाळा-शाळेंत, शाळांत; धोबी-धोब्यास; धोब्यांस; (लड्डू) लाडू-लाडवास; लाडवांस; विळी-विळीहून विळ्यांहून; साधु-साधूस; साधूंस; बाजु-बाजूनें; बाजूंनीं; आदि.

हिंदीमें प्राय अभीतक विभक्ति प्रत्ययोंको अलग लिखा जाता है। परंतु मराठीमें अलग कदापि नहीं लिखा जाता। विभक्ति-प्रत्यय हमेशा शब्दोंके साथ जुडे हुए होते हैं।

सर्वनाम तथा अव्ययके रूप देखिये

शब्दसंग्रह

माझा-मेर]	आमचा-हमारा
तुझा-तेरा	तुमचा-तुम्हारा
त्याचा-उसका	त्यांचा-उनका
ह्याचा-इसका	ह्यांचा-इनका
ज्याचा-जिसका	ज्यांचा-जिनका
जेथें-जहाँ	तेथें-वहाँ
येथें-यहाँ	कोठें-कहाँ
सुद्धां,-देखील-भी, तक	काय-क्या
कोणाचा-किसका	कोणाचा, कुणाचा-किनका
आणि-और	च-ही

चा–का	चे–के
ची–की	च्या–की
आहे–है	आहोंत, आहांत, आहेंत–हैं
नाहीं–नहीं है	नाहींत–नहीं हैं
जो, जी, जें–जो	जे, ज्या, जीं–जो
हा, ही, हें–यह	हे, ह्या, हीं–ये
तो, ती, तें–वह	ते, त्या, तीं–वे
जेव्हां–जब	तेव्हां–तब
जर–जो	तर–तो
कोण–कौन	कोणी–किसने, किन्होंने

मराठी कीजिये

बडोंके सपने बडे होते हैं। किसका घर बडा है? आपका मकान कहाँ है। यह घर उसका है। वे मकानमें नहीं हैं। वे कुत्ते उनके हैं। (कासव) कछुआ कुँएमें है। वह लिखता है और पढता है। पढानेवाला कौन है? घरघरमें दिवाली है। वे आम हैं अमरूद नहीं हैं। कुत्ते जब भूँ भूँ करते हैं तब बिल्लियाँ भाग जाती हैं। वह न पढता है और न पढाता है। तुम हम खेलेंगे। खाना खाएंगे।

हिंदी कीजिये

तें फळ आहे. आंब्याचें फळ सर्वांत चांगलें असतें. घराघरांतून दिवे आहेत. तो धावत नाहीं. घरीं बसणें चांगलें नाहीं. कष्ट करणें उत्तम. भास हा होणारच. किती वर्षें कष्ट कराल? तुम्ही शिकलेले आहांत. ती लहान आहे, परंतु खट्याळ आहे. घरांत चूल असणारच. लहान तीं लहान व मोठीं तीं मोठीं. ते गर्जत होते. गर्जना करणें हा सिंहाचा धर्म आहे. ज्याचें घर मोठें तो मोठा. लहान आणि मोठा यांत काय अंतर?

कठिन शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	बहुवचन
अंधार–पु.	अंधेरा	अंधार
डोळा–पु.	आँख	डोळे
संवय–स्त्री.	आदत	संवयी
खोली–स्त्री.	कमरा	खोल्या
विहीर–स्त्री.	कुआँ	विहिरी
काटकसर–स्त्री.	किफायत	काटकसर
कुत्रा–पु.	कुत्ता	कुत्रे
केळें–नपुं.	केला	केळीं
घाणेरडा–वि.	गंदा	घाणेरडे
चेंडू–पु.	गेंद	चेंडू
साल–स्त्री.	छाल	साली
वाकडी–स्त्री.	टेढी	वाकड्या
कष्ट–नपुं. } अडचण–स्त्री.त्रास–पु.	तकलीफ	कष्ट, अडचणी
मोडणें–क्रि.	तोडना	मोडणें
तोडणें–क्रि.	काटना	तोडणें
खट्याळ–वि.	नटखट	खट्याळ
केस–पु.	बाल	केस
मोठा–वि.	बडा	मोठे
ठाऊक–वि.	मालूम	ठाऊक
स्वप्न–नपुं.	सपना	स्वप्नें
शिकाविणें–क्रि.	सिखाना	शिकविणें

* * *

१४ : : हिंदी मराठीके आसान रूप

अकारान्त स्त्रीलिंग, पुल्लिंग और नपुंसकलिंग शब्दोंके रूपोंको और उनके बहुवचनोंके कतिपय रूपोंको आपने देखही लिया है। पुस्तकमें तथा अन्यत्र जितनेभी शब्द आप पढेंगे उन शब्दोंके अंत्याक्षरी तालिकाके अनुसार बहुवचनके रूप आप बनाते जाइये। ताकि शब्दोंके बहुवचन बनानेमें आपको कष्ट न होंगे। उदाहरणार्थः— आकारान्त पुल्लिंगी शब्द घोडा-जिसका बहुवचन 'घोडे' होता है। उसी प्रकार कुत्रा, सदरा, डबा (डिब्बा) आदि। इसी प्रकार अन्य शब्दोंके बहुवचनोंके रूपभी आप बना बनाकर आत्मसात करें।

भरमानेवाले लिंगभेद

मराठी भाषाके कतिपय शब्दोंके लिंग हिंदीके ठीक विरोधमें आप पा सकेंगे। इन शब्दोंके कारण संदेह निर्माण होता है। अतः यहाँ कुछ बानगी देते हैं।

हिंदीमें	मराठीमें	हिंदीमें	मराठीमें
शिकार–पु.	स्त्री.	पुलीस–स्त्री.	पु.
आवाज–स्त्री.	पु.	व्यक्ति–पु.	स्त्री.
सफर–पु.	स्त्री.	वेतन–पु.	नपुं.
आंदोलन–पु.	नपुं.	बाग–पु.	स्त्री. पु.
फल–पु.	नपुं.	मृत्यु–स्त्री.	पु.
पुस्तक–स्त्री.	नपुं.	धाक–स्त्री.	पु.
घर–पु.	नपुं.	नाक–स्त्री.	नपुं.
पकान्न–पु.	नपुं.	मजा–पु.	स्त्री. पु.
दही–पु.	नपुं.	घंटा–पु.	स्त्री.
सरकार–स्त्री.	नपुं.	देवता–पु.	स्त्री.
देह–स्त्री.	पु.		

लिंगभेदवाले शब्दोंको यहाँपर केवल इसी लिये दिया गया है कि आप इस प्रकारके शब्दोंको समझ जाएं। स्वयं मराठीमें भी ऐसे कतिपय शब्द आपको मिलेंगे जो उभयलिंगी हैं। उदा०:-तंबाखू यह शब्द पुल्लिंगी और स्त्रीलिंगी भी है। अतः भाषाविषयक गहरे तत्त्व-ज्ञानमें जानेका यत्न न किया जाए।

गिनती

एक	अकरा	एकवीस
दोन	बारा	बावीस
तीन	तेरा	तेवीस
चार	चौदा	चोवीस
पांच	पंधरा	पंचवीस
सहा	सोळा	सव्वीस
सात	सतरा	सत्तावीस
आठ	अठरा	अठ्ठावीस
नऊ	एकोणीस	एकोणतीस
दहा	वीस	तीस
*	*	*
एकतीस	एकेचाळीस	एक्कावन्न
बत्तीस	बेचाळीस	बावन्न
तेहतीस	त्रेचाळीस	त्रेपन्न
चौतीस	चव्वेचाळीस	चोपन्न
पस्तीस	पंचेचाळीस	पंचावन्न
छत्तीस	सेहेचाळीस	छप्पन्न
सदतीस	सत्तेचाळीस	सत्तावन्न
अडतीस	अठ्ठेचाळीस	अठ्ठावन्न
एकूणचाळीस	एकूणपन्नास	एकूणसाठ
चाळीस	पन्नास	साठ

एकसष्ट	एकाहत्तर	एक्यांशी	एक्याण्णव
बासष्ट	बाहत्तर	ब्यांशी	ब्याण्णव
त्रेसष्ट	त्र्याहत्तर	त्र्यांशी	त्र्याण्णव
चौसष्ट	चौऱ्याहत्तर	चौऱ्यांशी	चौऱ्याण्णव
पासष्ट	पंचाहत्तर	पंच्याऐंशी	पंचाण्णव
सहासष्ट	शाहात्तर	शहाऐंशी	शहाण्णव
सदुसष्ट	सत्त्याहत्तर	सत्त्याऐंशी	सत्त्याण्णव
अडुसष्ट	अठ्याहत्तर	अठ्यांशी	अठ्याण्णव
एकूणसत्तर	एकूणऐंशी	एकूणनव्वद	नव्याण्णव
सत्तर	ऐंशी	नव्वद	शंभर

शत या शतकको मराठीमें शें कहते हैं।

अकराशें, पंधराशें, पंचवीसशें, पावणेदोनशें, शंभर, (एकशें), दोनशें, चारशें, सहाशें, नऊशें, हजार, सव्वाचारशें, साडेचारशें, पावणे-पांचशें, सहस्र, दशसहस्र, लक्ष, दशलक्ष, कोटि, दशकोटि, अब्ज, खर्व, पाव, अर्धा, पाऊण, एक.

संख्यावाचन—१,२५,९४,७६८, एक कोटि पंचवीस लक्ष चौऱ्याण्णव हजार सातशें अडुसष्ट.

बेरीज [+ जोड] **वजाबाकी** [–नफी] **गुणाकार** [× जरब, गुणा] **भागाकार** [÷ तकसीम, बँटाई].

* * *

१५ : : घरदार (घरबार)

[पाठमें जिन नये कठिण शब्दोंका प्रयोग किया है उनके अर्थभी साथ साथ दिये हैं । अतः पाठ पढते समय अनुवाद कीजिये ।]

माझें घर पुण्यांत आहे. आम्ही दहाजण (जन) तेथें राहतों. चार बंधु. तीन बहिणी (बहनें), व आई वडील (मातापिता). माझे चुलते, चुलती (चाचा, चाची) शेजारीच (पडोसमेंही) राहतात (रहते हैं). मला चार चुलत (चचेरे) भावंडें (भाई-बहनें) आहेत. तीन मावस (मौसेरे) भावंडें मुंबईत राहतात. मावसा (मौसा), मावशी (मौसी) निवर्तली (चल बसे, मृत्यु हुई). आते बहीण, मावस बहीणीपेक्षा (की अपेक्षा) मोठी आहे. ती नेहमीं (हमेशा) आमच्या घरीं येते. मला ती आवडते (भाती है). स्नेहीसोबती (मित्रपरिवार) मला कोणी (कोई) नाहींत. आमचें घर फार (बहुत) जुनें (पुराना) आहे. त्याच्या भिंती (दीवारें) लांबरुंद (लंबी चौडी) आहेत. घर जुन्या (पुराने) पद्धतीचें आहे. घरापुढें (घरके सामने) एक आंगण (आंगन) आहे. घरामागें (पीछे) परस (आंगन) आहे. हल्लीं (आजकल) त्या घराची किंमत फार आहे. आम्ही मात्र तें विकणार नाहीं (नहीं बेचेंगे). माझें लग्न (शादी) करणार आहेत, (करनेवाले हैं). बहिणीचें लग्न गतवर्षीं झालें. माझे मेहुणे (बहनोई) नौकर आहेत. त्यांनीं सतत (क्रमशः) बँकेंत (बँकमें) नोकरी केली. त्यांचें वय (आयु) जवळजवळ (लगभग) ३० वर्षांचें आहे. आमचे आजाआजी (दादा-दादी) फार म्हातारीं (बूढे) होतीं. त्यांची शिकवण (शिक्षा) उत्तम होती. म्हातारीं माणसें नेहमींच चांगलीं असतात.

शब्दसंग्रह

च्या	पुढें	अव्यय के सामने	च्या	**मागें**	अव्यय के पीछे
,,	वर	,, ,, ऊपर	,,	**खालीं**	,, ,, नीचे

च्या	**समोर**	अव्यय के आगे		च्या	**बद्दल**	अव्यय के बारम	
,,	**सह**	,,	,, साथ	,,	**बरोबर**	,,	,, साथ
,,	**पर्यंत**	,,	,, तक	,,	**कडे**	,,	की ओर
,,	**नंतर**	,,	,, बाद	,,	**साठीं**	} ,,	के लिये
,,	**जवळ**	,,	,, पास	,,	**करितां**		
,,	**द्वारा**	,,	,, जरिये	,,	**मुळें**	,,	कारण, मारे
,,	**पेक्षां**	,,	की अपेक्षा	,,	**प्रमाणें**	की	तरह
,,	**शिवाय**	,,	के सिवा				

मराठी कीजिये

रामने दो आम भेजे। उसके साथ राम गया। माँ बहनें साथ रहती हैं। हमारा मकान पास पास है। चाचीकी अपेक्षा मौसी अच्छी है। हिंद्के पास (जवळ) तत्त्वज्ञान है। इसीके कारण वह सर्वश्रेष्ठ है। निर्धनोंके पास धन कहाँ? यहाँसे वहाँ तक आकाश है। मेरी शादी आज है। मेरा वजन (तौल) भारी है। आप क्यों नहीं आये? आज पुनम (पौर्णिमा) है। कल (उद्यां) प्रतिपदा है। परसों (परवा) हम जायेंगे। मकान पर बंदर है। मैं घरकी ओर जाता हूँ। तेरे लिये यह पाठ है। तुम्हारी तरह वह होशियार है।

अभ्यास

१. निम्न मराठी शब्दोंको हिन्दी शब्दों में रूपान्तरित कीजिये और तीन शब्दोंका एक एक वाक्य बनाइये।

यात्रा, दौत, लेखणी, टोपी, पुस्तक, शाळा, तलवार, बंदूक, खुर्ची, टेबल, व्यवस्था, गडबड, भोजन, दूध, गाय, हॉटेल.

२. ईकारान्त बकरी, नौकरी, मिठाई जिलेबी, इन शब्दोंके मराठी बहुवचनी रूप देकर उनका वाक्योंमें प्रयोग कीजिये।

३. घोडा शब्दको विभक्ति प्रत्यय लगाइये।

४. किसी भी हिन्दी पुस्तकमेंसे पाँच वाक्योंका मराठी अनुवाद कीजिये।

* * *

वर्तमान, भूत और भविष्य कालके वाक्योंसे तथा विभक्ति-प्रत्ययके उपयोगसे काल और प्रत्ययके रूपोंको समझा दिया गया है।

अब अनुस्वारोंके संबंधमें कुछ अधिक जानकारी देनी है।

इसमें कोइ संदेह नहीं है कि मराठी भाषा नियमबद्ध है। शब्दोंमें और वाक्योंमें जो जो परिवर्तन आप पा सकेंगे उन सभी परिवर्तनोंके लिये नियम हैं। बंधन हैं। इन सभी बंधनोंकी केवल भाषाकी शिक्षा प्राप्त करनेके लिये–आवश्यकता नहीं होती।

आप यह जानते हैं कि भाषाका प्रवाह व्याकरणसे नहीं रुकता और न उसका रुख बदलता है। अपितु भाषाके प्रवाहानुसार व्याकरणके सिद्धान्त परिवर्तित होते हैं। अर्थात् भाषा स्वयं उत्पन्न होती है और अपनी इच्छानुसार प्रवाहित होती रहती है। उसकी सीमाएं निर्धारित करनेका कार्य, केवल व्याकरण करता है। मात्र व्याकरणसे भाषाका स्वरूप विशुद्ध और अधिक सुस्पष्ट होता है। भाषाकी सीमाएँ व्याकरण द्वारा निर्धारित होती हैं। किसीभी भाषाको अनपढ लोग बोल लेते हैं। यद्यपि उन्हें न व्याकरण आता है और न वे भाषा-शास्त्र जानते हैं। अतः भाषाके लिये व्याकरण आवश्यक होनेपरभी वह बिना व्याकरण के सीखी जा सकती है।

अनुस्वारोंके संबंधमें

(१) नपुंसकलिंगी एकारान्त और ईकारांत शब्दोके अंत्याक्षरपर अनुस्वार होते हैं। फिर चाहे क्रियाके रूपमें हो या विशेषणोंके रूपमें हो या सर्वनामोंके रूपमें हो।

उदा०:—**लहान घोडें. लहान घोडीं.**

बालक खेळत आहे, बालकें खेळत आहेत.

तें घर लहान आहे. तीं घरें ल ान आहेत.

(२) सप्तमी और तृतीयाके विभक्ति प्रत्ययोंपर अनुस्वार होते हैं। उदा०:—रामानें, रामाशीं, रामांत, आदि.

(३) प्रथम पुरुषकी वर्तमान क्रियाओंपर अनुस्वार होते हैं। उदा०:—मी आहें–आम्ही आहोंत.

मी जातों–आम्ही जातों. मी जातें–आम्ही जातों.

(४) पुल्लिंग व स्त्रीलिंग तृतीय पुरुषी एकवचनी व बहुवचनी क्रियाओंपर अनुस्वार नहीं होते।

तो बसतो–ते बसतात.

ती बसते–त्या बसतात.

मात्र नपुंसकलिंगी क्रियाओंपर अनुस्वार अवश्य होते हैं।

उदा०–तें आलें–तीं आलीं.

(५) सर्वनामोंके बहुवचनी विकृत रूपोंपर अनुस्वार होते हैं। उदा०–त्यांच्या, ह्यांच्या, त्यांना, कोणांस आदि।

निम्न शब्द हमेशा अनुस्वार युक्त लिखे जाते हैं।

मुळें–लिये–कारण	कां–क्यों
सध्यां–आजकाल	
नेहमीं–हमेशा	आंत–अंदर, में
करितां–लिये, वास्ते	पुढें–सामने, बादमें
कीं–कि	मागें–पीछे
खालीं–नीचे	जाऊं–जाएँ
येथें–यहाँ	गाऊं–गाएँ
जेथें–जहाँ	बोलूं–बोलें
तेथें–वहाँ	पिऊं–पीएं
कोठें–कहाँ	नाहीं–नहीं हैं

तें, तीं–जें, जीं–हें हीं (नपुंसकलिंगी सर्वनाम).

क्रियाविशेषणके रूपमें जातां, येतां, बसतां, उठतां आदि क्रियाओं-पर अनुस्वार आता है। जातां, येतां, बसतां, उठतां ये रूप क्रियाके मात्र हैं। करूं, बोलूं आदिरूप विध्यर्थके हैं।

* * *

१७ : : विभक्ति-प्रत्यय-१

प्रथम पुरुष सर्वनाम ' मी आम्ही '

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा—मी	आम्ही
द्वि.—मज, मला, मजला	आम्हांस, आम्हांला
तृ.—मीं, म्यां, मजशीं	आम्हीं, आम्हांशीं
चतु.—मला, मजला	आम्हांस, आम्हांला
पंच.—मजहून	आम्हांहून
षष्ठी—माझा, माझी, माझें	आमचा, आमची, आमचें
सप्तमी—माझ्यांत, माझ्यावर	आम्हांत, आम्हांवर

मात्र संबोधनपर उद्‌गारवाचक शब्द या अक्षर हिंदीके समान मराठीमें बहुत हैं। अग—अरी, हे—हे, ऐ—हे अहो—अै.

द्वितीय पुरुष ' तूं तुम्ही '

प्र.—तूं	तुम्ही
द्वि.—तूज, तूस, तुला, तुजला	तुम्हांस, तुम्हांला
तृ.—तूं, त्वां, तुशीं, तुजशीं	तुम्हीं, तुम्हांशीं
च.—तूज, तूस, तुला, तुजला	तुम्हांस, तुम्हांला

पं.—तुजहून	तुम्हांहून
ष.—तुझा, तुझी, तुझें	तुमचा, तुमची, तुमचें

द्वितीय पुरुष ‘ आपण ’ आप

प्र.—आपण	आपण
द्वि.—आपणास, आपणाला	आपणांस, आपणांना—ला
तृ.—आपणाशीं	आपणांशीं
च.—आपणास, आपणाला	आपणांस, आपणांना—ला
पं.—आपणाहून	आपणांहून
ष.—**आपला, आपली, आपलें**	**आपले, आपल्या, आपलीं**
स.—आपणांत	आपणांत

तृतीय पुरुष ‘ तें-तीं ’ (नपुंसकलिंगी)

प्र.—तें	तीं
द्वि.—तें, त्यास, त्याला, त्याजला.	तीं, त्यांस, त्यांला, त्यांजला, त्यांना.
तृ.—त्यानें, त्याशीं, त्याजशीं.	त्यांनीं, त्यांशीं, त्यांजशीं.
च.—त्यास, त्याला, त्याजला.	त्यांस, त्यांला, त्यांजला, त्यांना.
पं.—त्याहून, त्याजहून.	त्यांहून, त्यांजहून.
ष.—त्याचा, त्याची, त्याचें.	त्यांचा, त्यांची, त्यांचें.

तृतीय पुरुष ‘ तो-ते ’ (पुल्लिंगी)

प्र.—तो	ते
द्वि.—तो, त्यास, त्याला, त्याजला.	ते, त्यांस, त्यांना, त्यांजला.
तृ.—त्यानें, त्याशीं, त्याजशीं.	त्यांनीं, त्यांशीं, त्यांजशीं.
च.—त्यास, त्याला, त्याजला.	त्यांस, त्यांना, त्यांजला.
पं.—त्याहून, त्याजहून.	त्यांहून, त्यांजहून.
ष.—त्याचा, त्याची, त्याचें.	त्यांचा, त्यांची, त्यांचें.

तृतीय पुरुष ' ती-त्या ' (स्त्रीलिंगी)

प्र.–ती	त्या
द्वि.–ती, तीस, तिला, तिजला.	त्या, त्यांस, त्यांना, त्यांजला
तृ.–तिनें, तिशीं, तिजशीं.	त्यांनीं, त्यांशीं, त्यांजशीं.
च.–तीस, तिला, तिजला	त्यांस, त्यांना, त्यांजला
पं.–तीहून, तीजहून	त्यांहून, त्यांजहून.
ष.–तिचा, तिची, तिचें	त्यांचा, त्यांची, त्यांचें.
स.–तींत, तिच्यांत	त्यांत, त्यांच्यांत

* * *

१८ : : सर्वनामोंकी विशेषताएँ

सर्वनामोंका विशेषणके रूपमेंभी मराठीमें प्रयोग होता है। उदा:–मी रत्नांवर लिहून देतों कीं '—मैं रत्नांबर लिख देता हूँ कि। ' आम्ही शिपायी निश्चय करतों कीं। हमे सिपाही निश्चय करते हैं कि। तूं आणि चोर यांत अंतर काय ?— तू और चोरमें क्या फर्क है ? [यहाँ तूं यह सर्वनाम चोरके भावको स्पष्ट करता है इस लिये वह विशेषण बना।] ' कुठें तुम्ही आणि कुठें आम्ही कहाँ तुम और कहाँ हम। [यहाँभी आम्ही यह सर्वनाम ' भाववाचक होनेसे गुणविशेषण होगा।] इसी प्रकार अन्य सभी सर्वनाम गुणविशेषणके भावको स्पष्ट करते हैं। उदाहरणार्थ—तुम्ही-पण काय गृहस्थ आहांत !—तुम भी क्या आदमी हो ! जसें कराल तसें भराल—जैसा करोगे वैसा भरोगे। कितीहि दिलें तरी संतोष नाहीं—कितना भी दें पर संतोष नहीं है। मनुष्य काय किंवा जनावर काय—क्या मनुष्य और क्या जानवर ! एवढ्यांतच असें झालें.—इतनेमें ऐसा हुआ। आपणासारख्यांनीं—आप जैसोंको।

दर्शक सर्वनामें

हा, ही, हें–यह और हे, ह्या, हीं–ये
तो, ती, तें–वह और ते, त्या, तीं–वे

उदा०—तो मनुष्य चतुर आहे–वह मनुष्य चतुर है।
ह्या मुली खोडकर आहेत–ये लडकियाँ नटखट हैं।

संबंधी सर्वनामें

जो, जी, जें और जे, ज्या, जीं–जो,

उदा०:—जो मनुष्य भेटला होता–जो मनुष्य मिला था।

ज्या मुलींनीं गाणें म्हटलें–जिन बालिकाओंने गाना गाया।

ध्यानमें रहें—त्या, ह्या, ज्या और कोणत्या ये मराठीके सार्वनामिक रूप उभयलिंगी और उभयवचनी हैं। हिंदीमें इनके रूप उस, उन–इस, इन–जिस, जिन–किस, किन इस प्रकार बनते हैं। मतलब यह कि हिंदीमें ये उभयलिंगी रूप होनेपर भी उभयवचनी नहीं हैं। वचनोंमें परिवर्तन है। मात्र ती का बहुवचनी रूप त्या–ही का ह्या –जी का ज्या बनता है। मतलब यह कि त्या, ह्या, ज्या और कोणत्या ये रूप बहुवचनी तथा दर्शक सर्वनामोंमें उभयवचनोंके साथ साथ उभयलिंगी भीहैं। प्रयोग–उभयलिंगी और उभयवचनी ध्यानमें लें। हिंदीमें वचनोंमें फर्क है। यह न भूलें।

कोणत्या मुलीनें—किस लडकीने।
कोणत्या मुलींनीं—किन लडकियोंने।
त्या घोड्यानें—उस घोडेने।
त्या घोड्यांनीं—उन घोडोंने।
ह्या शिपायानें—इस सिपाहीने।
ह्या शिपायांनीं—इन सिपाहियोंने।
ज्या पोपटानें—जिस तोतेने।

ज्या पोपटांनीं—जिन तोतोंने ।

इनके अतिरिक्त—

नपुंसकलिंगी प्रयोग देखिये । क्यों कि मराठीकी दृष्टीसे यह लिंग समझना बहुत आवश्यक है। **आपको यह ज्ञात है कि मराठीके नपुंसकलिंगी शब्द अधिकतर हिंदीमें पुलिंगी बनते हैं।** तें वासरूं—वह बछडा, तीं वासरें—वे बछडे, तें मूल—वह बालक, तीं बालकें—वे बालक, तें प्रतिबिंब—वह परछाई, तीं प्रतिबिंबें—वे परछाइयाँ, तें घर—वह मकान, तीं घरें—वे मकान। संज्ञाओंके विभक्ति प्रत्यय लगानेके पूर्व जिस प्रकार उनके रूपोंमें परिवर्तन होता है उसी प्रकार सर्वनामोंके भी विकृत रूप बनते हैं। पुल्लिंग और स्त्रीलिंगके अनुसारही नपुंसकलिंगी सर्वनामोंका विकृत रूप उभयवचनी **ह्या, ज्या, त्या, कोणत्या** रूप बनता है। उदाहरणार्थ—त्या घड्याळामुळें—उस घडीके कारण, ज्या घड्याळांमुळें—जिन घडियोंके कारण, तें घड्याळ—वह घडी, तीं घड्याळें—वे घडियाँ।

दैनंदिन उपयोगी कतिपय **नपुंसकलिंगी नाम**

धोतर—धोती, पुस्तक—किताब टेबल—मेज़, **दार**—किवाड (पु.) **लाटणें**—बेलन, **दही-दूध**—दही दूध, **ताक**—छाछ, **कपाट**—आलमारी, **नरसाळें**—कीप **फावडें**—फौडा, **पोतें**—बोरा, **कुत्रें**—कुत्ता, **शिंकें**—छींका, **बूच**—डाट, **भांडें**—बरतन, **वरण**— (पकी) दाल, **लोणचें**—अचार, **तूप**—घी, **अंग**—शरीर, **शरीर**—बदन, **अंतःकरण**—हृदय, **कपाळ**—भाल, ललाट, **कानशील**—कनपटी, **टाळकें**—सिर, **तोंड**—मुँह, **नख**—नाखून, **पडसें**—जुकाम, **पेरें**—पोर, **पोर**—बालक, **पोट**—पेट, **बुबुळ**—पुतली, **बोट**—अंगुली, **मनगट**—कलाई, **रक्त**—खून, **हाड**—हड्डी, **माहेर**—मायका, **आजोळ**—ननिहाल, **आंगण**—आंगन.

अभ्यास

१. नपुंसकलिंगी नामोंके बहुवचन बनाइये। उदाहरणार्थ—टाळकें—टाळकीं, पोट—पोटें, दही—दही, बालक—बालकें.

२. एकवचन और बहुवचनी नपुंसकलिंगी नामोंका एक एक वाक्य बनाइये !

सर्वनामोंका उपयोग

हिंदी कीजिये

१. संध्याकाळीं त्या येतील. २. आम्ही उद्यां मुंबईला पोहोंचूं. ३. तुमचे कपडे कोण धुणार ? ४. तुम्ही वंदे मातरम् गाणार ना ? ५. जी दररोज अभ्यास करील तीच यशस्वी होईल. ६. मी पुण्यांतच राहीन. ७. तुम्ही पुण्याहून केव्हां परत याल ? ८. जो खादीचे कपडे घालील त्याला मी हें पुस्तक देईन. ९. तुम्ही माझें एक काम कराल काय ? १०. मी अवश्य सांगेन. ११. ती आतां विचारील. १२. फुलें कोमेजतील. १३. मी खोटें बोलणार नाहीं. १४. आमचें संघटन कसें होणार ? १५. कुत्रीं चावणार नाहींत. १६. पाऊस केव्हां थांबेल ? १७. तिला दोन मुली आहेत.

कठिन शब्दार्थ

संध्याकाळीं–स्त्री. शामको-में, **त्या**–स्त्री. वे, **येतील**– (भविष्य) आएंगी, **ना**–प्रश्न सू. न, **जी**–स्त्री.ए. जो, **केव्हां**–अव्य. कब, **परत याल**–लौटोंगे, **जो**–पु. ए. जो, **हें**–न. ए. यह, **देईन**–पु. प्र. ए. दूँगा, **विचारील**–भविष्य, स्त्री. तृ. ए. पूछेगी, **फुलें**–न. ब. फूल, **खोटें**–नपुं. झूट, **कुत्रीं**–न. ब. कुत्ते, **थांबेल**–क्रि. ठहरेगा-गी.

मराठी कीजिये

१. महात्माजी कल पधारेंगे । २. गाडी सुबहमें पहुँचेगी । ३. वे कल राष्ट्रगीत गाएंगी । ४. यह आदमी तुम्हारे कपडे नहीं धोएगा । ५. मैं शामको वाचनालयमें जाऊँगी । ६. तुम इस छुट्टीमें कहाँ जाओगे ? ७. मैं कलतक इस बातका जवाब दूँगा । ८. वे शहरसे कब लौटेंगी ? ९. मैं कल दस रुपये दूँगा और आजीव सदस्य बनूँगा । १०. आज जो सोओगे कल तुम रोओगे । ११. मैं साफ कपडे

पहनूँगा और तब जलपान करूँगा। १२. मैं हरे कागजका विमान उडाऊँगा। १३. मैं कलसे वर्गमें शोर नहीं करूँगा। १४. सूरज निकलेगा और कलियाँ खिलेंगी। १५. हम आँखमिचौली खेलेंगे। १६. उसकी एक पुत्री है।

कठिन शब्दार्थ

पधारेंगे–येतील–क्रि. भ. पु. **पहुँचेगी**–पोहोंचेल–क्रि. भ. स्त्री. वे–त्या–स्त्री. ब. **गाअेंगी**–गातील–क्रि. स्त्री. भ. **नहीं धोएगा**–क्रि. धुणार नाहीं–उ. लिं.–**जाओगे**–जाल, जाणार–क्रि. उभयलिंगी ब. **तक**–पर्यंत–अव्यय, **सोओगे**–झोपाल–क्रि. उभयलिंगी ब. **रोओगे**–रडाल–क्रि. उभयलिंगी ब. **साफ**–स्वच्छ–वि., **जलपान**–न्याहारी, फराळ. **हरे**–हिरव्या–वि. अनेक व. **उडाऊँगा**–उडवीन–क्रि. पु. ए. प्र. **शोर**–गडबड–स्त्री. वि. **निकलेगा**–निघेल, उगवेल. क्रि. भ. **खिलेंगी**–उमलतील–ब. उभयलिंगी क्रि. **आँखमिचौली**–लपंडाव–पु.

महत्वपूर्ण सूचनाएँ— (१) मराठीमें प्रश्नार्थक वाक्यके लिये अंतमें ‘ काय ’ आता है। हिंदीमें प्रारंभमे ‘ क्या ’ आता है।

(२) राजा, कर्ता, पिता, नेता, वक्ता, भ्राता इन मराठी शब्दोंका बहुवचन एकारान्ती बनता है। हिंदीमें इन शब्दोंका रूप नहीं बदलता है।

(३) रिश्ता या शरीरके अवयव स्पष्ट करनेकेलिये हिंदीमें को के बजाय के का प्रयोग होता है। उदा०—**रामके एक पुत्री है।** सीतेला एक मुलगी आहे. **मराठीमें इस प्रकार नियम नहीं है।**

(४) पूछना, प्रेम करना, प्रार्थना करना, माँगना, मिलना, कहना आदि क्रियाओंके साथ हिंदीमें **को** की अपेक्षा **से** का प्रयोग होता है। **मराठीमें इस प्रकार परिवर्तन नहीं होता है। द्वितीयाके रूपका ही प्रयोग किया जाता है।**

मी रामावर प्रेम करतों (प्रेम करना), मी आपणाला मागतों (मांगना), मी तुला विचारतों (पूछना), त्या गोविंदाला भेटतात (मिलना) मी त्याला सांगतों (कहना).

* * *

१९ : : ' आपण ' चे (के) प्रयोग

' आपण ' का हिंदी शब्दार्थ है–आप। अर्थात् यह सर्वनाम द्वितीय पुरुषी बहुवचनी है। आपका उपयोग जिस प्रकार सन्मानार्थी एक-वचनके रूपमें भी होता है उसी प्रकार बहुवचनी भी वह होता है। साथ साथ संज्ञाके रूपमें आपके अर्थ वे और स्वयं भी होते हैं। मराठीमें भी 'आपण' का इसी प्रकार उपयोग होता है। आपण के रूपका यथोचित अभ्यास करानेके उद्देश्यसे अनुवादके लिये हिंदी और मराठी वाक्य दिये हैं। उनका ठीक ठीक अनुवाद कीजिये।

[' आपण ' का उपयोग अनिवार्य है। इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक वाक्यमें आपण का प्रयोग करें। वाक्योंकी रचना आपण के अनुसार बनानेसे अनायास आपण का प्रयोग होता है। **मराठीमें ' तुम्ही ' और ' आपण ' की रचनामें कोई अंतर नहीं है।**]

मराठी कीजिये

१. आप आइये और कुर्सीपर बैठिये। २. गुलामीको पहले उखाडिये। ३. नारियलका ठंडा पानी पीजिये और आराम कीजिये। ४. इसमें क्या है, देखिये न ? ५. मैं टिकट-घरमें हूं आप वहाँ मिलिये। ६. कीचडमें पत्थर न फेंकिये। ७. जमीनपर अमरूदका टुकडा न रखिये। ८. अंग्रेजको एक पाईभी न दीजिये। ९. आप जरा पीछे हटिये और शोर न कीजिये। १०. मैं आपको पुस्तक देता हूँ आप नाराज न हूजिये। ११. जिसमें कृष्णजीकी कथा है वह पुस्तक

उसको दीजिये। १२. दूधमें यहाँकी शक्कर है, पीजिये न ? १३. हिंदुस्थानकी हालतपर एक भाषण दीजिये। १४. चंदा लीजिये और रसीद दीजिये। १५. देशमें सुराज्य स्थापित कीजिये।

[तुम्ही और आपणके उपयोगसे मराठी वाक्योंमें फरक नहीं होता है। यह जाननेके बाद आप निम्न वाक्योंसे यह भी समझ सकेंगे कि 'आप' के हिंदी उपयोगमें **मत** के ऐवजमें **न** का उपयोग होता है। **मराठीमें यह फरक नहीं होता है।**

मराठीमें छोटोंको तू का प्रयोग किया जाता है। हम उम्र लोगोंके साथ तुम्ही का प्रयोग किया जाता है और बडोंके लिये आपणका प्रयोग किया जाता है। अतिरिक्त द्वि.पु. बहुवचन के रूपमें आपणका प्रयोग होता है। अनुवादमें आपका प्रयोग आनिवार्य है।]

खुदके अर्थ में आपणका प्रयोग नहीं किया जाता है।

हिंदी कीजिये—

१. पुस्तकावर आंब्याची फोड ठेवूं नका. २. नारळाचें गोड पाणी प्या. ३. देश संपन्न करा. ४. वर्तमानपत्राची वर्गणी द्या व पावती घ्या. ५. गरिबांना दुःख देऊं नका. ६. मित्राची स्थिति पाहा व कांहीं मदत करा. ७. देवाची कृपा प्राप्त करा. ८. सतरंजीवर बसा आणि सुवाच्य लिहा. ९. आपण ह्यांवर विश्वास ठेवूं नका. १०. थोडा अभ्यास करा आणि मग हुतुतू खेळा. ११. खरें सुख कशांत आहे ? १२. ज्यांत साखर आहे तें दूध आणा व प्या. १३. दह्यांत साखर मिसळा. १४. त्यांत काय आहे ? १५. तें फेकूं नका.

कठिन शब्दार्थ

आइये–या (क्रि.), **उखाडना**–उपटणें (क्रि.), **क्या**–काय (अ.), **शक्कर**–साखऱ्या (स्त्री.), **खांड**–साखर (स्त्री.), **मिश्री**–खडीसाखर (स्त्री.), **टिकट घर**–तिकीट ऑफिस (नपुं.), **कीचड**–चिखल (पु.), **अमरूद**–

पेरू (पु.), पाई—पै (स्त्री.), शोर—गोंगाट (पु.), हूजिये—व्हा (क्रि.), हालत—स्थिति (स्त्री.), चंदा—वर्गणी (स्त्री.), आम—आंबा (पु.), मीठा —गोड (वि.)

फोड (तुकडा) –पु. टुकडा, ठेवूं नका—क्रि. न रखिये (मत रखो), नारळ—पु. नारीयल, प्या—क्रि. पीजिये (पीओ), पावती—स्त्री. रसीद, घ्या—क्रि. लीजिये (लो), देऊं नका—क्रि. न दीजिये (मत दो), मदत—स्त्री. मदद, करा-कीजिये (करो), कृपा—स्त्री. मिहरबानी, प्राप्त करा — क्रि. हासिल कीजिये (हासिल करो), सतरंजी—स्त्री. दरी, बसा—क्रि. बैठिये (बैठो), सुवाच्च-वि. साफ, लिहा—क्रि. लिखिये (लिखो), ह्यावर-स. इसपर, आणि मग—और फिर, हुतुतू—पु. कबड्डी, मिसळा—क्रि. मिलाइये (मिलाओ), खरें—न. सच्चा, कशांत-स. किसमें, ज्यांत-स. जिसमें, आणा—क्रि. लाइये (लाओ), त्यांत—सर्व. उसमें, तें—स. वह, फेकूं नका—क्रि. न फेंकिये (मत फेंको)

* * *

२० : : विशेषण—परिचय

कर्ता, कर्म या क्रियाके भावोंकी विशेषता बतलानेवाले शब्दको विशेषण कहते हैं। जो गुणविशेषण—गुणवाचक कहलाये जाते हैं। अतिरिक्त संख्या विशेष—संख्यावाचक और सार्वनामिक ये विशेषणके मुख्य तीन भेद हैं। जिनमें सार्वनामिक विशेषणका परिचय पूर्वीय पाठमें दिया गया है।

१. गुणविशेषण—गुणविशेषण कई हैं। मात्र उनमेंसे सात विशेषणोंको ध्यानमें रखनेकी आवश्यकता है।

१. कालबोधक—नवीन, जुना-पुराना, आगाऊ—पेशगी, टिकाऊ, मागचा-पिछला, ताजा, शिळा—बासा आदि।

२. **स्थानबोधक**—लांब-रुंद-लंबाचौडा, सरळ, खोल-गहरा, वाकडा-टेढा-तिरछा, ओसाड-ऊजड, अरुंद—तंग=सँकरा आदि।

३. **आकारबोधक**—चौकोर-चौकान, टोंकदार-नुकीला, सुंदर, समान आदि।

४. **रंगबोधक**—(तांबडा) लाल, पिवळा, गुलाबी, आकाशी, धुरकट-धुंधला, फिक्कट-फीका, सोनेरी-सुनहला, चमकदार-चमकीला आदि।

५. **दशाबोधक**—सडपातळ-दुबलापतला, लठ्ठ-मोटा, जड-भारी, घट्ट-गाढा, दाट-घना, गरीब, पाळीव-पालतू आदि।

६. **गुणबोधक**—खरा, चांगला, वाईट-बुरा, न्यायी, दाता-दानी, सरळ-सीधा, शांत आदि।

७. **समानबोधक**—सारखा-सदृश-प्रमाणें=सा, ल्हानसा चेंडू-छोटासा गेंद, घोड्याप्रमाणें-घोडेके समान आदि।

२. संख्याविशेषण

१. **गणनबोधक**—एक, दोन, शंभर, हजार, अडीच-ढाई, पावणेदोन आदि।

२. **क्रमबोधक**—पहिला, दुसरा, तिसरा, चौथा, पांचवा, सहावा, शंभरावा, द्वितीया, तृतीया आदि।

३. **आवृत्तिबोधक**—दुप्पट-दुगुना, तिप्पट, चौपट-चार गुना, द्वितीय, तृतीय आदि।

४. **समुदायबोधक**—आठी मुलें, दोघेच्या दोघे, दोन्ही हात-दोनों हाथ, हरघडी, दोन दोन मण आदि।

५. **अनिश्चितबोधक**—सर्व, कित्येक-कई, कमी-कम, आणि-और, कोण, सर्वांचा, थोडा, पुष्कळ, अनेक आदि।

कर्ता, कर्म और क्रियाके अनुसार विशेषणके लिंग और वचन बदलते हैं। सर्वसामान्य रीतीसे अकारान्ती विशेषणोंमें परिवर्तन नहीं होते। आकारान्तमें परिवर्तन होते हैं।

काळा मुलगा	काळे मुलगे
काळी मुलगी	काळ्या मुली
काळें धोतर	काळीं धोतरें

इस बातको ध्यानमें रखनेकी आवश्यकता है कि आकारान्त विशेषणका पुल्लिंग बहुवचनी रूप एकारान्ती बनता है। साथ साथ नपुंसकलिंग एकवचनी रूप बिंदीयुक्त एकारान्ती और बहुवचनी बिंदीयुक्त ईकारान्ती बनता है। षष्ठीके विभक्ति प्रत्यय और सर्वनाम परिचयसे विशेषणके बारेमें और अधिक जानकारी मिलेगी।

हिंदीमें अनुवाद कीजिये

१. चार शिपायांनीं त्याला पकडलें. २. आपल्या दह्याला आंबट कोण म्हणेल? ३. दाही दिशांना पाऊस पडला. ४. पुस्तकाची ही तिसरी आवृत्ति आहे. ५. मोठ्यानें ओरडूं नका. ६. हळूहळू चाला. ७. वाड्यांत गर्दी आहे. ८. चौघेजण मोटारींत बसले. ९. थंडीमुळें त्या आजारी पडल्या. १०. उद्यां मला बाजारांत भेटा. ११. चंद्रकांत मोठा व कल्याण लहान होता. १२. मोठ्या भावानें लहान भावाशीं प्रेमानें वागावें. १३. तो शांत व गंभीर आहे. १४. टोपी वाकडी घातलीस. १५. त्याचा रंग पांढराशुभ्र आहे.

कठिण शब्दार्थ

आंबट—खट्टा, दाही दिशांना—दस दिशाओंको, पाऊस पडला—वर्षा हुई, आवृत्ति—संस्करण, ओरडूं नका—मत चिल्लाओ, मोठ्यानें—जोरसे, गर्दी—भीड, चौघेजण—चारोंजन, हळूंहळूं—धीरे धीरे, पडल्या—(बीमार) हुई, उद्यां—कल, वाकडी—टेढी, तिरछी.

अभ्यास ८

१. विद्यार्थीकी दिनचर्या मराठीमें दस वाक्योंमें लिखिये।

२. जाणें, येणें, उठणें, बसणें, देणें, घेणें, विचारणें इन क्रियाओंके

वर्तमानकालवाचक तृतीय पुरुषके एकवचनी रूप बनाइये । जैसे–तो जातो, ती उठते आदि ।

३. 'मी' 'तूं' सर्वनामोंको विभक्ति प्रत्यय लगाइये ।

४. मराठी और हिंदी भाषाके २५ संयुक्त शब्दोंको चुनकर उनके लिंग तथा वचन बतलालिये ।

५. 'आपण' के भिन्न भिन्न **अर्थवाले** पाँच वाक्य बनाइये ।

* * *

२१ : : पत्रव्यवहार

आजकल पत्रव्यवहारकी रचनामें और मजमूनमें हिंदी और मराठीमें समानता दिखाई देती है। इस पाठमें पत्रव्यवहारके लिये आवश्यक शब्दरचना दी गयी है। पहले मराठीमें विशिष्ट पद्धतिका मजमून प्रयोगित किया जाता था परंतु उस मजमूनका जिक्र करनेकी अब कोई आवश्यकता नहीं है। इसलिये यहाँपर उसका जिक्र नहीं किया जाता है। केवल उपयोगित मजमूनकाही जिक्र किया जाता है।

पत्रके सर्वसामान्य रीतिसे मुख्य तीन (परिच्छेद) भाग होते हैं। विषयविस्तारके लिये इनमें फर्क भी होता है।

१. **प्रारंभिक विभाग** :—इसमें पत्रके दाहिने कोनेपर भेजनेवालेका पूरा पता और दिनांक होता है।

२. **मध्य विभाग** :—इसे कलेवर कहते हैं। इसमें भी तीन भाग होते हैं। प्रारंभमें खुशहाली, घरेलू बातें होती हैं। दूसरेमें प्रधान आशय और तीसरेमें किसी कामना या प्रार्थनाके साथ समाप्ति होती है। अर्थात् यह विभाग महत्त्वपूर्ण होता है।

३. **अंतिम विभाग**:—भेजनेवालेका दाहिने कोनेपर हस्ताक्षर होता है। पुनश्च जोडनेकी पद्धति भी मराठीमें है।

याद रहें कि आजकल जो पत्रव्यवहार होता है वह आसान भाषामें और उद्देश्यपूर्ण होता है। लंबाचौडा मजमून और अनवश्यक विस्तार नहीं होता।

पत्रके ढाँचे

सिरनामा

पिताजीको— तीर्थरूप राजमान्य राजश्री बाबासाहेब यांचे चरण-सेवेसी कृतानेक शिरसाष्टांग नमस्कार विनंती वि.

चाचाजीको— तीर्थस्वरूप रा. रा. काकासाहेब यांसी सा. न. वि. वि.

माताको— (अगर सौभाग्यवती हो)

ती. सौ. माई यांसी बालके गंगाधर याचा शिर सा. न.

(अगर सौभाग्यवती न हो)

ती. गंगाभागीरथी रमाबाई यांसी सा. न. वि. वि.

बडे भैयाको— तीर्थस्वरूप दादा यांस सा. न. वि. वि.

मित्रको— प्रिय मित्र गंगाधर यांसी स. न. वि. वि.

पुत्रको— चिरंजीव रमाकांत यासी अनेक उत्तम आशीर्वाद

धर्मपत्नीको— प्रिय सौभाग्यवती मालती हीस अ. उ. आशीर्वाद.

सर्वसामान्य— (बडोंको) श्रीयुत राजमान्य राजेश्री ...... यांसी

साष्टांग नमस्कार विनंती विशेष

(छोटोंको) श्रीयुत....यांसी स. न. वि. वि.

पत्रके नमूने

१. अभिनंदन पत्र

य. गो. जोशी
५५५ शनिवार, पुणें २.
२०-६-५७

श्री. रमानाथ यांस,

सा. न. वि. वि.

तुम्ही बी. ए. ची परीक्षा उच्चांक मिळवून प्रथम श्रेणींत उत्तीर्ण झालांत याबद्दल अभिनंदन. आपलें शिक्षण अशाच प्रकारें पूर्ण होवो अशी मनापासून परमेश्वराजवळ प्रार्थना करतों.

शक्य झालें तर उन्हाळ्याच्या सुटींत चार दिवसांकरितां अवश्य यावें असा आईसाहेबांचा निरोप आहे. चि. गोपूला आशीर्वाद. क. ही वि.

आपला,
जोशी

२. लग्नपत्रिका

॥ श्रीगजानन प्रसन्न ॥

श्रीयुत रा. रा. ....

....

आमचे येथें श्रीकृपेंकरून

चर :— श्री. वा. ब. गोगटे, बी. ए.

वधू :— सौभाग्यकांक्षिणी नलिनी कुलकर्णी

यांचा मंगल विवाह

दिनांक १७–६–५७ रोजीं संध्याकाळीं ठीक सात वाजतां " नातू मंगल-कार्यालय, ४२४ शनिवार पेठ, पुणें २ " येथें करण्याचें योजिलें आहे, तरी आपण सहकुटुंब सहपरिवार या मंगल प्रसंगीं उपस्थित राहून उपकृत करावें. क. ही वि.

आपल्या
सौ. मालती ब. गोगटे
सौ. सरस्वती द. गोगटे

आपले
ब. वा. गोगटे
द. वा. गोगटे

३. रजेचा अर्ज

श्री. डी. एस्. पी. साहेब, पुणें, यांचे सेवेसी

विषय : किरकोळ रजेची मान्यता.

महाशय,

आपणांस हें विदित आहेच कीं मी गेले चार दिवस आजारी असल्यामुळें चार दिवसांच्या किरकोळ रजेवर आहे. आजच डॉक्टरनीं सांगितलें कीं आणखी चार दिवस तरी उपचार करावयास हवेत आणि विश्रांति हवी. डॉक्टरांचें प्रमाणपत्र सोबत जोडीत आहे.

म्हणूनच नम्र विनंती कीं, दिनांक २०–६–५७ ते २३–६–५७ अखेर चार दिवसांची रजा मान्य करून उपकृत करावें. क. ही वि.

शं. वा. नवरे
५६८ नारायण पेठ
पुणें २.

आपला नम्र सेवक,
शं. वा. नवरे
१९–६–५७

४. वडिलांस पत्र

॥ श्री दुर्गा प्रसन्न ॥

तीर्थरूप अ. ज. करंदीकर यांसी,

कृतानेक साष्टांग नमस्कार विनंती विशेष.

आपलें तारीख १४ चें पत्र मिळालें. सोबतची मनिऑर्डरहि मिळाली. मी खुशाल आहें. माझी परीक्षा महिनाअखेर संपेल. अभ्यास खूप जोरांत चालू आहें. पहिला वर्ग निश्चित मिळवीन. परीक्षा आटोपतांच सौभाग्यवती माईला घेऊन येईन. चिंता नसावी. खर्च बेतानें करीत आहे. ती. आईसाहेबांना साष्टांग नमस्कार. चिरंजीव सुधा व कल्याण यांसी आशीर्वाद. कळावें ही विनंती.

आपला

४०६ शनिवार पेठ
पुणें २

रा. अ. करंदीकर
२०–६–५७

५. विनंतीपत्र

ॐ ७०६ सदाशिव पेठ पुणें २
दिनांक २८–६–५७

श्रीयुत व्यवस्थापक 'लोकसंग्रह' प्रेस, पुणें यांसी
सा. न. वि. वि.

आपली 'काळ' मधील जाहिरात वाचली. मी १० वर्षांपासून मुद्रितें तपाशीत आहे. कामाबद्दलचीं प्रशस्तिपत्रें सोबत धाडलीं आहेत. नम्र विनंती कीं सेवेची संधी द्यावी. क. ही वि.

आपला
वि. ना. ओगले

पत्रके शब्द–प्रयोग

चरणसेवेसी–नम्र निवेदन है कि, **उन्हाळा**–गरमी, **निरोप**–संदेसा रजा–रुखसत, **किरकोळ रजा** मामूली रुखसत, **हक्काची रजा**–खास रुखसत, ते–ता; से, **हवेत**–चाहिये, **अशा प्रकारें**–इस तरह, **पूर्ण होवो**–पूरी हो, **शक्य झालें तर**–अगर मुमकीन हो तो, **सहकुटुंब सहपरिवार**–बालबच्चोंके साथ, **हवीं**–चाहिये, **पत्रोत्तरीं**–लौटती डाक, **श्रीकृपेंकरून**–भगवानकी कृपासे, **योजिलें आहे**–तय किया है।

कठिन शब्दार्थ

शब्द	व्याकरण	अर्थ	बहुवचन
पावलें	क्रि.	प्राप्त हुआ	पावलीं
प्रकृति	स्त्री.	तबीयत	प्रकृति, प्रकृत्या
हवापाणी	नपुं.	आब व हवा	हवापाणी
खुशाल	वि.	खुशहाल	...
बहुतकरून	क्रि. वि.	ज्यादातर	...
बहुतेक	,, ,,	सभी, सर्व	....

यंदा	वि.	इस वर्ष	बहुवचन
पुढील	वि.	आगामी	....
आजोळ	नपुं.	ननिहाल	आजोळ
माहेर	नपुं.	मायका	माहेर
सासर	नपुं.	ससुराल	सासर
उकाडा	पु.	गरमी, उष्णता	...
धामधूम	स्त्री.	चहलपहल	धामधुमी
आडवें होणें	क्रि.	लेटना	....
पगार	पु.	तनख्वाह	पगार
कुलूप	नपुं.	ताला, कुफल	कुलपें
काल	क्रि वि.	कल	....
उद्यां	,, ,,	कल	....
परवां	,, ,,	परसों	...
गेल्या	वि.	गत	...
आपलें	नपुं.	आपका	आपलीं
येईन	क्रि.	आऊंगा	येऊं
सोबतची	अ.	साथ भेजी हुई	सोबतच्या
नसावी	क्रि.	न करें, न हो	नसावींत
अखेर	अ.	अंतमें	...
बेतानें	अ.	हिसाबसे	...
संपेल	क्रि.	समाप्त होगी	संपतील
जाहिरात	स्त्री.	विज्ञापन	जाहिराती
तपासीत	क्रि.	जाँचता	....
मिळवीन	क्रि.	प्राप्त करूंगा	मिळवूं
नम्र विनंती कीं—		सेवामें निवेदन है कि	विनंत्या
आटोपतांच	क्रि.	खतम होतेही	...

संधि	स्त्री.	अवकाश, मौका	...
घेऊन	क्रि.	लेकर	...
द्यावी	क्रि.	दें	...

महत्त्वपूर्ण सूचना

हिंदीमें अन्यभाषीय संज्ञाओंके उच्चारण भिन्न भिन्न तरहसे रायज हुए हैं। उ.:—बैंक, मैनेजर, पूना, बम्बई आदि। मराठीमें शब्दोंके मूल उच्चारणका प्रयोग जैसा का वैसा करनेकी पद्धति है। जिससे शब्दोंके पर्याय ठीक ठीक होते हैं। बैंक को बँक, मैनेजरको मॅनेजर, पूना को पुणें, बम्बई को मुंबई, इस्टेशनको स्टेशन आदि। मराठीमें और विशेषकर देवनागरी लिपिमें केवल मराठी भाषीय लोगोंके उच्चारणही अधिक शुद्ध और स्पष्ट होते हैं।

अभ्यास

१. अपने बडे भाईको मराठीमें पत्र लिखकर उसमें ' मराठी भाषाकी विशेषता ' बतलाइये।

२. मुख्याध्यापकको नौकरीके लिये एक दरखास्त लिखिये।

३. निम्न शब्दोंके लिंग बतलाइये और अर्थ कहिये। प्रकृति, सैन्य, शाळा, घर, कावळा, पायरी, नांव, गाढ, निकोप, पहाट, खेळ, शरीर, श्रम, डोकें, लुगडें, डाळ, वारा, देणगी, धैर्य.

४. निम्न कहावतको मराठीमें समझाइये।
' अब पछताअे क्या होत जब चिडियाँ चुग गईं खेत। '

* * *

२२ : : विभक्तिप्रत्यय २

पिछले पाठमें पुरुषवाचक सर्वनामके तीनों पुरुषोंको विभक्ति-प्रत्यय लगाये गये हैं। तीनों लिंगोंकी सभी अंत्याक्षरी संज्ञाओंको विभक्तिप्रत्यय लगाकर उन रूपोंका यदि स्पष्टीकरण देना चाहें तो केवल इसी कार्यकी एक पुस्तिका बन जाएगी। इस लिये यहाँपर अब केवल तीनों लिंगोंकी संज्ञाको एक मात्र विभक्तिप्रत्यय लगाकर बतलाया जाता है।

आकारान्त पुल्लिंगी 'वाडा' (मकान)

ए. व.	ब. व.
प्र.—वाडा	वाडे.
द्वि.—वाडा, वाड्यास, वाड्याला.	वाडे, वाड्यांस, वाड्यांना.
तृ.—वाड्यानें, वाड्याशीं.	वाड्यांनीं, वाड्यांशीं.
च.— (द्वितीयाके अनुसार)	
पं.—वाड्याहून.	वाड्यांहून.
ष.—वाड्याचा, वाड्याची, वाड्याचें.	वाड्यांचा वाड्यांची, वाड्यांचें
स.—वाड्यांत	वाड्यांत
संबो.—वाड्या	वाड्यांनो

अकारान्त नपुंसकलिंगी 'घर'

प्र.—घर	घरें
द्वि.—घर, घरास, घराला.	घरें, घरांला, घरांना.
तृ.—घरें, घरानें, घराशीं.	घरांनीं, घरांशीं.
च.—घरास, घराला, घरातें.	घरांस, घरांला, घरांना.
पं.—घरून, घराहून.	घरांहून.
ष.—घराचा, घराची, घराचें.	घरांचा, घरांची, घरांचें.
स.—घरीं, घरांत.	घरांत.
संबो.—घर	घरांनो.

ईकारान्त स्त्रीलिंगी ' नदी '

प्र.–नदी		नद्या
द्वि.–नदी, नदीस, नदीला.		नद्यांस, नद्यांला, नद्यांना.
तृ.–नदीनें, नदीशीं.		नद्यांनीं, नद्यांशीं.
च.–	(द्वितीयाके अनुसार)	
पंच.–नदीहून.		नद्यांहून.
ष.–नदीची, नदीचें		नद्यांचीं, नद्यांचें.
स.–नदींत.		नद्यांत.
संबो.–नदी		नद्यांनो.

इसी प्रकार अकारान्त सभी संज्ञाओंको विभक्तिप्रत्यय जोडनेका यत्न करें।

सर्वनाम (वह) तो, ती, तें (यह) हा, ही, हें (जो) जो, जी, जें. जे, ज्या, जीं इन सर्वनामोंको विभक्तिप्रत्यय जोडनेपर उनके रूप किस प्रकार परिवर्तित होते हैं यह समझनेसे आप किसीभी शब्दको आसानीसे विभक्तिप्रत्यय जोड सकते हैं और उनके रूपोंकोभी समझ सकते हैं।

	ए. व. अ. व.	ए. व.	अ. व.	
१. पु. तो	त्यास–त्यांस	त्याला	त्यांना	....
२. पु. हा	ह्याहून–ह्यांहून	ह्याचा	ह्यांचा	....
३. पु. जो	ज्यानें–ज्यांनीं	ज्याशीं	ज्यांशीं	....
४. स्त्री. ती	तिला–त्यांना	तिचा	त्यांचा	....
५. स्त्री. ही	हिनें–ह्यांनीं	हीस	ह्यांस	....
६. स्त्री. जी	जिला–ज्यांना	ज्याहून	ज्यांहून	....
७. नपुं. तें	त्यास–त्यांस	त्याला	त्यांना	....
८. नपुं. हें	ह्यास–ह्यांस,	ह्यानें	ह्यांनीं	....
९. नपुं. जें	ज्यास–ज्यांस,	ज्याला–	ज्यांना	....

विभक्तिप्रत्ययके उपयोग

हिंदी कीजिये

१. रामाहून लक्ष्मण लहान आहे. २. राम रावणाच्या युद्धापासून तुम्ही काय शिकाल? ३. ज्यानें ही अंगठी दिली तो कोठें आहे, ४. घोड्याच्या पाठीवर खोगीर आहे. ५. त्यांच्यांत ही संवय नाहीं. ६. दरवर्षीं गारा पडतात. ७. पावसानें चिखल होतो. ८. त्यांना ही सूचना दाखवा. ९. तूं कोठें जातोस? १०. वाड्यास गराडा घातला.

कठिण शब्दार्थ

युद्धापासून–युद्धसे, शिकाल–क्रि. उभय लिं. सीखोगे, ज्यानें–स. जिसने, दिली–क्रि. भू. दी, पाठीवर–पीठपर, खोगीर–नपुं. गदरा, त्यांच्यांत–सर्व. उनमें, दरवर्षीं–सप्तमी–हरसाल, गारा–स्त्री. ब. ओले, चिखल–पु. कीचड, दाखवा–क्रि. उभ. लिं. बतलाओ–इये, जातोस–क्रि. एकवचन जाता है, गराडा–पु. घेरा.

[एकवचनी और बहुवचनी कारकोंके (प्रत्ययके) रूपोंको समझ लीजिये ।

साथ साथ शब्दोंके विकृत-रूपोंको भी समझ लीजिये जो प्रत्यय जोडनेके पूर्व होता है ।]

अभ्यास

१. गर्व, सौंदर्य, रूप, कार्य, श्रम, सभा, वक्ता, कार्यालय, पत्र इन मराठी शब्दोंके लिंग बतलाकर बहुवचनके रूप बतलाइये ।

२. ईकारान्त ' शेळी ' (बकरी) संज्ञाको विभक्तिप्रत्यय जोडिये !

३. और, यादि, हम, नींद, दवात, बहुत इन शब्दोंके मराठी प्रतिशब्द दीजिये ।

* * *

वर्तमान	भूत (अतीत)	भविष्य	(हिंदी) वर्तमान
रामाचें फळ आहे.	रामाचें फळ होतें.	रामाचें फळ असेल.	रामका फल है।
हरी जातो.	हरी गेला.	हरी जाईल.	हरी जाता है।
गाय दूध देते.	गाईनें दूध दिलें.	गाय दूध देईल.	गौ दूध देती है।
कोट शिवतो.	कोट शिवला.	कोट शिवील.	कोट सीता है।
स्वैंपाक होतो.	स्वैंपाक झाला.	स्वैंपाक होईल.	खाना बनता है।
कुत्रीं हरवतात.	कुत्रीं हरवलीं.	कुत्रीं हरवतील.	कुत्ते खोए हैं।
दौत सांडतो.	दौत सांडली.	दौत सांडेल.	दवात गिरती है।
घर बांधितो.	घर बांधलें.	घर बांधील.	मकान बांधता है।
सूर्य उगवतो.	सूर्य उगवला.	सूर्य उगवेल.	सूरज निकलता है।
रात्र होते.	रात्र झाली.	रात्र होईल.	रात होती है।
कुत्रें भुंकतें.	कुत्रें भुंकलें.	कुत्रें भुंकेल.	कुत्ता भोंकता है।
पाणी वाढतो.	पाणी वाढलें.	पाणी वाढेल.	पानी परोसता है।
धडे शिकवितो.	धडे शिकविले.	धडे शिकवील.	पाठ पढाता है।
म्हैस विते.	म्हैस व्याली.	म्हैस विईल.	भैंस जनती है।
मेवा खातो.	मेवा खाल्ला.	मेवा खाईल.	मेवा खाता है।

[मराठी क्रियाओंको जाननाभी कुछ कठिन अवश्य है। परंतु फिरभी भाषाके रूपको तथा उस रूपके लिये आवश्यक व्याकरणको समझानेका उद्देश्य मात्र होनेसे यहाँपर क्रियाओंके केवल तीन रूपोंको दिया जाता है। अर्थात् ये तीन रूप सिद्धान्त नहीं बन सकते। फिरभी इनसे सामान्य जानकारी होगी। 'शिक्षक' में भाषाके द्वारा सभी रूपोंका दर्शन कराया है। यह दर्शन, जब अभ्यस्तरूप बन जाएगा तो अनायास क्रियाओंके सभी रूप आपके ध्यानमें आएंगे।]

क्रियाके रूप

हिंदीमें क्रियाके तीन रूप हैं। उदाहरण—देना, दिलाना और दिलवाना। इन रूपोंको (दिलाना-प्रेरणा और दिलवाना-प्रयोजक) कहते हैं। लेकिन मराठीमें दोही रूप हैं। प्रयोजक दूसरेको कहते हैं। उदाहरण :—देणें-देवविणें।

उसी प्रकार—

बसणें - बसविणें, उठणें - उठविणें, म्हणणें-म्हणविणें, गाणें-गावविणें, फसणें-फसविणें, भरणें-भरविणें, करणें-करविणें, जाणें-जाववणें, धुणें-धुवविणें, निजणें-निजविणें, ऐकणें-ऐकविणें इत्यादि। अर्थात् हिंदीसे ये मराठी रूप आसान हैं।

आज्ञार्थ

[निम्न तालिकासे आप आज्ञार्थको अच्छी तरह समझ सकते हैं इसलिये स्पष्टीकरणकी कोई आवश्यकता नहीं है।]

क्रियापद	तूं	तुम्ही	आपण
करणें	कर	करा	करावें
जाणें	जा	जा	जावें
येणें	ये	या	यावें

धरणें	धर	धरा	धरावें
होणें	हो	व्हा	व्हावें
असणें	अस	असा	असावें
बघणें	बघ	बघा	बघावें
फिरणें	फीर	फिरा	फिरावें
लपणें	लप	लपा	लपावें
बसणें	बस	बसा	बसावें
करणें	कर	करा	करावें
पोहोंचणें	पोहोंच	पोहोंचा	पोहोंचावें
धुणें	धू	धुवा	धुवावें
घसरणें	घसर	घसरा	घसरावें
वाचणें	वाच	वाचा	वाचावें
शिकणें	शीक	शिका	शिकावें
मारणें	मार	मारा	मारावें

उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुषको आज्ञा देता है इसलिये "तूं, तुम्ही, आपण" तालिकाके द्वारा आज्ञार्थके रूपको स्पष्ट किया है। 'आपण' का उक्त प्रयोग भाषामें रूढ नहीं है। 'तुम्ही' का प्रयोगही 'आपण' के लिये किया जाता है। इसलिये आपभी केवल तूं और तुम्ही के प्रयोगको ध्यानमें रखिये।

तीनों लिंगोंमें आज्ञार्थका प्रयोग परिवर्तित नहीं होता। मात्र ध्यानमें रहें कि तूं, तुम्ही और आपणके प्रयोजक रूप बदलते हैं।

क्रियाविशेषणके रूप

तूं असतास तर मी आलों असतों.

अगर तू होता तो मैं आता।

तें पळतें तर चांगलें झालें असतें. (नपुं.)

वह भागता–भागती तो अच्छा होता।

तुम्ही गाता–गात्या तर आम्ही गायलों असतों.

तुम गाते–गातीं तो हम गाते।

तो म्हणता तर त्यानें जीवसुद्धां दिला असता.

वह कहता तो वह जान तक दे देता।

ते सांगते तर बरें झालें असतें.

वे कहतें तो ठीक होता।

त्या हसत्या तर सर्व बिघडलें असतें.

वे हँसतीं तो सब बिगड जाता।

तीं पळतीं तर पडलीं असतीं.

वे भागते–भागतीं तो गिर पडतीं।

विध्यर्थके रूप

तूं बसावें–तू बैठे। **आपण गावें**–आप गाएँ। **त्या पेटींत पैसे ठेवावेत**–उस संदूकमें पैसे रखें। **तुम्ही यावें**–तुम आओ। **त्या जाव्यात**–वे जाएँ। **घरीं यावें**–घर आएँ।

[इन उदाहरणोंसे आप जान सकते हैं कि विध्यर्थका रूप तीनों लिंगोंमें समान रहता है। मात्र बादके आधे वाक्यसे विध्यर्थका लिंग पहचाना जाता है। हिंदीमेंभी भविष्यत् कालके गा, गी, गे शब्दको हटानेसे विध्यर्थका रूप उभयलिंगी बनता है।

तृतीय पुरुषके रूपोंका या दर्शक सर्वनामोंके रूपोंका मात्र लिंग पहचाना जाता है। विषय समझनेके लिये उक्त उदाहरण काफी है।

के–कर–करके

क्रियाके धातूको '**ऊन**' लगाकर के–कर–करके यह रूप बनाया जाता है। उदाहरणार्थ— देऊन, घेऊन, करून, पोहोंचून, पाहून, लपून, बघून, आणून, निजून, वाचून, शिकून आदि.

उसी प्रकार प्रयोजक रूप 'वून' लगाकर बनता है। उदाहरणार्थ— करवून, वाचवून, शिकवून, आणवून, निजवून, लपवून, देववून, पोहोंचवून, पाहवून.

क्रियाके रूपोंको जाननेके लिये

हिंदी कीजिये—

१. त्या काय म्हणतात ? २. आम्ही येऊं. ३. ते पक्षी आकाशांत उडतात. ४. गंगेंत आम्ही रोज पोहतों. ५. आमच्याजवळ फार मोठी संपत्ति आहे. ६. त्या संपत्तीचा ते दुरुपयोग करतात. ७. ती गाणीं गात होती. ८. तें घोडें गवत खात राहील. ९. तीं दाणा खात होतीं. १०. हा मुलगा लिहीत तर नाहींच परंतु वाचीतहि नाहीं. ११. ती भ्याली. १२. तो खात होता. १३. शिवाजीनें युद्धें केलीं. १४. हल्लीं जगांत युद्धाला वाचा फोडणें पाप समजलें जातें. १५. यामुळें सामुदायिक युद्ध थांबलें असलें तरी व्यक्तिगत जीवनविषयक युद्धाची तीव्रता वाढली आहे.

कठिन शब्दार्थ

येऊं–क्रि. भवि. आएँगे–आएँगी, दुरुपयोग–वि. गैर इस्तेमाल, गवत–नपुं. घास, दाणा–पु. दाना, नाहींच–क्रि. ही नहीं, हि नाहीं – भी नहीं है, भ्याली – क्रि भू. डर गयी, युद्धें केलीं – नपुं. क्रि. लडाइयाँ लडीं, हल्लीं–अ. आजकल, वाचा फोडणें–मुँह खोलना.

आप कह सकते हैं कि— ये जो पंधरह क्रियाएँ दी हैं उनका काल, रूप, वचन और लिंग कौनसा है। क्रियाओंका अनुवाद कीजिये।

* * *

२५ : : क्रियापदांचीं रूपें, भाग २

सामान्य क्रियाके बारेमें यथोचित जानकारी प्राप्त करनेके बाद क्रियाओंके अन्य रूपोंकोभी अब आप देख लीजिये।

(१) जोड क्रियाएँ

देणें – देना, होणें–होना, असणें–होना, उठणें–उठना, बसणें–बैठना, टाकणें–डालना, लावणें–लगाना, चुकणें–चूकना, घेणें–लेना, मारणें–मारना, जाणें–जाना आदि। उदाहरणार्थ—

हिंदी कीजिये—

१. त्याचें पैसे देऊन टाक. २. एक गाणें होऊं द्या. ३. कर करून तो काय करणार? ४. तें काम होऊन गेलें. ५. तो हें काम करून चुकला. ६. याचें टुमणें लागलें आहे. ७. थोडें उठून बसा. ८. रामानें रावणाला मारून टाकलें. ९. येऊन जाऊन काय करणार? १०. टाकून बोलणें मला आवडत नाहीं. ११. तिचे धडे करून झाले. १२. देऊन देऊन किती देणार! १३. दोन लाडू तो केव्हांच खाऊन टाकील. १४. लाथा झाडून त्या घोड्यानें गाईला घायाळ केलें.

[क्रियाके धातूको 'ऊन' जोडनेसे सहायक क्रियाका रूप बनता है। यह सहायक क्रिया कर्मकी विशेषता स्पष्ट करती है। ध्यानमें रहें कि सहायक क्रियाका रूप तीनों लिंगोंमें समान होता है।]

कठिन शब्दार्थ

देऊन टाक – दे दे, देऊन टाका – दे दो, होऊं द्या–होने दो, करकरून–करके, होऊन गेले–हो चुके, करून चुकला–कर चुका, टुमणें लावणें–भुनभुन लगाना, उठून बसा–ऊठ बैठो, मारून टाकलें

–मार डाला, येऊन जाऊन काय करणार–कर करकर क्या करोगे ? टाकून बोलणें – अपमानित करना, आवडत नाहीं – नहीं भाता है, करून झालें–हो चुके, देऊन देऊन–दे देकर, खाऊन टाकील–खा चुकेगा, लाथा झाडून–टांगें चलाकर, घायाळ–घायल, जखमी.

(२) तात्कालिक नित्यक्रिया

[धातूके साथ 'ईत' जोडनेसे तात्कालिक क्रियाका रूप बनता है। उदाहरण— करणें–णें=कर + ईत = करीत। उसी प्रकार 'एत' भी धातूको जोडा जाता है। उ०– देणें – णें = दे + एत = देत। 'होणें', 'असणें' और 'राहणें' इन क्रियाओंके परिवर्तित रूपोंको भी देख लीजिये। अनायास अभ्यस्त बनेंगे।]

हिंदी कीजिये—

१. मी आपली वाट पाहात असेन.
२. गाई दूध देत असतील.
३. तो पोटासाठीं श्रम करीत आहे.
४. त्या लिहीत आल्या आहेत.
५. मी हें काम करीत आलों आहें.
६. आम्ही जात जाऊं.
७. त्या गाणीं गात होत्या.
८. जातां जातां दिवस गेले.
९. तें रडत राहिलें आहे.
१०. गरिबांवर प्रेम करीत जा.
११. उकाडा फार वाढला आहे.
१२. मी येऊन जाईन.
१३. काश्मीरमध्यें सतत पाऊस पडत असतो.
१४. सावित्री कपडे शिवीत असते.
१५. आम्ही गात राहूं.

कठिन शब्दार्थ

पाहात असेन–देखता रहूँगा, देखती रहूँगी, **देत असतील** – देती होंगी, देते होंगे, **करीत आहे**–करता है, करती है, **आल्या आहेत**–आई हैं, रही हैं, **आलों आहें, आलें आहें** – आया हूँ, आयी हूँ, **जात जाऊं**–जाया करेंगे–करेंगी, **गात होत्या**–गाती थीं, **दिवस गेले**–दिन बीते, **जातां जातां**–जाते जाते; होते होते, **राहिलें आहे**–नपुं. ए. रहा–रही है, **राहिले आहेत**–रहे– ही हैं, **करीत जा**–करते जाओ, किया करो, **वाढला आहे**–बढा है, **येऊन जाईन**–आ जाऊँगा–गी, **पाऊस**–पु. वर्षा स्त्री., **पडत असतो**–होता रहता है; हुआ करता है, **शिरीत आली आहे**–सीती आयी है; रही है, **गात राहूं**–गाते रहेंगे; गाती रहेंगी, गाया करेंगे–करेंगी.

(३) शक्यताबोधक

१. **तुम्ही गातां तर आम्ही गाऊं शकलों असतों.**
तुम गातीं तो हम गा सकते थे ।

२. **त्याला जातां येणार नाहीं.**
वह जाने न पाएगा ।

३. **तो जाऊं शकणार नाहीं.**
वह जा न सकेगा ।

४. **पाऊस पडता तर बरें झालें असतें.**
वर्षा होती तो ठीक होता ।

५. **आत्याला मिशा असत्या तर काका म्हटलें असतें.**
अगर बुआके मूँछे होतीं तो चाचा कहते थे ।

६. **तो सांगता तर मी प्राणसुद्धां दिला असता.**
वह कहता तो मैं जान तक दे देता ।

७. **मीच येथें बसूं ना ?**
क्या मैंही यहाँ बैठूँ ?

८. आम्ही येऊं शकलों तर अवश्य येऊं.
हम आ सके–सकीं तो अवश्य आएँगे–आएँगी ।
९. तें उभें राहातें तर पडलें असतें.
वह खडा रहता–रहती–तो गिर जाता–जाती ।
१०. शक्य असेल तर अवश्य या.
अगर मुमकीन हो तो अवश्य आओ–आइये ।
११. नाहीं म्हटलें तरी तो देऊं शकेल.
ना कहने परभी वह दे सकेगा ।
१२. आपलें लग्न होतें तर किती बहार झाली असती !
अपनी शादी होती तो कितना मजा आता ।
१३. आपण दुपारीं येऊं शकाल काय ?
क्या आप दोपहरको आ सकेंगे ?
१४. आपलें बोलणें संपलें म्हणजे मी बोलेन.
आपका कहना समाप्त हो चुकनेके बाद मैं बोलूँगा ।
१५. आपण केव्हां आलों ?
हम कब आये ?
१६. तो आपलें काम करतो.
वह अपना काम करता है ।
१७. तो आपल्या दुकानीं गेला नव्हता.
वह अपनी दूकानपर नहीं गया था ।
१८. मी आपल्या घरीं येईन.
मैं आपके घर आऊँगा ।

* * *

यद्यपि भाषाके लिये व्याकरणका गहरा अभ्यास करनेकी आवश्यकता नहीं है परंतु फिरभी किसीभी भाषाको बिना व्याकरणके ठीक ढंगसे सीखनाभी अशक्य है। इसलिये भाषाके लिये जितना आवश्यक व्याकरण है उतना बार-बार अनेक ढंगोंसे दिया गया है। यदि भाषामें नैपुण्य प्राप्त करना हो तो निम्न पद्धतिसे मराठीके व्याकरणका सामान्य ज्ञान अवश्य प्राप्त कर लीजिये। इस पद्धतिको मराठीमें " व्याकरण चालविणें " कहते हैं।

१. रामानें आंबा खाल्ला.

रामने आम खाया।

वाक्य पुल्लिंगी है। कर्मणि प्रयोग है। भूतकालीन है।

रामा—' राम ' संज्ञाका विकृत रूप है। पु. कर्ता है।

नें—तृतीयाका प्रत्यय है।

आंबा—कर्म, पु. एकवचन है।

खाल्ला—क्रिया, पु. एकवचन भूतकाल है।

२. ह्यांच्यापेक्षां तो शहाणा आहे.

वाक्य पु. वर्तमान है। कर्तरि प्रयोग है।

ह्यां—हे, ह्या, हीं का विकृत रूप है। दर्शक सर्वनाम है। अर्थात् बहुवचनी है।

च्या—षष्ठीका एकवचनी विकृत रूप है।

पेक्षां—अव्यय है।

तो—पु. एकवचन और कर्ता है।

शहाणा—विशेषण, पुल्लिंग है।

आहे—पु. एकवचन, वर्तमानकालवाचक क्रिया है।

३. तें घट्ट आवळून बांध.

वह मज़बूत कसकर बांध।

वाक्य आज्ञार्थी, उभयलिंगी, वर्तमानकालवाचक है।

तें— नपुंसकलिंग, एकवचन, दर्शक सर्वनाम ।

घट्ट— विशेषण

आवळून— क्रियाविशेषण.

बांध— आज्ञार्थ, उभयलिंगी, एकवचनी क्रिया।

४. तिला दोन मुली होत्या.

उसके दो लडकियाँ थीं।

वाक्य कर्तरि, स्त्रीलिंगी भूतकालीन है।

तिला— 'ती' तृतीय पुरुषी, स्त्रीलिंगी सर्वनामका विकृत रूप, ए. वचन, द्वितीयाका उभयवचनी प्रत्यय ।

दोन— संख्याविशेषण

मुली— स्त्रीलिंगी, बहुवचनी कर्म ।

होत्या— 'होणें' क्रियाका स्त्रीलिंगी, बहुवचनी, भूतकालीन विकृत रूप।

४. गोविंदास रामाचा चेंडू लागला.

गोविंदको रामका गेंद लगा।

यह वाक्य पुल्लिंगी, एकवचनी और कर्तरि है।

गोविंदास— 'गोविंद' संज्ञाका विकृत रूप है 'गोविंदा।' द्वितीयाका उभयवचनी प्रत्यय है।

रामाचा— 'राम' संज्ञाका विकृत रूप रामा, ए. व., पु. है। 'चा' षष्ठीका पु. ए.वचनी प्रत्यय है।

चेंडू—पु. ए. व. कर्ता है।

लागला— पु. ए. व. भूतकालीन क्रिया है।

५. आम्ही भात खात नाहीं.

हम चाँवल नहीं खाते हैं।

यह वाक्य कर्तरि, उभयलिंगी,बहुवचनी और वर्तमानकालवाचक है।

आम्ही—प्र. पुरुषका बहुवचन, उभयलिंगी, कर्ता है।

भात—पु. उभयवचनी कर्म है।

खात—सहायक क्रिया। 'खाणें' का नित्यबोधकका विकृत रूप।
उ. लिंगी, उभयवचनी।

नाहीं—बहुवचनी, उभयलिंगी वर्तमानकालवाचक क्रिया।

६. ते पैसे देतील व पुस्तकें घेतील.

वे पैसे देंगे और किताबें लेंगे।

यह वाक्य कर्तरि, पुल्लिंगी, बहुवचनी और भविष्यकालीन है।

ते—पुल्लिंगी बहुवचन और कर्ता।

पैसे—बहुवचनी, पुल्लिंगी सहायक कर्म।

देतील—'देणें' की भविष्यकालीन रूप, (पु.स्त्री. व नपुंसकलिंगी)
क्रिया यहाँ पुल्लिंगी।

व—अव्यय

पुस्तकें—नपुंसकलिंगी, बहुवचनी कर्म।

घेतील—भविष्यकालीन बहुवचनी क्रिया। (पु.स्त्री. वनपुंसकलिंगी)
यहाँ पुल्लिंगी।

आप जानते हैं—

[१] वर्तमान, भूत और भविष्यकालीन रूपोंको आप समझ सकते हैं।

[२] साथ साथ मराठी शब्दोंके शब्दार्थ भी आपको बहुत याद हुए होंगे।

[३] अनुस्वारोंको कहाँ और क्यों दिया गया है यह आपको कहनेकी आवश्यकता नहीं है।

[४] वर्तमान, भविष्य और भूतकालके किन किन रूपोंको दिया गया है यह आप समझ सकते हैं।

* * *

२७ : : मुलें (लडके)

हिंदी कीजिये

मुलें स्वभावतः खोडकर [नटखट] असतात [होते हैं].
त्यांच्यांत विचारशक्ति मोठी असते. तीं कल्पकहि असतात.
त्यांच्यांतील कल्पनाशक्ति जागृत ठेवावयास पाहिजे [रखनी चाहिये]. ते लहान तोंडीं मोठा घास [छोटा मूँह बडी बात] घेत नाहींत.
आपली योग्यता ओळखून वागतात [पहचानकर बर्ताव करते हैं].
मुलें मुळींच [कदापि] दुष्ट नसतात.
दुष्टता ही स्वयंसिद्ध नसते [नहीं होती है.]
सुसंस्कृत आईवडिलांचीं मुलें सुसंस्कृतच असतात.
रंकाचा राव [नरका नारायण] ही म्हण कां प्रचलित झाली ?
भाग्यरेखा आईवडील किंवा [अथवा] मोठीं [बडीं] माणसें निर्मितात. पृथ्वी, सूर्याभोंवतीं फिरल्यावर [घूमनेके बाद] सूर्याचा दाह भासणारच, [अनुभव कर सकेंगे,] मग [फिर] सूर्याला नांवें [दोष] ठेवण्यांत [लगानेमें] काय अर्थ ?
सूर्य तापणार [तपेगा] व पृथ्वी ही फिरणार हा योग आहे, हें म्हणणें [कहना] निराधार आहे. रात्र [रात्री] संपल्यावर [बीतने पर] दिवस उगवणारच [निकलेगाही] हें सांगण्याला [कहनेके लिये] ज्योतिषी कशाला ? [किसलिये]. जग निर्माते भगवान् नसून [नहीं, पर] आईवडीलच असतात. मुलें कधीं-तरी [कभी न कभी] आई वडील होतातच.

इन वाक्योंमें कठिन शब्दोंके हिंदी अर्थ दिये गये हैं। कुछ शब्दोंके रूप अभ्याससे पाठांतरित होंगे।

स्मरणार्थ

इस पाठमें:—

स्त्रीलिंगी संज्ञाएँ:—दुष्टता, भाग्यरेखा, आई, पृथ्वी, गाय, दौत, म्हैस.

पुल्लिंगी संज्ञाएँ:—वडील, रंक, राव, सूर्य, राम, हरी, कोट, स्वैंपाक.

नपुंसकलिंगी संज्ञाएँ:—मूल, तोंड, फळ, जग, दूध, कुत्रें, घर, पाणी.

विशेषता—शब्दोंके पर्याय कोशके लिये उपयुक्त हो सकते हैं। भाषाके अनुवादमें ये शाब्दिक पर्याय कभी कभी निरर्थक होते हैं। उदाहरणार्थ 'दोष देणें' इस मराठी वाक्य का अनुवाद 'दोष देना' इस प्रकार यदि किया गया तो भाषाकी विशेषता इससे नष्ट होगी। 'दोष लगाना' यही इस वाक्यका सच्चा स्वरूप हो सकता है। आप जानते हैं कि प्रत्येक भाषाका अपना अपना ढंग होता है।

शब्दसंग्रह

शब्द		अर्थ	अनेकवचन
घास	पु.	निवाला, ग्रास	घास
ओळखणें	क्रि.	पहचानना	...
उगवणें	,,	उगना	...
पाटी	स्त्री.	तख्ती	पाट्या
खोडी	,,	शरारत	खोडया
दप्तर	नपुं.	बस्ता	दप्तरें
शाळा	स्त्री.	पाठशाला	शाळा
सुटी	स्त्री.	छुट्टी	सुट्या

लेखणी [लेखनी], पेन्सिल, शिक्षक, कोश, पुस्तक, विद्यार्थी, पाठ आदि शालाविषयक शब्द मराठीमेंभी रायज है।

* * *

मराठी कीजिये

चौबीस घण्टोंका एक दिन होता है। तीस दिनका एक महीना। बारह महीनेका वर्ष। एक वर्षमें ६ ऋतुएँ होती हैं। प्रत्येक दिनमें विशेषता होती है। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक देनकी वर्षा चौबिसों घण्टे भारतवर्षमें होती है। इसीलिये भारतवर्ष सबसे श्रेष्ठ है। ऋतु, दरख्त, दरिया, समुद्र, पर्वत, हवा, पानी, अपनी अपनी वर्षामें हमेशा मग्न रहते हैं।

हिंदी कीजिये

भारताचें भूषण कोणतें? प्रत्येक वस्तु येथील भूषण आहे. भारताला सुवर्णभूमि व स्वर्ग म्हणतात तें याचमुळें. भारतीयत्वाचा ध्वज आजपर्यंत अनेक वेळां जगज्जेता झाला. मानानें तो आजहि जगत्श्रेष्ठ आहे. निसर्गाचा, ज्ञानाचा, कर्तृत्वाचा सारखा वर्षाव भारतांत होत असतो. भारतीयत्वाच्या ज्ञानगंगेंत आजपर्यंत अनेक पवित्र पुण्यात्मे झाले. पाण्याचा पाऊस वर्षाऋतूंतच पडतो. परंतु भारतांतील प्रत्येक क्षण कुठल्यातरी पावसानें भरलेला आढळेल. भारतांत ३६० राष्ट्रजीवक महात्मेच केवळ ज्ञानाचा पाऊस पाडणारे होऊन गेले नसून त्यांच्या अनेकपट झाले आहेत. जीवनोपयोगी ज्ञानाचा सर्व प्रकारचा सतत पाऊस ते पाडीत आहेत.

कठिन शब्दार्थ

हिंदी

चौबीस–वि. चोवीस
दिन–पु. दिवस
बारह–वि. बारा
मौसम–पु. ऋतु

मराठी

येथील–वि. यहाँकी
म्हणतात–क्रि. कहते हैं
याचमुळें–अव्य. इसीलिये
पर्यंत–अव्य. तक

होते हैं–क्रि. असतात	वेळा–स्त्री. समय
देन–स्त्री. देणगी	जेता–पु. विजेता
इसीलिये–अव्य. याचकरितां	झाला–क्रि. हुआ
दरख्त–नपुं. झाड	आजही–वि. आजभी
दरिया–स्त्री. नदी	दीप–पु. दीपक, दीया
दरया–पु. समुद्र	सारखा–अ. सतत
पानी–नपुं. पाणी	असतो–क्रि. होता है
अपनी–सर्व. आपल्या	प्रत्येक–अ. हर, प्रति
हमेशा–अव्य. नेहमीं	कुठल्या तरी–स. किसी प्रकार
रहते हैं–क्रि. राहतात	भरलेला–अव्य. भरा हुआ
आढळेल–क्रि. दिखेगा	केवळ–अव्य. केवल
दागिना–नपुं. गहना	पडणारे–क्रि. गिरानेवाले
कोणते–सर्व. कौनसा	होऊन गेले–क्रि. हो गए
नसून–अव्य. नहीं है	पट–वि. गुना

तुम्हें विश्वास होगा कि

१. मराठी और हिंदी दोनों परिच्छेदोंका शब्दार्थ मराठीसे हिंदी और हिंदीसे मराठीमें दिया गया है। इन परिच्छेदोंसे ज्ञात होगा कि कई शब्द दोनों भाषाओंमें समान रायज हैं। वाक्यरचनाका ढंग थोडासा भिन्न है।

२. फिरभी क्रियाकी पद्धति मराठीमें बिलकुल अलग है और यह स्वाभाविकभी है। क्रियाओंके रूपोंपर अधिक ध्यान दिया जाए।

३. वचनोंके पहचाननेमें अधिक कष्ट न होंगे। प्रश्न केवल लिंगोंका है।

इस पाठ के शब्दोंके लिंग—

पुल्लिंगी :—भारत, दीप, ध्वज, स्वर्ग, निसर्ग, पुण्यात्मा, ऋतु, क्षण, पाऊस.

स्त्रीलिंगी :—वस्तु, सुवर्णभूमि, गंगा आदि.

नपुंसकलिंगी :—भूषण, भारतीयत्व, तन, मन, ज्ञान, कर्तव्य, पाणी आदि.

* * *

२९ : : परिचय

हिंदी कीजिये

परिचय करून (करा) देण्याची प्रथा फार चांगली आहे. संघटनेची (संगठनकी) ही पहिली पायरी (सीढी) आहे. परिचयानंतर स्नेह व मग (बादमें) संघटन. परिचय मात्र सहृदय व व्यक्तिगत व्हावा (होना चाहिये). वाडवडिलांच्या नांवलौकिकावर (मशहूरतापर) स्वतःची प्रसिद्धी करून (करके) घेणें (लेना) केव्हांहि (कभीभी) इष्ट नाहीं. कांहीं व्यक्ति बायकोच्या (पत्नीके) नांवावर पुढें (प्रसिद्ध, आगे) येतात. हीं माणसें हीन दर्जाचीं होत (हैं). स्वतःच्या कर्तृत्वानें पुढें येणें उत्तम.

आपल्या (अपने) कर्तृत्वाचा लाभ अनाठायीं (बुरी जगह) होऊं नये (न हो) याची काळजी प्रत्येकानें घेतली पाहिजे. नाहींतर (वरना) स्वार्थांधता माजते (फैलती है). सज्जन मंडळी स्वतःच्या कर्तृत्वाचा उल्लेखसुद्धां (निर्देश तक) टाळतात (नहीं करते). लबाड (झूट) लोक स्वतःचा गौरव स्वतःच करीत असतात (करते रहते हैं). याचें कारण अज्ञान. स्वतःचा स्वतः परिचय करून घेणें अधिक चांगलें. ज्यांनीं (जिन्होंने) स्वतःला ओळखलें (पहचाना) नाहीं तीं (वे) माणसें स्वतः तर (आपभी) फसतातच (धोखा खाते) आणि दुसऱ्यांनाहि फसवितात.

परिचय करून देतांना (करते समय) फक्त स्वतःचें नांव, गांव व उद्योग सांगावा (कहना).

पाठकी विशेषता

इस पाठमें हिंदीसे मिले-जुले शब्दोंकाही प्रयोग किया गया है। जो शब्द कठिन है उनका अर्थ दिया गया है। केवल शब्दार्थोंसे वाक्योंका मतलब कहीं कहीं उतना अधिक स्पष्ट नहीं होता। इसलिये शब्दोंका पर्याय देनेके बजाय भावार्थ दिया जाना अधिक उपयोगी होता है।

कठिन शब्दार्थ

शब्द		अर्थ	अनेकवचन
परिचय	पु.	परिचय	परिचय
प्रथा	स्त्री.	पद्धति	प्रथा
संघटन	नपुं.	संगठना	...
पायरी	स्त्री.	सीढी	पायऱ्या
केव्हां	अ.	कब	
इष्ट	वि.	इच्छित	...
नांव	नपुं.	नाम	नांवें
दर्जा	पु.	स्थिति	दर्जे
हीन	वि.	नीच, कमी	....
कर्तृत्व	नपुं.	कर्तृत्व	....
काळजी	स्त्री.	फिकर	काळज्या
टाळणें	क्रि.	टालना	....
कारण	नपुं.	कारण	कारणें
अज्ञान	नपुं.	ना समझ	....
गांव	नपुं.	गाँव	गांवें

* * *

३० : : वाक्यार्थ

१ किती उशीर केलास तूं ?
तुमने कितनी देर लगाई ?
२ सूर्य केव्हांच उगवून वर आला.
सूरज कभीसे निकलकर ऊपर आया।
३ वेळेवर येतास तर काय बिघडलें असतें ?
समयपर आता तो क्या नुकसान होता ?
४ आश्चर्य हें कीं ते तर मुळींच आले नाहींत !
आश्चर्य इस बातका है कि वे बिलकुल नहीं आए।
५ निष्कारण वेळ घालविणें इष्ट नाहीं.
नाहक समय गँवाना अच्छा नहीं है।
६ तुम्ही येतां तर त्याहि आल्या असत्या.
तुम आते तो वे भी आतीं।
७ पण काय करावें ? आतां काय इलाज ?
लेकिन क्या किया जाए ? अब क्या इलाज है ?
८ वेळेचें बंधन हें असलेंच पाहिजे.
वक्तकी पाबंदी होनीही चाहिये।
९ ही साधी गोष्ट कळूं नये का ?
क्या यह सादी बात भी नहीं समझते ?
१० जा. आतां खुशाल जा. परत या म्हणजे झालें.
जाइए। आनंदसे पधारिये। मात्र वापिस आइये !
११ माझें मलाच हें उमगलें नाहीं.
स्वयं मुझे भी यह ज्ञात नहीं हुआ।
१२ जो उठतो तो पळतो हें काय ?
क्या बात है ? जो उठता है वह भागता है।

१३ आचारविचाराची कुणालाच जाणीव नाहीं.
रीतिरिवाजकी ओर कोई भी ध्यान नहीं देता।
१४ यामुळें सर्वत्र गोंधळ उडतो.
इस लिये सभी स्थानोंपर गडबडी मच जाती है।
१५ मी तरी काय करणार होतों?
मैं भी तो क्या कर सकता था?
१६ मीहि पण एक माणूसच आहें!
मैं भी तो एक इन्सानही हूँ।
१७ त्याला जर शिक्षण मिळतें तर बरें.
उसे यदि शिक्षा प्राप्त होती तो अच्छा होता।
१८ आशिक्षिताला काय म्हणून शिक्षा?
अनपढको दण्ड किस लिये?
१९ आम्ही बराच प्रयत्न केला पण व्यर्थ.
हमने बहुत कोशिश की पर व्यर्थ?
२० जीवनाचें साधन अद्यापि कुणाला उमगत नाहीं.
जीवनकी साधना अभीतक कोई नहीं जानता।
२१ समजून उमजून कृत्य करावें.
जानबूझकर कार्य करना चाहिये!
२२ नाहीं तर न इकडचे न तिकडचे.
वरना न यहाँके और न वहाँके।
२३ समाधान ही फार मोठी संपत्ति आहे.
समाधान यह बहुत बडा धन है।

बतलाइये

(१) इस पाठ के पुल्लिंगी शब्द बतलाइये।
(२) अव्यय और सर्वनामको चुनचुनकर निकालिये।
(३) सकर्मक और अकर्मक वाक्य बतलाइये।

* * *

३१ : : अनुवाद

१ जोभी हों हम दाम दे देंगे।
जेवढें मूल्य होईल तेवढें आम्ही देऊं (अथवा)
जें होईल तें मूल्य आम्ही देऊं.

२ यदि वह न आता तो शायद मैं न रुक सकता।
जर तो न येता, तर कदाचित् मी थांबलों नसतों.

३ वे गाती और नाचतीभी हैं।
त्या गातात व नाचतातहि.

४ कौन कहेगा कि वे चतुर नहीं हैं?
ते चतुर नाहींत असें कोण म्हणेल?

५ उन्होंने क्या ऊधम मचा रक्खा है?
त्यांनीं किती गोंधळ माजविला आहे?

६ हम भले तो जग भला।
आपण चांगलें तर जग चांगलें.

७ घरेलू झगडे घरमेंही होने चाहिये।
घरगुती भांडणें घरांतच व्हावयास पाहिजेत.

८ उन झगडोंको घरहीमें सँवारना चाहिये।
तीं भांडणें घरांतच मिटविलीं पाहिजेत.

९ मुहब्बत इस शब्दके कितने अर्थ होते हैं?
प्रेम या शब्दाचे किती अर्थ होतात?

१० बच्चेसे बूढेतक अलग अलग अर्थ लगाते हैं।
मुलापासून म्हाताऱ्यापर्यंत वेगवेगळे अर्थ लावतात.

११ मॅट्रिकका व्यवहारके बाजारमें क्या अर्थ है?
मॅट्रिकचा व्यवहाराच्या बाजारांत काय अर्थ आहे?

१२ निकम्मा, अव्यवहारी, बे हिसाबी, भोला।
निरुपयोगी, व्यवहारशून्य, बे हिशेबी, भोळा.

१३ गुरु, खिदमदगार और विद्यार्थी, मालिक बने हैं।
गुरु, सेवक व विद्यार्थी, धनी झाले आहेत.

१४ जरा दुनियाको गौरसे देखिये।
थोडें जगाकडे निरखून पाहा.

१५ खुदा का स्त्रीलिंग खुदी नहीं होता।
खुदाचें स्त्रीलिंग खुदी होत नाहीं.

१६ यह पद्धति मराठीकी है।
ही मराठीची पद्धत आहे.

१७ मेरी वहाँ दाल नहीं गलती।
माझी तेथें डाळ शिजत नाहीं।

१८ दालमें काला है जरूर।
कांहीं तरी पाणी मुरतें आहे निश्चित.

१९ वकीलको वकीलही होना चाहिये।
वकिलाला वकीलच झालें पाहिजे.

२० व्यक्ति और राष्ट्र में बडा कौन ?
व्यक्ति नि राष्ट्र यांत मोठें कोण ?

२१ दोनोंकी योग्यता महान् है।
दोघांची योग्यता मोठी आहे.

२२ इसी प्रकार तत्त्वज्ञान और व्यवहार।
अशाच प्रकारें तत्त्वज्ञान नि व्यवहार.

२३ दूधका जला छाछ फूँककर पीता है।
दुधानें तोंड पोळलें म्हणजे ताक फुंकून पितो.

२४ ऊँची दूकान फीका पकवान।
नांव सोनूबाई हातीं कथलाचा वाळा.

२५ उलटा चोर कोतवालको डाँटे।
चोराच्या उलट्या बोंबा.

२६ गरीबी यह कोई पाप नहीं है।
गरिबी हें कांहीं पाप नव्हे.
२७ मात्र दौलतमंदीभी पुण्य नहीं है।
केवळ श्रीमंतीसुद्धां पुण्य नव्हे.
२८ आदमीकी पहचान किस प्रकार की जाय ?
माणसाला कसें ओळखावें ?
२९ उसकी चाल चलनसे, बर्तावसे।
त्याच्या वागणुकीवरून.

महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ

(१) अनुवादमें मुख्य भाव ज्योंका त्यों रूपांतरित करना चाहिये। यहाँपर लक्षणार्थ या शब्दार्थ काम नहीं देता।

(२) लेखकके भावोंको समझें अनुवादकी भाषामें अंतर न होना चाहिये।

* * *

३२ : : परिच्छेदानुवाद

वाक्यानुवादमें केवल प्रतिशब्दोंकी ओर तथा भाषाके ढंग की ओर देखा जाता है। मात्र परिच्छेदके अनुवादमें भाव, भाषा, ढँग, प्रतिशब्द इन सभी बातोंकी ओर ध्यान देना पडता है। इसलिये स्वभावतः रचनामें अंतर होता है। अभ्यासके लिये प्रत्यक्षमें एक परिच्छेद अनुवादित किया जाता है। जिससे अनायास मराठी और हिंदी भाषाकी विशेषतासे आप अनायास परिचित होंगे। अन्यथा केवल भाषाके अभ्यस्त कहलवाकर निम्न प्रकारकी गलतियाँ होनेका संभव है।

(१) 'चोराच्या मनांत चांदणें'– का अनुवाद चोरके मनमें चांदनी, नहीं है वरना 'चोर की डाढीमें तिनका' है

(२) 'तो उघडा बोडका पळाला' का अनुवाद वह खुले बदन और खुले सिर दौडा की अपेक्षा 'वह नंगे पैर और नंगे सिर दौडा'। उसी प्रकार मराठीमें इसका अनुवाद यह नहीं हो सकेगा कि 'तो नागव्या पायानें व नागव्या डोक्यानें पळाला'।

(३) 'घरोघरीं मातीच्याच चुली' इसका अनुवाद घरघरमें मिट्टीके चूल्हे की अपेक्षा 'घर घर शादी घर घर ग़म' होगा। अर्थात् मराठीमें इसका अनुवाद 'घरोघरीं लग्न व घरोघरीं दुःख' इस प्रकार नहीं बन सकता।

भाव, भाषा और ढंगको अपनानेके लिये निम्न परिच्छेदपर विशेष ध्यान दीजिये।

मराठी परिच्छेद

विमानविद्या प्राप्त झाल्यापासून माणसाला मोठी ऐट वाटूं लागली आहे, आणि पक्ष्यांप्रमाणें वायुमंडळहि जिंकण्याची जाणीव त्याला आतां उत्पन्न झाली आहे. पण ही ऐट मारतांना त्याला लाज वाटावयास हवी. एका एका दमांत पांचपांचशें मैल जाणें हा पराक्रम त्याला आज साधला आहे, आणि पक्षी तर हा पराक्रम जगाच्या आरंभापासून करीत आहेत.

पक्षी व आपण यांतील हें अंतर जोडावयास माणसाला सहज दहा सहस्र वर्षांची किंमत द्यावी लागली आहे. ब्रह्मदेवानें आपल्याला किती मागासलेलें ठेवलें आहे. माणसाची प्रौढी काय ती पाहा; कीं असले पक्षी तो रोज भाजून खातो. पण ही प्रौढी नव्हे, ही रानटी-पणाची स्पष्ट कबुली आहे. सृष्टीची ही सपक्ष प्रजा त्याच्यापेक्षां किती तरी श्रेष्ठ आहे. साधी मासोळीसुद्धां पाण्यांत वाटेल तशी धांवत वेगानें जाते. माणसाला मात्र पोहणें ही 'कला' म्हणून शिकावी लागते; आणि मासोळीसारखें पाण्याच्या पोटांतून जाण्याचा त्यानें थोडाहि हिय्या

केला तर त्याला तडफडून वर यावें लागतें. हें काय देवाच्या लाडाचें लक्षण आहे काय ?

भाव—

इस परिच्छेदमें पंछी और मछलीके साथ मनुष्यकी तुलना करके यह स्पष्ट किया है कि विज्ञानी बननेसे मनुष्य गर्व न करे। मनुष्यका यह गर्व करना उचित नहीं है। और साथ साथ मनुष्यसे पंछी और मछली भगवानकी जियादा लाडली है। क्यों कि मनुष्यसेभी उडनेकी और तैरनेकी कला पंछी और मछलियाँ जमानेसे जानती हैं।

इस भावको परिच्छेदमें स्पष्ट किया है। अर्थात् सबसे पहले हम परिच्छेदके भावको अलग अलग कर लें और उसके बाद एक एक भावके स्पष्टीकरणका अनुवाद अपने ढंगसे करें। जिसमें क्रमकीभी आवश्यकता होती है। क्रम और रचनाका महत्त्व समझनेके हेतु परिच्छेदका ज्यों का त्यों अनुवाद दिया जा रहा है।

हिंदीमें अनुवाद

लोग यह मानते हैं कि मनुष्य जाति भगवानकी वडी लाडली जाति है। परंतु अगर कुछ लक्षणोंको देखा गया तो यह सिद्ध होता है कि इस संसारमें मनुष्योंसे कई गुना अधिक प्रगति, पशु-पंछियोंने की है और वेही मनुष्योंसे अधिक भगवानके लाडले हैं।

हवाईजहाजके ज्ञानसे मनुष्यमें यह अभिमान निर्माण हुआ है कि हमभी पंछियों की तरह आकाशमें उड सकते हैं। 'आकाशके वायुमंडलपर हमने विजय प्राप्त की है' यह कहते हुए मनुष्य जराभी नहीं शरमाता। उसमें यह समझनेकी बुद्धि नहीं है कि एक दममें पाँच पाँच सौ मील उडनेकी जो कला हमने आज प्राप्त की है वह कला दुनियाके प्रारंभसेही पंछियोंने जानी है। अगर हिसाब किताब लगाकरही हम देखेंगे तो हमें यह मानना होगा कि पंछियोंसे दस

हजार वर्ष हम पिछडे हुए हैं। क्या यही भगवानके लाडलेपनका लक्षण है ?

पंछियोंको भुनकर खानेसे तो मनुष्यने अपनी हीन बुद्धिमानीका परिचयही दिया है।

मनुष्योंकी करतूतका और एक प्रमाण लीजिये—

मनुष्य मानता है कि गहरे पानीमें 'मैं चाहे जैसे गोते लगा सकता हूँ' लेकिन अगर मछलियोंकी तरह अथाह पानीमें मनुष्य थोडीभी देर ठहरेगा तो उसे परेशान होकर तुरंत ऊपर आना पडेगा। जिस कारीगरीके बलबूतेपर वह घमंड करता है वह कारीगरी मछलियाँ जन्मसेही जानती हैं। मात्र मनुष्यको यह कारीगरी सीखनी पडती है।

अब आपही बतलाइये कि भगवानके लाडले कौन हैं? मनुष्य, पंछी या मछलियाँ ?

महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ

(१) मूल परिच्छेद ध्यानपूर्वक पढें। (२) अनुवाद, शब्दानुवाद न बने पर वह भावानुवाद बने। (३) वह कृत्रिम जान न पडे। (४) हर भाषाकी प्रकृति भिन्न होती है अतः जिस भाषामें हम अनुवाद करते हैं उस भाषाकी प्रकृतिका खियाल रखें। (५) लंबे चौडे भावोंका प्रदर्शन योग्य कहावतें या मुहावरे द्वारा किया जा सकता है। (६) वाक्य छोटे हों। (७) मराठीमें गौण वाक्य प्रथम आता है तो हिंदीमें प्रधानवाक्य प्रथम आता है। (८) आवश्यक शब्द एकभी न छूटे और अनावश्यक शब्द एकभी न आए। (९) अनुवाद पूर्ण होनेपर उसे फिरसे पढ लेना आवश्यक है। (१०) बडे वाक्योंका छोटे वाक्योंमें विभाजन किया जा सकता है।

* * *

भाषांतरमें भाषांतरित भाषाका ढंग अवश्य अपनाया जाएगा परंतु प्रतिशब्दकी ओर और प्रतिवाक्य या प्रतिपरिच्छेदकी ओर विशेष ध्यान दिया जाएगा। बानगीके तौरपर एक परिच्छेद यहाँ भाषांतरित किया गया है। साथ साथ भाषांतरके लिये एक परिच्छेदभी दिया गया है। उसका भाषांतर करें।

मराठी परिच्छेद

एका नदीच्या कांठीं एक गरीब **कोळी** राहात असे. तो रोज नदींतील मासे पकडून ते बाजारांत **विकत असे**. एके दिवशीं तो नदीवर मासे पकडण्यास गेला. त्यानें आपलें **जाळें** फेकलें व तें ओढलें. पण जाळ्यांत एकहि मासा नव्हता. त्यांत एक सुंदर घागर होती. त्या घागरीचें तोंड चांगल्या रीतीनें **झांकलेलें** होतें. त्या कोळ्यानें विचार केला, " यांत कांहीं तरी मौल्यवान् **असलें पाहिजे**. मी ती उघडून पाहीन " असा विचार करून त्यानें त्या घागरीचें झांकण काढलें. झांकण काढतांच एक भव्य राक्षस त्यांतून बाहेर आला. त्या राक्षसास पाहून कोळी फारच घाबरला.

हिंदीमें भाषांतर

एक नदीके किनारे एक गरीब मछुआ रहता था। वह हररोज नदीमें मछलियाँ पकडकर बाजारमें बेचता था। एक दिन वह नदीपर मछलियाँ पकडनेके लिये गया। उसने अपना जाल नदीमें फैला दिया और वह खींच लिया। पर जालेमें एक भी मछली न थी। उसमें एक सुंदर घडा था। उस घडेका मुँह अच्छी तरहसे ढका हुआ था। वह मछुआ सोचने लगा " इसमें कुछ न कुछ मूल्यवान चीज़ अवश्य होगी। मैं उसे निकालकर देखूँगा। " यह सोचकर उसने उस घडेका ढक्कन खोला। ढक्कन निकालतेही उसमेंसे एक भयंकर शैतान बाहर निकल आया। उस शैतानको देखकर मछुआ घबडाया।

भाषांतरके लिये

इतक्यांत दोन तीन मुलें स्वाक्षरी घेण्याकरितां दिलीपच्या जवळ आलीं. पहिल्या वहींत तो सही करूं लागला होता. पण त्या मुलानें संदेशासाठीं हट्टच धरला. " संदेश द्या नाहीं तर आम्ही सत्याग्रह करूं ", असें तो मुलगा म्हणाला, तेव्हां मला त्याचें मोठें कौतुक वाटलें. दिलीपहि हंसत त्याच्या वहींत कांहीं तरी लिहूं लागला. त्यानें काय लिहिलें तें पाहण्याची विलक्षण इच्छा झाली मला. मीं ती वही त्या मुलाच्या हातांतून जवळ जवळ हिसकावून घेतली. दिलीपचें तें किचकट अक्षर त्या मुलाला लौकर लागलें नसतें पण नाहीं म्हटलें तरी चार वर्षें त्याची शिष्या होतें मी. झर्रकन वाचलें — " सोनें होऊं नका. लोखंड व्हा."

कठिन शब्दार्थ

इतक्यांत—सर्व. सहसा, इतनेमें. स्वाक्षरी—स्त्री. हस्ताक्षर. घेण्याकरितां—क्रि. लेनेके लिये. च्या जवळ—अ. के पास. आलीं—क्रि. नपुं. बहु. आये. सही—स्त्री. दस्तखत. हट्टच धरला—क्रि. हठ करने लगा. द्या—क्रि. आज्ञार्थ. दो, दीजिये. करूं—क्रि. विध्यर्थ. करें, करेंगे. कौतुक वाटलें—क्रि. सराह या, ताज्जुब हुआ. विलक्षण—वि. अटूट. हातांतून—पु. हाथसे. हिसकावून—क्रि. छीनकर. किचकट—वि. बुरा, टेढा, बाँका. लागलें नसतें—क्रि. न पढ सकता था. पण नाहीं म्हटलें तरी—ना कहने-परभी. झर्रकन—वि. तुरंत. सोनें होऊं नका, लोखंड व्हा—सोना मत बनो, लोहा बनो ।

* * *

३४ : : शब्दपूर्ति

(रिक्त स्थानपर शब्दपूर्ति की जाए।)

मी.......चार वाजतां उठतों.........हि उठवितों. आम्ही सर्वजण.........करतों. सहा वाजतां आंघोळ....... ३६ नमस्कार...........शाळेंत जातों. ११.........शाळेंतून येतों. जेवण.......शिकवण्या करतों. दुपारीं मंडईतून......आणतों. प्रत्येक वस्तूचा.......पाहतों. सायंकाळीं......खेळतों. रात्रीं निःशुल्क.......... हेंच .... ईशस्तवन. जेवण..........९ ला झोंपतों. झोंप........लागते. प्रकृति ......व निकोप राहते. अन्न हें जसें अमृत आहे तसेंच......... आहे. कुठलीहि गोष्ट अत्यधिक............नये. अमृतसुद्धां विष ठरतें मग ....काय कथा? सुखाचा.........घ्यावयाचा असेल ....जास्त जगावें. याकरितां..........वर्धिलें पाहिजे. माझा ....याच उद्देशानें..........आहे. मी शिकवितों व......... ज्ञान .... वाढत असतें. ज्ञान .... मिळवावयाचें असतें. ज्ञानाचा उपयोग.........केला पाहिजे. पुस्तकी.......हें निरुपयोगी असतें. ......ज्ञान हें मुख्य आहे. व्यवहार जर न कळला.......... माणूस फसतो. म्हणून आधीं........शिका. मोक्षाचा.......मार्ग आहे.

स्पष्टीकरण

इस पाठके उन सभी शब्दोंका अर्थ दिया हुआ है जिन शब्दोंकी पूर्ति करनी है और जिनकी की गई है। शब्दोंके रूप ज्यों के त्यों दिए गए हैं। इसलिये पर्यायवाची प्रतिशब्दोंमें कुछ फरक हो सकता है।

कठिन शब्दार्थ

शब्द — अर्थ

पूर्ति–स्त्री.–पूर्तता

शब्द — अर्थ

हेंच–सर्व.–यही

पहाटे, सकाळीं–स्त्री.–प्रातः, सुबह
वाजतां–अ.–बजे
उठतों–क्रि.–उठता हूं
भावंडें–संज्ञा.–भाई बहनें
सर्वजण–स.–सभी
आंघोळ–स्त्री.–स्नान, नहलाकर
घालून–अव्यय–डालकर
जातों–क्रि.–जाता हूं
झाल्यावर–अव्यय–होनेके बाद
शिकवणी–स्त्री.–पढाई
मंडईतून–स्त्री.–सब्जी मंडीसे
बाजारहाट–पु.–बाजार
भाव–पु.–भाव
पाहतों–क्रि.–देखता हूं
खेळ–पु.–खेल
शिकवतों–पु.–सिखाता हूं
काय कथा–वि.–क्या कहना, क्या ताकत
उपभोग–पु.–लाभ
असेल–क्रि.–होगा
तर–अ.–तो
जगावें–क्रिया.–जीवित रहें
शरीर–नपुं.–शरीर, जिस्म, बदन
वर्धिले–क्रि.–बढाया
कार्यक्रम–पु.–कार्यक्रम

माझे–सर्व.–मेरा
जेवण–नपुं.–खाना, भोजन
झाल्यावर–क्रि.–होनेके बाद
झोपतों–क्रि.–सोता हूं
गाढ–वि.–गहरा
सुदृढ–वि.–ताकतवर
निकोप–वि.–दोषरहित, सुदृढ
जसे–अ.–जिस प्रकार, जैसे
तसे–अ.–उस प्रकार, तैसे
विषहि–नपुं.–जहरभी
कुठलीहि–वि.–कौनसीभी, कोइभी
गोष्ट–स्त्री.–घटना, कहानी
करूं नये–क्रि.–न करनी चाहिये
मग–अव्यय–फिर
अन्नाची–नपुं.–खानेकी
शिकतों–क्रि. पढता हूं
दिल्यानें–क्रि.–देनेसे
वाढत–क्रि.–बढता
श्रमानें–नपुं.–मिहनतसे
मिळवावयाचें–क्रि.–प्राप्त करना
सतत–अव्यय–हमेशा
याकरितां–सर्व.–इसलिये
कळला–क्रि.–समझा
फसतो–क्रि.–धोखा खाता है
म्हणून–वि.–इसलिये

याच–सर्व.–इसी आधीं–वि.–प्रथम
ठरविला–क्रि.–निश्चित किया हाच–सर्व.–यही

मनोगत

१. क्या आप इस पाठका हिंदी अनुवाद कर सकते हैं?
२. यदि आप चाहें तो आसानीसे इसका अनुवाद करेंगे।
३. क्यों कि इसमें एकभी कठिन शब्द नहीं है।
४. केवल वाक्यरचनाका ढंग बदलना है।
५. शब्दार्थ देखनेके पूर्व शब्दपूर्ति करनेका यत्न करें।

* * *

३५ : : वाक्यपूर्ति

रिक्त स्थानपर शब्द लिखकर वाक्यपूर्ति की जाए।

१ ....पाऊस पडतो. २ उन्हाळ्यांत .... ३ ....थंडी पडते. ४ ....घरटीं करतात. ५ झाडावर वेली................ ६ दौतींत........ ७ (झरणी) फाउंटनपेनमध्यें............ ८ .... वकिली करतो. ९ शेतकऱ्याचा धंदा.......... १० आमचा अन्नदाता .... ११ .... गिरणीमालक आहे. १२ आमची राज्यपद्धति .... १३ .... हें आमचें धोरण आहे. १४ सोन्याचा भाव .... १५ सोन्यापेक्षां चांदी .... १६ रुपें त्याहून .... १७ आमचा मोठा सण .... १८ शिवाजी राजा .... १९ .... दैवत आहे. २० .... उगवतो. २१ सूर्य पश्चिमेस .... २२ .... शीतल असतो. २३ सूर्याचा प्रकाश .... २४ हिमालय हा पर्वतांचा .... २५ आमचें जेवण .... २६ गवयाचा धंदा .... २७ .... वनवासांत होते. २८ सीता

त्यांच्या .... २९ .... बरोबर होते. ३० .... राष्ट्रभाषा आहे. ३१ महात्मा गांधी .... ३२ आमचें राष्ट्रगीत .... ३३ रात्र विश्रांती .... ३४ .... करितां असतो.

कठिन शब्दार्थ

शब्द	लिंग	अर्थ	बहुवचन
पाऊस	पु.	बरसात	....
पडतो	क्रि.	गिरता है, होता है	....
थंडी	स्त्री.	सर्दी	....
घरटें	नपुं.	घोंसला	घरटीं
वेल	स्त्री.	बेला	वेली
दौत	स्त्री.	दवात	दौती
वकिली	स्त्री.	वकालत	....
शेतकरी	पु.	काश्तकार	शेतकरी
धंदा	पु.	व्यापार, धंधा	धंदे
हें	नपुं.	यह	हीं
धोरण	नपुं.	नीति	धोरणें
भाव	पु.	निर्ख, भाव	भाव
च्यापेक्षां	अव्यय	की अपेक्षा	....
त्याहून	सर्व.	उससे	त्यांच्याहून
सण	पु.	त्योहार	सण
दैवत	नपुं.	देवता	दैवतें
उगवतो	क्रि.	निकलता है	उगवतात
हा	सर्व.	यह	हे
जेवण	नपुं.	खाना	जेवणें
बरोबर	अव्यय	साथ, सह	....

अभ्यास

[इस पाठमें जिन शब्दोंसे वाक्यपूर्ति करनी है उन शब्दोंके अर्थ नहीं दिये गये। वे आसान हैं।]

१. वाक्यपूर्तिके बाद इस पाठका हिंदी अनुवाद कीजिये।

२. घोडा तेज दौडता है, कुत्ता ईमानदार होता है आदि १० सामान्य वाक्योंका मराठी अनुवाद कीजिये।

* * *

३६ : : प्रश्नपूर्ति

निम्न प्रश्नोंके उत्तर मराठीमें अधिकसे अधिक विस्तारपूर्वक देनेका यत्न कीजिए।

१ आपका शुभनाम ? २ क्या काम करते हैं आप ?
३ यहाँ क्यों आए ? ४ आपके कार्यालयका विवरण दीजिये।
५ आप किस पक्षके हैं और क्यों ?
६ आजादीके लिये आपने क्या किया है ?
७ आपका महाना खर्च कितना होता है और किसलिये ?
८ आपकी क्या इच्छाएँ हैं और उनकी पूर्तता किस प्रकार कर सकते हैं ?
९ आपको कितने मित्र हैं और वे क्या करते हैं ?
१० आपका दैनिक कार्यक्रम क्या है ?
११ काश्तकारोंकी भलाई किसमें है ?
१२ मजदूरोंका संगठन किस प्रकार करना चाहिए ?
१३ यदि आप मंत्री चुने गए तो क्या सुधार करेंगे ?
१४ भारतको श्रेष्ठ क्यों कहा जाता है ?
१५ नागरिकत्वके क्या नियम हैं ?

१६ आप गद्य पसंद करते हैं या पद्य; और वह क्यों?
१७ बीसवीं सदीमें भारतवर्षके कौन कौन नेता हुए हैं?
१८ किस नेताको और किस तत्त्वज्ञानको आप पसंद करते हैं?
१९ बुढापेमें आप क्या करेंगे?
२० आपके सुपुत्रोंसे आप क्या अपेक्षाएँ रखते हैं?

शब्दसंग्रह

(प्रश्नपूर्तिके पाठमें निम्न शब्दोंका उपयोग अधिक होगा।)

शब्द	लिंग	अर्थ	बहुवचन
संपूर्ण	वि.	पूरा	...
व्यापार	पु.	ब्योपार	...
नोकरी	स्त्री.	नौकरी	नोकऱ्या
विभाग	पु.	खाता, महकमा	...
खाजगी	वि.	खानगी	...
नातेवाईक	पु.	रिश्तेदार	नातेवाईक
दार	नपुं.	दरवाजा	दारें
खोली	स्त्री.	कमरा	खोल्या
शिपायी	पु.	चपरासी, सिपाही	शिपायी
टेबल	नपुं.	टेबल	टेबलें
खुर्ची	स्त्री.	कुरसी	खुर्च्या
ल्हानपण	नपुं.	बचपन	...
आर्थिक	वि.	आर्थिक	...
शारीरिक	वि.	शारीरिक	...
म्हातारा	पु.	बूढा	म्हातारे
धान्य	नपुं.	अनाज	धान्यें
गहूं	पु.	गेहूं	गहूं

ज्वारी	स्त्री.	जवारी	ज्वारी
तांदूळ	पु.	चाँवल	...
डाळ	स्त्री.	दाल	डाळी
हरभरा	पु.	चना	हरभरे
तूर	स्त्री.	तुव्वर	तुरी
मूग	पु.	मूँग	मूग
लुगडें	नपुं.	साडी	लुगडीं
तोंड	नपुं.	मुँह	तोंडें
छाती	स्त्री.	सीना	छात्या
डोकें ..	नपुं.	सर	डोकीं
पोट ...	नपुं.	पेट	पोटें
आपसांत	सर्व.	आपसमें, परस्पर	...
सुधारणा	स्त्री.	सुधार	...
कर ...	पु.	कर, लगान, महसूल	कर

(महत्त्वाकांक्षा, इच्छा आदि संस्कृत शब्द ज्यों के त्यों मराठीमें भी होते हैं। आकारान्त स्त्रीलिंगी शब्दोंका बहुवचनी रूप वही रहता है।)

अभ्यास

१. अपना परिचय मराठीमें १५ वाक्योंमें करा दीजिये।

२. शब्दपूर्तिका एकाध पाठ स्वयं लिखिये।

३. पक्षी, घरकी वस्तुएं, पाठशालाका सामान, बाजारका साहित्य इनमेंसे दस दस मराठी शब्द लिखिये।

४. हिंदीमें स्पष्टीकरण कीजिये।

लौकर निजे लौकर उठे तया ज्ञान, संपत्ति, आरोग्य भेटें.

५. मराठीमें आज्ञार्थके और प्रश्नार्थके पाँच पाँच वाक्य लिखिये।

* * *

३७ : : वाक्प्रचार

कहावतें और मुहावरे ये भाषाके बहुत बडे और सर्वांगसुंदर अलंकार हैं। दुर्दैवसे शहरी भाषासे इन्हें निकाल दिया जा रहा है। परंतु ग्रामीण भाषामें अभीतक ये संचित हैं। यहाँ हमने कुछ वाक्प्रचार दिये हैं। सभी तो नहीं दे सकते। मराठीमें इतने मुहावरे और कहावतें हैं कि इनकी एक बढिया पुस्तक बन सकती है। व्यावहारिक मुहावरोंकी वानगी मात्र यहाँ दी जा रही है।

कृपया इन मुहावरोंका उपयोग किया करें। जिससे आपकी भाषा बहुत जल्द सुधर जाएगी।

आँख मारना, आँखें बिछाना, इस प्रकार आँखके संबंधी कई वाक्प्रचार हो सकते हैं। वाक्प्रचारोंके पर्याय देना असंभव तथा अशुद्ध होनेका संभव होता है। इसलिये वाक्प्रचारोंके प्रयुक्त भावार्थ देनाही सर्वथा उपयुक्त होता है।

एकही शब्दके कई पर्याय हो सकते हैं। उदाहरणार्थ, दिया। परंतु इन सभी प्रकारोंको दिया कहनेपर मतलब समझनेमें कठिनाई होती है। लालटेन, बत्ती, इलेक्ट्रिक दिया आदि दियाके प्रकार हैं। इस छोटीसी पुस्तकमें सभी मराठी शब्द और उनके पर्याय किस प्रकार आ सकते हैं? आपको केवल मराठीका परिचय कराना है। मराठीका संबंध जितना आप बढाएँगे उतनी वह भाषा आपके नजदीक आयेगी।

मराठी	हिंदी
आंघोळ करणें	मुक्त होना
अंजन घालणें	आँखें खोलना
डोळे उघडणें	आँखें खुलना
अभिमान बाळगणें	गर्व करना
आवळून धरणें	कसकर पकडना

मराठी	हिंदी
आड लपणें	आडमें होना
अवदसा आठवणें	आफत मोल लेना
आटोपणें	सँवारना, खतम होना
आंगठा दाखविणें	अंगूठा दिखाना
अश्रु पुसणें	आँसू पोछना
उडी मारणें	छलांग मारना
उजाडणें	वीरान होना, दिन निकलना
उपरणें झटकणें	अलग होना, संबंध तोडना
उपकार फेडणें	उपकारकी पूर्ति करना
ऊर बडविणें	छाती पीटना
ओवाळून टाकणें	न्योछावर करना
कुलूप घालणें	ताला पडना
कणिक तिंबणें	मरम्मत करना
गहिंवरून येणें	दिल भर आना
गर्व बाळगणें	घमंड करना
गणित करणें	हिसाब लगाना
खोड मोडणें	हड्डी नरम करना
खून चढणें	खून सँवार होना
घर करणें	गृहस्थी जमाना
घर मोडणें	गृहस्थी तोडना
घाम गाळणें	ज्यादा कष्ट करना, खून बहाना
घर भरणें	घर सँवारना
घर सोडणें	मकानसे रिहा होना
घुटमळणें	घिरा रहना
चढणें	चढना

मराठी	हिंदी
टांग मारणें	धोखा देना
टोपल्या टाकणें	व्यर्थ बोझ ढोना
टोंचून बोलणें	ताने मारना, कोसना
डोक्यावर घेणें	सिरपर लेना
डोकें वर काढणें	सिर ऊपर उठाना
डोळ्यांत भरणें	आँखोंमें समाना
तुळशीपत्र ठेवणें	(लाचारीसे) त्यागना
तूं मी करणें	तू तू मैं मैं करना
तीर गांठणें	पार लगना
ताव मारणें	हात साफ करना
दम भरणें, देणें	डाँटना
दांतीं तृण धरणें	लाचार होना
दबा धरणें	ताकमें रहना
दवडणें	गँवाना
धाबें दणाणणें	घबराना
धीर देणें	धीरज बंधाना
धाक घालणें	डराना
धुव्वा उडविणें	चौपट करना
धैर्य खचणें	हतोत्साह होना
नांवें ठेवणें	नाम रखना
नांव मिळविणें	नाम कमाना
नाक घासणें	नाक रगडना
नमस्कार घालणें	हाथ जोडना
न्याहाळून पाहणें	घूरकर देखना
पंख फुटणें	पर निकल आना

मराठी	हिंदी
पापण्या टाकणें	पलकें बिछाना
पांचावर धारण बसणें	मुँह कलेजमें आना
पडदा टाकणें	परदा डालना
पाठपुरावा करणें	पीछे पडना, पीछा करना
पाठ दाखविणें	चंपत होना
परवा करणें	परवाह करना
पाय घसरणें	पैर फिसलना
फडकणें	टपकना, फहरना
फिरकणें	फटकना
बडबड करणें	बकना
बोटें मोडणें	जलना
बुड्या मारणें	गोते लगाना
बाऊ करणें	महत्त्व बढाना
मात करणें	कमाल दिखाना
मेटाकुटीला येणें	ऊब जाना, लाचार बनाना
रंगून जाणें	मग्न होना
लगाम घालणें	बंधन लगाना
लपंडाव खेळणें	आँखमिचौली खेलना
वर काढणें	ऊपर उठाना
वाकडें जाणें	टेढा चलना
वाद घालणें	झगडा मचाना
वाहणें	ढोना
वितंडवाद घालणें	नाहक झगडा मचाना
पाऊल वाकडें पडणें	बदचलनकी ओर झुकना
वेसण टोंचणें	सीधे करना

मराठी	हिंदी
पैज मारणें	शर्थ लगाना
शर्थ करणें	कमाल करना
शिव्या मोजणें	गालियाँ बधारना
शिव्या हसडणें	गालियाँ बख्शना
शंभर वर्षे भरणें	घडा भर आना
शिकार करणें	शिकार पाना
शोध लावणें	तलाश करना
सूड उगविणें	बदला लेना
संधि देणें	मौका देना
स्वप्नांत रंगणें	सपनेमें मग्न होना
संशय फेडणें	आशंका दूर करना
सावध करणें	सचेत करना
सारवासारव करणें	निपटना
हद्द ओलांडणें	सीमा पार करना
हो ना करणें	आनाकानी करना
होकार देणें	हाँ भरना
हात देणें	सहायता पहुँचाना
हात मारणें	हाथों सँवारना
हूं का चूं न करणें	चूँ तक न करना
हंबरडा फोडणें	चिल्ला उठना
होयबा करणें	सिर हिलाना
हांजी हांजी करणें	कदम बोसी करना

अभ्यास

१. उत्तर दीजियेः—१. अकारान्त स्त्रीलिंगी संज्ञाओंका बहुवचन किस प्रकार होता है ? २. ऊकारान्त नपुंसकलिंगी संज्ञाओंका बहुवचन कैसा होता

है। ३. मराठीके किन किन शब्दोंपर अनुस्वार होते हैं। ४. संज्ञा, कारक, क्रियाको मराठीमें क्या कहते हैं। इसकी व्याख्यायें समझाइए। ५. सकर्मक और अकर्मक क्रियाके दो दो मराठी उदाहरण दीजिये।

२. निम्न वाक्प्रचारोंके अर्थ और मतलब हिंदीमें समझाइये:—

१ गर्व बाळगणें, २ दवडणें, ३ हूं का चूं न करणें, ४ हात देणें, ५ रजा घेणें, ६ घाम गाळणें, ७ ऊर बडविणें, ८ रंगून जाणें, ९ घर भरणें, १० धाक घालणें, ११ धाबे दणाणणें, १२ पंख उपटणें, १३ उडी मारणें, १४ धीर देणें, १५ कुलूप लावणें.

* * *

३८ : : ब्रह्मा विष्णु

भारतवर्षांतील मुख्य धंदा कोणता? एवढ्या मोठ्या देशाचा धनी कोण? आपला देश सुखी व्हावा म्हणून कोण राबतो! रक्ताचें पाणी करण्यास कोण धजतो? रात्रंदिवस श्रम कोण करतो? कणाकणानें कोण झिजतो? ऊन, पाऊस, थंडीची कोण पर्वा करीत नाहीं? भूकेला तहानेला कोण जुमानीत नाहीं? मातीचें सोनें कोण करतो?

शेतकरी, शेतकरी, शेतकरी हाच आमचा विष्णु. हेंच आमचें भूषण. जसे ते आमच्याकरितां कष्ट करतात, तसें आम्हीहि त्यांच्याकरितां झिजलें पाहिजे. आमचा शेतकरी आतां अडाणी नाहीं, तो शिकत आहे, सामुदायिक शेती करीत आहे; आपसांतील मतभेद विसरत आहे; आळस त्याला शिवत नाहीं; मत्सर त्याच्याजवळ उभा राहात नाहीं; शेतकऱ्याची शेती हा राष्ट्रमंत्र तो जपीत आहे. शेतकऱ्यांचा जय होवो!

भारतांत सौंदर्य निर्माण कोण करतो! शोभा कोण आणतो? दगडाचा देव कोण करतो? सुंदर वस्त्र, सुंदर दागिने, सुंदर अन्न,

सुंदर वस्तु, सुंदर शस्त्र कोण बनवितो? कारागीर, मजूर, हमाल, नोकर. हेच खरे ब्रह्मदेव, जगनिर्माते. शेतकरी जर नसते तर आम्ही अन्नपाण्यावांचून मेलों असतों. मजूर जर नसते तर जगाला जगपण आलें नसतें.

कठिन शब्दार्थ

शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
एवढ्या–अव्य. इतने	ऊन–नपुं. धूप, गरमी
धनी–पु. मालिक	पर्वा–स्त्री. परवाह
व्हावा–क्रि. हो	भूक–स्त्री. भूख
म्हणून–अव्य. इसलिये	तहान–स्त्री. प्यास
राबतो–क्रि. मेहनत करता है	जुमानणें–क्रि. मानना, परवाह करना
धजतो–क्रि. साहस करता है	माती–स्त्री. मिट्टी
कणाकणानें–पु. कणशः	हाच–सर्व. यही
झिजतो–क्रि पीसा जाता है	हेंच–सर्व. यही
जसें–वि. जैसे, जिस प्रकार	भरतो–क्रि. भरता है
तसें–वि. वैसे, उस प्रकार	दागिने–पु. गहने
अडाणी–वि. गँवार	बनवितो–क्रि. बनाता है
विसरत–क्रि. भूलता	जर–अव्य. यदि
आळस–पु. सुस्ती	तर–अव्य. तरी
शिवत–क्रि. स्पर्श करता	वांचून–अव्य. सिवा
जवळ–अव्य. पास, नजदीक	मरते–क्रि. मृत्यु होती है
उभा–वि. खडा	जगपण–नपुं. संसारत्व
जपणें–क्रि. जपना, गिनना	आले नसते–क्रि. न आता

* * *

३९ : : गद्य आणि पद्य

सुधारणेचा परिणाम सर्वांवरच होतो. मग साहित्य त्यांतून कसें सुटेल? साहित्यिकांवर ज्ञात अज्ञात घडामोडींचा परिणाम होत असतो. अनुभवाचे बोल शब्दरूपानें तो इतरांना ऐकवितो. साहित्यिक ज्ञानी असावा, उथळ असूं नये; म्हणजेच साहित्य शुद्ध राहतें. गढूळ झालें कीं त्यांतील वैशिष्ट्य जातें. हिंदींत साहित्याचे जेवढे प्रकार आहेत तेवढेच प्रकार मराठींतहि आहेत. गद्यांतील नाट्य-विभाग चांगला आहे. उर्दूत शृंगार व वीररस आहे. हिंदींत भक्ति रस ओतप्रोत भरला आहे. प्रेमरस, मत्सररस या रसांनीं आतां साहित्य वेष्टिलें आहे. सर्वच भाषांतून पद्य कमी होऊं लागलें आहे अन् गद्य पुढें सरकत आहे. गद्य नि पद्य यांचें अंतर कमी होऊं लागलें. गद्यहि पद्यासारखें लिहिलें जातें आणि पद्य गद्यासारखें. ही साहित्यिक सुधारणा आहे. कथांनीं साहित्य व्यापिलें आहे; कादंबऱ्या कमी होऊं लागल्या आहेत. खंडकाव्य जात चाललें आहे, स्फुट काव्य पुढें येत आहे. मराठी साहित्य-परिषद् ही एक संस्था आहे. मराठीच्या परीक्षाहि होतात. मराठी व हिंदींत भाषा-विषयक साम्य आहे. कारण दोन्ही भाषा संस्कृतोत्पन्न आहेत. व्याकरणांत मात्र फरक आहे. मराठी ३ कोटि लोकांची मातृभाषा आहे.

कठिन शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
आणि, नि, अन्—	अव्य.—और
परिणाम—	पु.—असर
मग—	अव्य.—फिर
बोल—	पु.—भाषा, कहना
ऐकवितो—	क्रि.—सुनाता है
सुटेल—	क्रि.—मुक्त होगा
घडामोडी—	स्त्री.—घटनाएँ
अनुभव—	पु.—अनुभूति
आता—	अ.—अब
वेष्टिलें—	क्रि.—घेरा

इतरांना–सर्व.–दूसरोंको
असावा–क्रि.–हो, होना चाहिए
उथळ–अव्य.–ओछा
असूं नये–क्रि.–न हो
म्हणजे–अव्य.–अर्थात्, याने
गढूळ–वि.–मैला, गंदा
त्यांतील–स.–उसका
जेवढें–अव्य.–जितने
तेवढेंच–वि.–उतनेही
ओतप्रोत–वि.–आकंठ
भरला–क्रि.–भरा हुआ
होऊं लागलें–क्रि.–होते रहे
पुढें–अव्य.–आगे, सामने
सरकत–क्रि.–बढता
सारखें–वि.–सरीखे, अनुसार
लघुकथा–स्त्री.–कहानी
व्यापिले–कि.–घेर लिया
कादंबऱ्या–स्त्री.–उपन्यास
जात–क्रि.–जाता
येत–क्रि.–आता
होतात–क्रि.–होते हैं, रहते हैं

* * *

४० : : म्हातारी

होती चपळ, फारच धीट ।
  तडफेची ती, बोलही अवीट ॥ १ ॥
म्हातारीच ती, अनुभवाची रास ।
  मायेची पाखर, दुःखाचें निरसन ॥ २ ॥
होती ती शांत, धैर्यशीलही तशी ।
  ज्ञानाची खाण, पिकलेलें पान ॥ ३ ॥
कष्टाची मूर्ति, शौर्याची स्फूर्ति ।
  वंशाची वेल, दुःखाची ताल ॥ ४ ॥
किती गुणाची, किती दयेची ।
  पाझर सांची, व्यर्थ फुकाची ॥ ५ ॥

तरुणांच्या तालावरती, लहरींवरती, नाचावरती ।
कशी फिरेल, कशी घुमेल; म्हातारीच ती, म्हातारी ॥ ६ ॥
अडगळीस कारण ठरली, प्रेमाची अडगळ ठरली ।
खर्चाला निमित्त ठरली, जागेला भारी ठरली ॥ ७ ॥
पुत्राच्या अमदानींत, सुनबाईच्या राज्यांत ।
नातवांच्या संगतींत, म्हातारी झाली परस्थ ॥ ८ ॥

कठिन शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
म्हातारी–स्त्री.–	बुढिया
होती–क्रि.–	थी
चपळ–वि.–	चपल, फुरतेली
फारच–अव्य.–	बहुतही
धीट–वि.–	निडर
तडफ–वि.–	फुरती
बोल–पु.–	भाषण
अवीट–वि.–	जिससे जी नहीं उबता
रास–नपुं.–	ढेर, राशी
माया–स्त्री.–	मामता
पाखर–स्त्री.–	छाया
निरसन–नपुं.–	दूर करना
पण–अव्य.–	भी, परंतु
कशी–वि.–	किस प्रकार
फिरेल–क्रि.	घूमेगी
घुमेल–,,	घूमेगी
खाण–स्त्री.–	कान
पिकलेलें पान–नपुं.–	पका हुआ पत्ता
कष्ट–नपुं.–	श्रम, मेहनत
शौर्याची–वि.–	शूरताकी
वेल–स्त्री.–	बेला
ताल–स्त्री.–	बंधारा
किती–अव्य.–	कितनी
गुण–पु.–	सद्गुण
पाझर–पु.–	झरना
सांची–वि.–	सच्ची
फुकाची–वि.–	मुफ्तकी
तालावरती–पु.–	नादपर
लहरीवर–स्त्री.–	इच्छानुसार
नाचावर–पु.	नृत्यपर
अमदानींत–स्त्री.–	समयमें
सून–स्त्री.–	बहू.
नातू–पु.–	पोता

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अडगळ–स्त्री.–निकम्मी वस्तु		संगत–स्त्री.–साहचर्य	
ठरली–क्रि.–बन चुकी		परस्थ–वि.–अलग परायी	
भारी–वि.–बोझ			

अभ्यास

१. ' म्हातारी ' पद्यको आसान मराठीमें समझाइये।

२. यदि बन सके तो ' म्हातारी 'का अनुवाद कीजिये।

३. अडगळ, म्हातारी, विरजण इन शब्दोंके भावार्थ समझाइये।

४. गद्य और पद्यमें किस प्रकार सुधार हो रहे हैं? क्या आपको ये सुधार संमत है?

५. हिंदी पद्यरचना जो गद्यके अनुसार है आपको कहाँ तक भीती है? साधार समझाइये।

* * *

४१ : : हिंदी व मराठी

दोन्ही भाषांचें मातृस्थान संस्कृत आहे. दोन्ही भाषांची लिपी नागरी आहे. भाषांची पद्धति, रचना सारखीच आहे.

पारिभाषिक व. इतर अनेक शब्द संस्कृतमधूनहि घेतले जातात. हिंदी ही राष्ट्रभाषा आहे. मराठी प्रांतिक भाषा आहे.

भारतांतील तेलगु, कानडी, गुजराथी आदि भाषा नागरी लिपींत लिहिल्या तर सर्वांना कळतील.

कारण सर्वच भाषा संस्कृतोद्भव आहेत. सर्वच भाषा बहिणी-बहिणी आहेत. हिंदी भाषा ही थोरली भगिनी आहे. बहीण, बहिणीचें अहित चिंतीत नसते. भाषा निर्मितां येत नसते, ती स्वयंप्रवाहित असते, जगासारखें भाषांचेंहि स्वरूप पालटत असतें. भाषांचें जुनें रूप अवघड आहे.

पण तें अर्थपूर्ण व रसपूर्ण आहे. नवीन रूप सोपें वाटतें, परंतु उथळ आहे. सत्यं, शिवं, सुंदर हें भाषांचेंहि रूप असावें. भाषा क्लिष्ट कधींच असूं नये. साधी, सरळ व अर्थपूर्ण असावी. सर्व भाषांना हेच नियम लागू आहेत.

शब्दांचें रूप प्राकृत असावें. मराठींत शेंकडा दहा परकीय शब्द हिंदी आहेत.

उर्दूमध्यें परकीय शब्द सर्व भाषांपेक्षां कमी आहेत.

भाषा सध्यां पुष्ट होऊं लागली आहे.

कठिन शब्दार्थ

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
व–	अव्य.	और, व	जुने–	वि.	पुराना
दोन्ही–	वि.	दोनों	अवघड–	वि.	कठिण
भाषांचें–	स्त्री.	भाषाओंके	सोपें–	वि.	सरल, आसान
संभार–	पु.	बोझ, संचय	वाटतें–	क्रि.	प्रतीत होता
मधून–	अव्य.	बीचमेंसे	उथळ–	वि.	ऊपरी
कळतील–	क्रि.	समझेंगे	आढळणार–	क्रि.	नजर आएगा
चिंतील–	क्रि.	सोचेगी	शेकडा–	पु.	प्रतिशत
पालटत–	क्रि.	हेरफेर होता.			

* * *

मराठीमें अनुवाद कीजिये—

मराठीमें उच्चारण स्पष्ट होते हैं। मराठी भाषीय, अन्य भाषाएँ बहुत आसानीसे सीखते हैं। वैदिक, पौराणिक और प्राकृत ये भाषाके कालखंड हैं। प्राकृतमें संत ज्ञानेश्वरजीकी भाषा संत तुलसीदासजीके अनुसार है।

रामदास, चिपळूणकर, आगरकर, केळकर, लोकमान्य तिलक, हरी नारायण आपटे आदि मराठीके महान् परंतु आधुनिक स्वर्गीय लेखक हैं। अत्रे, फडके, खांडेकर, आपटे, जोशी, सावरकर, माडखोल-कर आदि विद्यमान मशहूर लेखक हैं।

स्वर्गीय केळकरजीको साहित्यसम्राटकी उपाधी दी गयी है। साहित्य-विषयक सभी क्षेत्रपर उनका सम्पूर्ण अधिकार था। लघुकथा, नाटक, उपन्यास, काव्य, आलोचना, तत्त्वज्ञान आदि सभी प्रकार मराठी साहित्यमेंभी पाए जाते हैं। दर्शनशास्त्रपरभी बहुत कुछ लिखा हुआ है। सभी विभाग समृद्ध हैं। नाटक और नाट्यछटाएँ बहुत यशस्वी साबित हुई हैं।

मराठी भाषी अन्य भाषाओंमें कम लिखते हैं। हिंदीमें बहुत ही कम लिखते हैं। जिन महाराष्ट्रियोंने अपना क्षेत्र हिंदी निर्धारित किया है वे मराठी कम लिखते हैं। संमेलनके सभापति तीन बार महाराष्ट्रीय हो चुके हैं। यह प्रांतिक अभिमान नहीं परंतु भूषण है। मराठी साहित्य विपुल और रोचक है।

कठिन शब्दार्थ

शब्द		अर्थ
बिलकुल	अ.	मुळींच
ठीक	वि.	अचुक

इसीलिये	अव्य.	याचकरितां
आसानीसे	वि.	लीलेनें, सहज
अनुसार	अव्य.	प्रमाणें
आदि	अव्य.	इत्यादि
मशहूर	वि.	प्रसिद्ध, महशूर
दी	क्रिया.	दिली
गयी	क्रिया.	गेली
सभी	वि.	सर्वच
उसी प्रकार	अव्य.	त्याचप्रमाणें
उपन्यास	स्त्री.	कादंबरी
आलोचना	स्त्री.	टीका
पाये जाते हैं	क्रिया.	आढळतात
साबित	वि.	सिद्ध
हुई हैं	क्रिया.	झाल्या आहेत
जिन	सर्व.	ज्या
किया है	क्रिया.	केलें
मरतबा	स्त्री.	वेळीं
हो चुके	क्रिया.	झाले

* * *

४३ : : खरा न्याय

(विश्लेषणात्मक पाठ)

गांवच्या कडेची लहानशी झोपडी ती. काय असणार त्या झोपडींत! एकतारीच काय ती धड होती. नाहीं म्हणावयास दोन माणसें रात्रीं तेथें झोपत. परंतु दुःखानें तीं अर्धीं अधिक खंगलीं होतीं. पैकीं एक अर्धवेडाच होता.

यांच्या दारिद्र्याचें, दुःखाचें, वेडाचें निदान करण्याची समाजाला गरज कुठून भासणार ! अशीं अनेक गुणवान, कर्तृत्ववान माणसें व कुटुंबें समाजानें नष्ट केलीं होतीं.

शिवाय 'चांगले धडधाकट, भीक कां मागतां ?' हा समाजाचा प्रश्न या नवराबायकोच्या समोर होताच.

आणि हा प्रश्न सोडवीत 'भीक मागणें' हाच एक व्यवसाय यांच्या पदरीं पडला. हरिकीर्तन करून जें मिळेल त्यावर हीं निरुपद्रवी माणसें जीवन जगत होतीं; पण हें जीवनहि समाजाला नको होतें.

शेंड्यांच्याच घरीं आश्रित म्हणून राहिलेला गृहस्थ आतां त्या जिल्ह्याचा अधिकारी म्हणून आला होता. रस्त्यावरून सकाळीं ४ ते ६ देवाचें भजन गात फिरत असलेल्या त्या जोडप्याचा, शेंडे पतिपत्नींचा आवाज त्यांनीं ओळखला, खात्री करून घेतली; पण करणार काय ! हा श्रीमंत अधिकारी होता. गरिबाशीं कसा बोलेल ! समाजाचे निर्बंध होते ना त्याच्या भोंवतीं ?

शेंड्यांच्या अन्नानें मात्र देशपांडेला स्वस्थ बसूं दिलें नाहीं. शेवटीं मागील सर्व रेकॉर्ड चाळून त्यांनीं शेंडे यांची दप्तरी हकीकत शोधली. सरकारी कागदपत्रांवरून देशपांड्यांची अशी खात्री झाली कीं, समाज, श्रीमंत व सरकारी अधिकारी या सर्वांनीं शेंडे कुटुंबाला नष्ट केलें आहे.

आपल्या बायकोद्वारां शेंडे यांचें अधिकारपत्र घेऊन देशपांडेच्या कोर्टांत पुन्हा शेंड्यांचा दावा दाखल झाला. देशपांडे यांनीं कायदेशीर छाननी केलीच; परंतु शेंडे यांचें सर्वस्व नष्ट होण्याचीं अन्य कारणेंहि त्यांनीं शोधलीं. खालील कारणें त्यांच्या नजरेस पडलीं.

(१) शेंडे भोळे होते. त्यांच्याकडून लबाडांनीं पैशाच्या जोरावर, वकिलाकरवीं त्यांच्या अज्ञानाचा फायदा घेऊन कागदपत्रांवर सह्या मिळविल्या.

(२) मजूर, स्वैंपाकी, नोकर यांनींहि शेंडे यांच्या भोळ्या व गरीब स्वभावाचा फायदा घेतला. अनेक चोऱ्या केल्या.

(३) नातेवाईक शेंड्यांच्या श्रीमंतीचा पाहुणचार घ्यावयास चुकले नाहींत.

(४) देशभक्तांनींहि शेंड्यांकडून भरपूर देणग्या मिळविल्या.

(५) भटा-भिक्षुकांनींहि श्राद्धपक्षावर शेंड्यांकडून बराच पैसा उकळला.

(६) वकिलांनींहि आपलीं घरें भरलीं.

(७) दुकानदारांनींहि हात धुवून घेतले.

(८) प्रत्यक्ष मुलांबाळांनींहि अजाणपणामुळें कां होईना, शेंड्यांच्या खर्चांत भर घातली.

शेंडे जगांतून उठले होते. तरीपण देशपांडे यांनीं त्यांना पुन्हा जीवन दिलें.

शेंड्यांच्या सत्प्रवृत्तीचा लाभ आज सर्व शहर घेत आहे. देशपांडे तर रामशास्त्रीपेक्षां न्यायनिष्ठुर ठरले.

कठिन शब्दार्थ

शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
कड घेणें-स्त्री.-तरफदारी करना	धडधाकट-वि.-सुदृढ, सशक्त
काय-स.-क्या	मागतां-क्रि.-माँगते हो
असणार-क्रि.-होगा	भीक-स्त्री.-भीख
त्या-स.-उस	हाच-स.-यही
धड-वि.-बगैर फटा हुआ	पदरीं-पु.-आँचलमें गोदमें
नाहीं म्हणावयास-ना कहनेपर	पडला-क्रि.-गिर गया
झोपत-क्रि.-सोते थे	त्यांवर-स.-उसपर
खंगली-क्रि.-कमजोर हुई	नको होतें-क्रि.-न चाहिये था
पैकीं-अव्य.-जिसमेंसे	ओळखला-क्रि.-पहचाना
कां-वि.-क्यों	गरज-स्त्री.-जरूरत

कुठून–वि.–कहाँसे
कसा–स.–किस तरह
बसूं–क्रि.–बैठें
मागील–वि.–गत, पीछेका
शोधली–क्रि.–तलाश किया
छाननी–क्रि.–छान
सह्या–स्त्री.–स्वाक्षरियाँ
पाहुणचार–पु.–मेहमान नवाजी
भरपूर–वि.–काफी
भटाभिक्षुकांनीं–पु.–पण्डोंने
घरें भरलीं–क्रि.–घर उभारे
हात धुतले–क्रि.–अपना उल्लू सीधा किया
अजाणपण–नपुं.–अज्ञान अवस्था
जगांतून उठले–संसारसे हाथ धो बैठे
न्यायनिष्ठुर–वि.–न्यायाग्रही
खात्री–स्त्री.–विश्वास
बोलेल–क्रि.–बातचीत करेगा
शेवटीं–वि.–आखिरकार
चाळून–क्रि.–छानकर
घेऊन–क्रि. वि.–लेकर, प्राप्तकर
भोळे–वि.–भोले
स्वैंपाकी–पु.–रसोइया
चुकले–क्रि.–गलती की
देणग्या–स्त्री.–देनें (देन)
उकळला–क्रि.–वसूल किया, कमाया
भर घातली–बढाया

* * *

४४ : : लिपि सुधार

" स्थिर और आस्थिर ये वस्तुके दो प्रकार हैं। स्थिर वस्तुमेंभी प्रायः फरक होता है। इसीलिये सन्सारको चन्चल कहा है। घमण्ड, गर्व आदि विकार भी स्वाभाविक हैं। ध्रुव भगवत् भक्त थे। भक्ति नौ प्रकारकी है। श्रवण भक्ति यह एक भाक्तिका प्रकार है। जो निद्रा लेता है वही जाग्रत रहता है। प्राचार्य विद्यापीठके कुलगुरु हैं। विद्यार्थी, विद्यार्जन करते हैं। पण्डिताईपर धब्बा लग गया। मित्रत्व, शत्रुता नहीं सिखाता प्रश्नपत्र आसान थे। परीक्षाएँ हो

चुकी हैं। मृत्यु किसे छोडती है। जन्मके बाद मृत्यु आतीही है। भारतवर्ष राष्ट्र है। गृहविभाग ठीक होना चाहिये।"

संयुक्ताक्षरोंकी यह पद्धति अब प्रचलित होती जा रही है। रुचि या आदत न होनेके कारण पढाईमें कुछ दिन संभ्रम जरूर निर्माण होगा। मात्र आदत्त होनेके बाद पढनेमें तथा लिखनेमें आसानी होगी। कंपोजके लिये यह पद्धति बडी आसान है। संयुक्ताक्षरोंके सभी अक्षर उपयुक्त हैं या नहीं यह मैं नहीं कह सकता। मात्र इन अक्षरोंमें कुछ अक्षर अवश्य सुविधाजनक हैं। उच्चारणकी दृष्टीसे यह पद्धति निःसंदेह उपयुक्त है। प्रयत्न कीजिए। आदत हो जाएगी।

संयुक्ताक्षरका नया ढंग

पुराना	नया	मराठी अर्थ
प्रायः	प्रायः	बहुतकरून
चंचल	चन्चल	चंचल
घमंड	घमण्ड	गर्व
गर्व	गर्‌व	अभिमान
ध्रुव	ध्रुव	...
भक्त	भक्‌त	...
श्रवण	श्‌रवण	ऐकणें
निद्रा	निद्‌रा	झोप
जागृत	जागरत	जागेंपण
प्राचार्य	प्राचार्‌य	...
विद्यार्जन	विद्‌यार्‌जन	...
विद्यापीठ	विद्‌यापीठ	...
मित्रत्व	मित्‌रत्व	मैत्री
प्रश्न	प्रश्‌न	...
राष्ट्र	राष्‌ट्र	...
ईश्वर	ईश्‌वर	....

* * *

४५ : : जुनें काव्य

एथ वडील जें जें करिती, तया नाम धर्मू ठेविती।
तेंच येर अनुष्ठिती, सामान्य सकळ ॥ —संत ज्ञानेश्वर

अर्थः—बडे आदमी जो कुछ करते हैं वही धर्म है। सर्वसाधारण लोग इन्हीं बडे लोगोंका अनुकरण करते हैं।

पाइक तो प्रजा, राखोनिया कुळ।
पाराखिया सूळ, छेदी दुष्टां॥
तो एक पाइक, पाइकां नाइक।
भाव सकळीक, स्वामीकाजीं ॥१॥–संत तुकाराम

अर्थः—सेवक वेही होते हैं जो संसारके मूल सिद्धान्तोंको जानते हैं और उसपर स्वयं बर्ताव करते हैं। जो दुष्टोंका नाश करते हैं, और सभी लोगोंके प्रति सेवाभावसे देखते हैं वेही सेवक कहे जाते हैं।

लोक पारखून सांडावे, राजकारणें अभिमान झाडावे।
पुन्हा मेळवून घ्यावे, दुरील दोरे ॥ १ ॥ —समर्थ रामदास

अर्थः—लोगोंकी परख करनी चाहिये। उन्हें राजनैतिक पाठ पढाने चाहिये। जो वादविवाद के कारण दूर हट गए हैं, उन्हें फिरसे अपने क्षेत्रमें एकत्रित करना चाहिये।

ज्ञानेश्वर, तुकाराम और रामदास ये महान् संतकवि हुए हैं। इनके कविताकी बानगी मात्र यहाँ दी गयी है। ज्ञानेश्वरका काव्य मराठी भाषाभाषी भी ठीक तरह नहीं समझ सकते। तुकाराम भक्तिमार्ग के आग्रही थे। रामदास राज्यशास्त्रज्ञ थे।

इनके बाद मराठीके: कई कवि हुए हैं। जिनमें मोरोपंत विख्यात हैं। गद्यके अनुसारही आजकल पद्यभी सादे, सरल और सुगम लिखे जाते हैं। गद्यमें सामान्य विषय समझानेके लिये बहुत कुछ लिखना पडता है। उसी विषयको पद्यमें थोडेमें समझा सकते हैं। आधुनिक भाषामें पुराना माधुर्य, पुराना चातुर्य, पुराना सौंदर्य दिखाई नहीं देता।

भावार्थ समझाइये

काटीनें काटी झाडावी, झाडावी परी ते कळो न द्यावी।
कळकटेपणाची पदवी, असो द्यावी ॥ १ ॥
दुर्जन प्राणी समजावे, परी ते प्रकट न करावे।
सज्जनापरी आळवावे, महत्त्व देउनी ॥ २ ॥
सकळ अवगुणांमध्यें अवगुण, आपले अवगुण वाटती गुण।
मोठें पाप करंटपण, चुकेना कीं ॥ ३ ॥
उत्कट भव्य तेंचि घ्यावें, तळमळींत अवघेंचि टाकावें।
निःस्पृहपणें विख्यात व्हावें, भूमंडळीं ॥ ४ ॥
आधीं प्रपंच करावा नेटका, मग घ्यावें परमार्थविवेका।
येथें आळस करूं नका, विवेकी हो ॥ ५ ॥
होईल तें आपण करावें, न होतां तें जनाकरवीं करवावें।
भगवत्‌भजन राहावें, हा धर्म नव्हे ॥ ६ ॥
धकाधकीचा मामला, कैसा घडे अशक्ताला।
नाना बुद्धि शक्ताला, म्हणोनि शिकवाव्या ॥ ७ ॥

—समर्थ रामदास

कठिन शब्दार्थ

शब्द		अर्थ
कांटी	स्त्री.	काँटा
झाडावी	क्रि.	निकालें
परी	अ.	परंतु
ते	सर्व.	वे
कळो	क्रि.	ज्ञात
न द्यावी	क्रि.	न दें
कळकट	वि.	गंदी

शब्द		अर्थ
चुकेना कीं	क्रि.	न टलेगा
तळमळींत	स्त्री.	व्यथित हृदयसे
अवघे	वि.	सर्व, सभी
व्हावे	क्रि.	हो, बने
भूमंडळीं	नपुं.	संसारमें
आधीं	वि.	प्रथम
प्रपंच	पु.	गृहस्थी

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
पणाची		प्रत्यय तरहकी	करावा	क्रि.	किया जाये
असो	क्रि.	रहने दो	नेटका	वि.	अच्छा
द्यावी	क्रि.	दें	विवेकी	पु.	विचारीको
समजावे	क्रि.	जान लें	आळस	पु.	सुस्ती
प्रकट	वि.	प्रसिद्ध	हो	अव्य.	ऐ
परी	वि.	अनुसार	होईल तें	क्रि.	होगा सो
आळवावें	क्रि.	प्रार्थना करें	होतां	क्रि.	होकर
देउनी	क्रि.	देकर	तें	सर्व.	वह
सकळ	वि.	सभी, सर्व	जनाकरवीं		लोगोंद्वारा
वाटवी	क्रि.	समझते हैं	करवावें	क्रि.	किये जाएँ
करंटपण	नपुं.	दरिद्रता	राहावें	क्रि.	रहें
			नव्हे	क्रि.	नहीं हैं
धकाधकीचा	स्त्री.	संघर्षका	मामला	पु.	घटना
कैसा	अव्य.	किस प्रकार	घडे	क्रि.	होगा
अशक्ताला	वि.	कमजोरको	नाना	वि.	कई
बुद्धि	स्त्री.	विचार	शिकवाव्या	क्रि.	पढाया जाए

[इस काव्यकी परिभाषा प्रचलित मराठीके अनुसार नहीं है। इस लिये शब्दार्थ जो दिये गये हैं वे पुरानी भाषाके हैं यह ध्यानमें रहे।]

अभ्यास

१. हिंदी और मराठी भाषाके आपसी संबंध किस प्रकार निर्धारित किये जा सकते हैं ? प्रथम हिंदीमें समझाइये और तदनंतर सरल मराठीमें।

२. विद्यमान मराठी साहित्यिकोंमेंसे आप किन किनको जानते हैं ? क्या आपने उनके संबंधमें कुछ सुना है ?

३. गुनाहगार जन्मसे नहीं होता या निर्धन जन्मसे दरिद्र नहीं होता या निरक्षर होनेका कारण स्वयं वह व्यक्ति नहीं हो सकता इसका अनुभव ' खरा

न्याय ' इस पाठद्वारा करानेका जो प्रयत्न किया गया है वह कहाँतक उपयुक्त है ? इस पाठको सारांशमें समझाइये ।

४. लिपिसुधारका उक्त ढाँचा आपको कहाँतक संमत है ? और यदि नहीं तो क्यों ? हिंदीमें समझाइये ।

४. ' जुनें काव्य ' इस पाठकी ४ और ५ कविताओंको मराठीमें समझाइये ।

६. निम्न शब्दोंके शब्दार्थ, लिंग और वचन बतलाइये ।

तें, व, दोन, चिंता, अचुक, वेळ, कड, गरज, ओळख, भोळा, देणग्या, प्रपंच, सकळ, आळस.

७. सद्धर्म और सदाचार इन विषयोंपर एक एक मराठी निबंध लिखिये ।

८. (प्रपंच) गृहस्थी रामदासजीने नहीं की पर फिरभी उन्होंने जो आदेश दिये हैं वे कहाँतक उपयुक्त हैं ?

९. निम्न संयुक्ताक्षर नये ढंगसे लिखिये ।

संयुक्त, अक्षर, कार्य, भिन्न, भित्रा, प्रभाव, गौरव, शास्त्र, मूर्ति, कृष्ण, निंदा, संख्या, धूम्र ।

प्रश्नपत्रिका १

१ आपला थोडक्यांत परिचय करून द्या.

२ मराठींत किती लिंगें आहेत ? १० स्त्रीलिंगी, १० पुल्लिंगी व १० नपुंसकलिंगी नामें सांगा.

३ अकारान्त पुल्लिंगी शब्द सांगून त्यांचीं अनेकवचनें कशीं होतात हें सांगा.

४ हिंदी व मराठी भाषेंतील रचनापद्धतींचें तुलनात्मक वर्णन करा.

५ आस, पक्षी, जनावरें, बाजार यापैकीं प्रत्येकांचीं १०, १० नांवें सांगा.

६ आपल्या वडिलांना एक पत्र लिहून त्यांत तुमच्या व्यवसायाचें वर्णन करा.

७ दहा वाक्प्रचार देऊन त्यांचा निरनिराळ्या अर्थीं उपयोग करा.

८ 'खरा न्याय' या धड्याचें हिंदी भाषांतर करा.

९ ब्रह्मा, विष्णु या धड्याचें भाषांतर करा.

१० मराठी भाषा तुम्ही कां शिकतां हें थोडक्यांत लिहा.

* * *

४६ : : प्रवासी

[निम्न पाठ प्रवासी अर्थात् यात्रियोंके लिये बहुत उपयुक्त रहेगा]

(रेलगाडी स्टेशनपर आने के बाद)

प्रवासीः—हमाल ! ए हमाल ! !

हमालः—जी साहेब.

प्रवासीः—अरे ! हे पाहा हे चार डाग आहेत. स्टेशनच्या बाहेर जावयाचें आहे. तुझा नंबर किती ? (स्टेशनके बाहर आनेके बाद)

टांगेवालाः—कुठें चलावयाचें आहे साहेब

प्रवासीः—नारायण पेठ, टिळकांच्या घराशेजारी, काय घेणार ?

टांगेवालाः—दोन रुपये. अगदीं घरीं नेऊन सोडतों, मला घर माहीत आहे.

प्रवासीः—अरे, मुंबईहून पुण्यापर्यंत २।≶ पडले व येथून गांवांत जायला २ रुपये ?

टांगेवालाः—महागाई लई वाढली आहे, साहेब. रुपयाला शेरभर दाणा व २ पेंढ्या वैरण मिळते.

प्रवासीः—हें पाहा. महागाई कांहीं आतांच वाढली नाहीं. १ रुपया घे. चल आटप.

दुसरा टांगेवालाः—१॥ रुपया द्या साहेब. कुणीबी ह्याच्या खालीं नेणार नाहीं. लई लांब है नारायण पेठ.

तिसरा टांगेवालाः—(अन्य टांगेंवालोंसे लक्षित करके) अरे वा! चाल्ला म्होर म्होर माझा नंबर है. चला साहेब, सव्वा रुपया द्या.

प्रवासीः—बरं, चल लौकर.

(जोशी विश्रांतिगृहमें)

प्रवासीः—किती दर आहे तुझ्या विश्रांतिगृहाचा ?

व्यवस्थापकः—चार रुपये. रहाणें, जेवणें, स्नान, कपडे धुणें, चहा आदि सर्व व्यवस्था आहे. स्वतंत्र खोली हवी असल्यास सहा रुपये पडतील. एजंट्स् नेहमीं कॉमन रूममध्येंच उतरतात.

प्रवासीः—मी एजंट नाहीं. मला स्वतंत्र खोली हवी आहे. रुपया आठ आणे अधिक खर्च आला तरी चालेल.

व्यवस्थापकः—महादू ! ए महादू ! ! साहेबांना दहा नंबरची खोली दाखीव.

प्रवासीः—चांगली, हवेशीर आहे ना खोली ? मग नको दाखवावयास.

व्यवस्थापकः—बरं ! आपल्याला चहा आतां हवा आहे का ? का आधीं स्नान करणार ?

प्रवासीः—माझे कपडे आधीं परटाला द्या. न्हावी असेल तर याला बोलवा. शौच–मुखमार्जन झालें म्हणजे मग मी चहा घेईन. आणि हें पाहा, सोलापूरचें एक सेकंड क्लासचें तिकिट १०–५० चें रिझर्व करा. हे घ्या रुपये. मी फक्त एकच दिवस राहणार आहे.

व्यवस्थापकः—ठीक आहे. आपली सर्व व्यवस्था होईल. निर्धास्त असा. येथून तिकिट-ऑफिस जवळच आहे.

कठिन शब्दार्थ

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
थांबतांच	क्रि.	रुकतेही	ए हमाल	पु.	ऐ कुली
हें पाहा	क्रि.	यह देखो	कुणीबी / कोणीहि	स.	कोईभी
बाहेर	अव्य.	बाहर	ह्याच्या	स.	इसके
जावयाचें	क्रि.	जाना	खालीं	अव्य.	नीचे, कम
किती	अव्य.	क्या, कितना	नेणार	क्रि	ले जाऊंगा
चालवयाचें	क्रि.	चलना	लांब	वि.	दूर
शेजारीं	पु.	नजदीक	चाल्ला / चालला	क्रि.	चला, बढा
काय घेणार	क्रि.	क्या लोगे			
अगदीं	अव्य.	ठीक			
नेऊन	क्रि.	ले जाकर	मोहर	अव्य.	आगे
सोडतो	क्रि.	छोडता हूँ	बरं, चल	क्रि.	अच्छा चलो
माहीत आहे	क्रि.	जानता हूँ	लौकर	अव्य.	जलदी
पडले	क्रि.	लगे, पडा	दर	पु.	भाव, दाम
येथून	अव्य.	यहाँसे	खोली	स्त्री.	कमरा
महागाई	स्त्री.	महंगाई	हवी असल्यास		यदि चाहते हो
लई	अव्य.	बहुत	उतरतात	क्रि.	ठहरते हैं
वाढली	क्रि.	बढ गई	हवी	क्रि.	चाहिये
शेरभर	पु.	एक शेर	चालेल	क्रि.	चलेगा
दाणा	पु.	खूराक	दाखीव	क्रि.	बतला दो
पेंढ्या	स्त्री.	पूले	हवेशीर	वि.	हवादार
वैरण	स्त्री.	घास	कां	क्रि.	क्यों
आतांच	अव्य.	अभी-अभी	आधीं	अव्य.	पहले
कांहीं	अव्य.	कुछ	करणार	क्रि.	करेंगे
घे	क्रि.	ले	परटाला	पु.	धोबीको

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
चल आटोप	क्रि.	चल जलदी कर	घेईन	क्रि.	लूँगा
द्या	क्रि.	दीजिये	करा	क्रि.	कीजिये
न्हावी	पु.	नाई, हजाम	फक्त	अव्य.	केवल
असेल तर		यदि हो तो	ठीक आहे	क्रि.	ठीक है
बोलवा	क्रि.	बुलाइये	निर्धास्त	वि.	निःशंक
झालें म्हणजे		होनेके बाद	असा	क्रि.	रहिये

* * *

४७ : : बाजार

[बातचीतमें मराठीके अपेक्षित शब्द याद होनेपरभी तुरंत खियालमें नहीं आते। इसी लिये यह पाठ हिंदीमें लिखा गया है। इससे उचित हिंदी शब्दोंको मराठीमें कौनसे प्रतिशब्द हैं यह आप समझ सकेंगे। फिरभी शब्द और वाक्योंका प्रयोग आपको बार बार करनाही चाहिये।]

पुष्पा—सुनो; यदि बाजार गए तो अधसेर नमक लेते आना। तरकारियाँ आजकल सस्ती हैं। टमाटर और आलू भी लेते आईये। कचमूरके लिये साग लेते आना।

गिरिधर—तुम्हें तो बस खाने पकानेकी ही हमेशा सूझती है। मैं बाजार जा रहाँ हूँ जरूर परंतु मंडी जानेका इरादा नहीं हैं। लताको कुछ कपडे और गहने खरीदना चाहता हूँ। सावन नजदीक आ चुका है ना? फिर उसके साथ महंगाई भी आ जाएगी!!

पुष्पा:—क्या मैं बूढी हो चुकी हूँ? सावन तो मुझे भी खेलना है। और सावनकी चीजोंको आप क्या जाने? मैं भी बाजार चलती हूँ। लताको भी साथ लेते चलेंगे।

गिरिधरः—सावनमें प्रकृतिकी वर्षा तो होती ही है। सौंदर्य भी खिल उठता है; परंतु यहाँ न रुपयोंकी वर्षा होगी, और न वह खिल उठेगा।

पुष्पा, लताः—हमारी चीजोंको हम ही खरीदेंगी। हम अभी आप ही के साथ आना चाहती हैं।

गिरिधरः—मुझे कोई एतराज नहीं। मात्र यह ध्यान रहे कि सावन एक सौ से न बढने पाए। (बाजारमें)

लताः—अरे ओ दूकानदार? जरा दुपट्टे तो दिखलाना। ढाई गजसे जियादा न हो। महीन, सस्ता और अच्छा बतलाओ।

पुष्पाः—साथ साथ डेढ गजके भी बतलाना। लताके लिये डेढ गजका काफी है।

दुकानदारः—माँजी! आधे गजसे लेकर छ गज तक दुपट्टे हैं। फॅशनने तो कमाल कर रखा है। देखते जाइये। आपको जो पसंद हो ले लीजिये। कल आपको इन दामोंमें ये चीजें नहीं मिलेंगी। आज हमने भाव सस्ता कर दिया है।

पुष्पाः—मुझे तो यह पावनेतीन गज का पसंद है।

लताः—मैंने यह सवा दो गजका ले लिया। और यह साडी भी ....

गिरिधरः—अच्छा भाई। ले लेना बयालीस रुपये बारह आने। रसीद रहने दो। रुपये गिन लेना।

[सौदागरकी दुकानमें]

पुष्पाः—अरे भैय्या! जरा जल्दी करना। धनिया छटाँक, इलायची दो तोले, नमक आधा सेर, गूड दो सेर, शक्कर तीन सेर, चार नारियल, एक सेर घी, पांच सेर मैदा, मीठा तेल, मिट्टीका तेल, धोनेका साबून, मुँगफल्ली, चना, हरहर, तुव्वर जल्दी जल्दी देना।

सौदागरः—हाँ बहनजी। आप चिंता न कीजिये। आप घर पहुँचतेही सामान आपको मिल जाएगा। आप फिक्र न करें।

[सुनारकी दूकानमें]

गिरिधरः—एकाध बढिया चाँदतारा दिखलाना जी ?

सुनारः—ये रहे चाँद तारे। किस नापका और कितने वजनका आपको चाहिये ?

गिरिधरः—इस लडकीके लिये।

सुनारः—लगभग चार तोलेका ले लीजिये। माँजीभी पहन सकेंगी।

पुष्पाः—हाँ ठीक है यह चाँदतारा। जरा देखूँ। [पहन कर] ना भाई। इससे जरा छोटा दो।

लताः—मुझे तो यही पसंद है।

गिरिधरः—जरा तोलो तो इसे ?

सुनारः—३ तोले १० रत्तीका है यह। तीन सौ छहसट रुपये हुए।

गिरिधरः—एकाध महिना उधार दे सकोगे ? भादोमें बकाया पूरा करूंगा।

सुनारः—यह सावन है बाबूजी ?

लताः—और नहीं तो क्या ? यह सावन ही जो ठहरा। डेढ सौ रुपये रह जाते हैं। दे देंगे बाबू अगले महिनेमें।

गिरिधरः—देने लेनेका सवाल नहीं ! सवाल है सावनका ! !

अनुवादके लिये उपयुक्त शब्दार्थ

शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
सुनो–हें पाहा, ऐका	अरे ओ–अरे ये
बाजार गए–बाजारांत गेलात	दिखलाना–दाखवा
अधसेर–अर्धा शेर	ढाई–अडीच
नमक–मीठ	गज–वार

शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
लेते आना–घेऊन या	महीन–पातळ, मूल्यवान
तरकारियाँ–भाज्या, भाजीपाला	डेढ़–दीड
आजकल–हल्लीं, सध्यां	बतलाना–दाखवा
सस्ती–स्वस्त	काफी–पुरेसा
कचूमर–कोशिंबीर	माँजी–आईसाहेब
साग–भाजी	आधे–अर्ध्या
बस–फक्त, केवल	छ–सहा
सूझती है–आठवतें	कमाल–कमाल
मंडी–मंडई	देखते जाइये–पाहून घ्या
गहने–डागिने	कल–उद्यां, काल
खरीदना–विकत घेणें	दामोंमें–किंमतींत
चाहता हूं–इच्छितों	मिलेंगी–मिळणार
सावन–श्रावण	कर दिया–केला
आ चुका–आला	मुझे तो यह–मला तर हें
जाने–जानतां	ले लिया–घेतला
खिल उठता–बहार येते	अच्छा भाई–बरं बाबा
चाहती हैं–इच्छिते	बयालिस–बेचाळीस
एतराज–हरकत	रसीद–पावती
न बढने पाए–पुढें जाऊं नये	रहने दो–राहूं द्या
गिन लेना–मोजून घ्या	एकाध–एखादा
अरे भय्या–अहो भाऊसाहेब	बढिया–उत्तम
जल्दी करना–लौकर आटोपा	ये रहे–हें पाहा, हे आहेत
धनिया–धने	नाप–माप
छँटाक–छटाक	किस–कोणत्या
इलायची–वेलदोडा	लगभग–जवळ जवळ
तोले–तोळे	ले लीजिए–घ्या

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
आधा	अर्धा	पहन कर	घालून
सेर	शेर	सकेगी	शकतील
गुड	गूळ	जरा देखूँ	थोडें पाहूं
शक्कर	साखर	ना भाई	नाहीं हो
नारियल	नारळ	तोलो	वजन करा
घी	तूप	इसे	याला, याचे
मैदा	सपीठ, मैदा	रत्ती	गुंजा
मीठा तेल	गोडें तेल	छहसट	सहासष्ट
मिट्टी का तेल	घासलेट	दे सकते हो	देऊं शकतां
साबुन	साबण	भादोमें	भाद्रपदांत
मूँगफल्ली	शेंगादाणे	बकाया	बाकी
चना	हरभरे	पूरा करूंगा	चुकती करीन
हरहर	मसूर	ठहरा	आहे तर !
तुव्वर	तूर	रह जाते हैं	राहतात
घर पहुँचतेही	घरीं जातांच	देने लेनेका	देण्याघेण्याचा
मिल जाएगा	मिळेल	सवाल	प्रश्न
फिक्र न करें	काळजी करूं नका		

अभ्यास

(१) वाक्यार्थ बतलाइये:—

हिंदीमें:—१. ए हमाल २. हें पाहा ३. काय होणार ४. नेऊन सोडतो ५. अगदीं घरीं ६. पुण्यापर्यंत ७. २।≈ पडेल ८. लई वाढली ९. चल आटोप १०. ह्याच्याखालीं ११. मी एजंट नाहीं १२. खोली दाखव १३. चहा घेईन १४. ठीक आहे १५. निर्धास्त असा.

मराठीमें:—१. लेते आना २. सस्ती है ३. सूझती हैं ४. इरादा नहीं ५. खरीदना हैं ६. आ चुका है ७. खेलना है ८. साथ लेना ९. खिल उठना १०. एतराज नहीं ११. ध्यान रहे १२. ओ दूकानदार १३. जियादा न हो १४. कमाल कर रखा १५. पसंद है १६. जल्दी जल्दी देना १७. मिल जाएगा १८. पहन सकेगी.

(२) अर्थ बतलाइये:—

(हिंदीमें) सासू, मेहुणा, आजा, नातू, बायको, बाई, हल्लीं, स्वस्त, उद्यां, परवां, काल, हरकत, वार, माप, तोळे, धने, पावती, आर्धा, पावणे-चार (मराठीमें), रत्ती, छह, डेढ, मिट्टीका तेल, चना, हरहर, सवाल, सावन, भादो, बकाया, खरीदना, आजकल ।

(३) निम्न शब्दोंका हिंदीमें रूपांतर कीजिये:—

गूळ, तोळे, भाऊ, स्वस्त, मंडई, छटाक, तूर, एखादा, बाप, दादा, कमाल, चैत्र, वैशाख, श्रावण, बारा, नाहीं, प्रवासी, रस्ता, विश्रांति-गृह, रेल्वे.

(४) पाँच और पाँचको बारबार ५ मरतबा लिखकर आनेवाली संख्याकी गिनती मराठीमें कीजिये ।

उदा०.:—५५, ५५५, ५५५५, ५५५५५.

* * *

४८ : : आप्त

रिश्तेदारकोही **आप्त** कहते हैं। बिरादरको **भाऊबंद** कहते हैं। बिरादरीका अर्थ **नातेवाईक** अथवा **लग्नसमारंभ** होता है। बहन, भाई, माँ, बापको, **बहीण, भाऊ, आई, वडील** कहते हैं। **मुलगा मुलगीका** उपयोग लडका, लडकी के अर्थमें होता है। चचेरे और मौसेरेको **चुलत** व **मावस** कहते हैं। दादा, दादी या नाना, नानीके लिये केवल **आजा, आजी** ही शब्द रायज हैं। ससुराल और मायकेको **सासर** व **माहेर** बोलते हैं। बहनोई व सालाको केवल **मेहुणा** कहते हैं। मामूँ या मुमानीको **मामा, मामी** कहते हैं। उसी प्रकार **काका, काकी**। भतीजेको **पुतण्या** और भांजे को **भाचा** कहते हैं। यदि लडकियाँ हों तो **पुतणी** व **भाची** कहते हैं। पुतणीका बहुवचन पुतण्या और भाचीका बहुवचन भाच्या होता है। बहू को **सून**, नातीको **नातू**, दूल्हेको **वर**, दुल्हनको **वधू** कहते हैं। मर्द, औरतको

नवरा बायको कहते हैं। बहन या महिलाको **बाई, बहीण, महिला** या **स्त्री** कहते हैं। पति, पत्नी, भ्राता, पुत्र, माता, पिता, भगिनी, पुत्री आदि संस्कृत शब्द मराठीमेंभी प्रचलित हैं। मित्र, सज्जन, सभ्य, गर्विष्ठ आदि संस्कृत शब्द हमेशा उपयोगमें लाए जाते हैं। बाल-बच्चेको **मूलबाळ** कहते हैं। अनाथ, आश्रित आदि शब्द तो सभी भाषाओंमें चालू हैं। उसी प्रकार विद्यार्थी, शिक्षक, शिष्य गुरु आदि।

प्रश्नपत्र २

[निम्न प्रश्नोंके उत्तर मराठीमें दिये जाएँ]

१ आपल्या उद्योगधंद्याची माहिती द्या.
२ आपण मराठी कां शिकतां ?
३ प्रांतिक भाषांचा संबंध राष्ट्रभाषेशीं कसा व कां हवा ?
४ जीवनांत भाषेचें स्थान किती मोठें असतें ?
५ मराठी आल्यामुळें आपला काय लाभ होईल ?
६ हिंदी आणि मराठींत काय फरक आहे ?
७ महाराष्ट्राची राहणी तुम्हांला कितपत आवडते ?
८ महाराष्ट्राविषयीं तुमचें काय मत आहे ?
९ भाषा कशी वाढते ?
१० महाराष्ट्राचा इतिहास तुम्हांला माहीत आहे काय ?

* * *

४९ : : शासन या प्रबंध

पंचायतको मराठीमें **पंच** कहते हैं। पटेल पटवारीको **पाटील कुलकर्णी**। तहसीलदारको **मामलेदार** कहते हैं। सिपाहीको **शिपाई**। मुंतजिमको फौजदार, तालुकदारको **कलेक्टर**, कमिशनरको प्रान्त, मिनिस्टरको मंत्री आदि।

जमादार, कारकून (क्लार्क), मुन्सिफ (न्यायाधीश,) पट्टेवाला, ये उर्दू शब्द मराठीमें प्रचलित हैं। मास्टरको मास्तर, शिक्षक आदि शब्द मराठीमें रायज हैं । व्यवस्थापक, मंत्री (चिटणीस), अध्यक्ष आदि शब्द हिंदीके अनुसारही मराठीमें चलते हैं । प्रस्तावको ठराव कहते हैं । कर्मचारियोंके संबंधमें अधिकतर फारसी शब्द हिंदी और मराठीमेंभी जारी हैं। जाहिरात (इश्तेदार), परिपत्रक (सर्क्युलर), मुख्य वक्ता, अनुमोदन, आभार, विज्ञप्तिपत्र आदि शब्दोंमें विशेष फरक नहीं है । सुझाव को सूचना, संशोधनको उपसूचना आदि शब्दोंमें कुछ फरक पाया जाता है; परंतु उक्त शब्द दोनों भाषाभाषी समझ सकते हैं।

भारतवर्षमें फारसी और अंग्रेजी भाषाका राज्य कई वर्ष चलता था। इसलिये फारसी और अंग्रेजी राज्यशास्त्रविषयक शब्द आजभी प्रचलित हैं। शिवाजी राज्यकालमें फारसी शब्दोंपर बहिष्कार डाला गया था। उन दिनोंमें मराठी भाषामें उर्दूका राज्यशास्त्रकोषभी प्रकाशित हुआ था । परंतु फिरभी अभीतक कुछ उर्दू शब्द रायज हैं ।

तालुका, जिला, गाँव, शहर, कसबा आदि शब्द मराठीमेंभी प्रचलित हैं। इन्स्पेक्टर, इन्क्वायरी आदि प्रचलित अंग्रेजी शब्द मराठीमेंभी हैं। मात्र इन शब्दोंके उच्चारणमें विशेषरूपसे हिंदी भाषामें फरक पाया जाता है।

सभा, समिति, संगठना, पक्ष, घटना, प्रस्ताव आदि सभाविषयक सभी शब्द मराठीमें जारी हैं। घर, गली, मोहल्ला, सडक, रास्ता, आदि शब्द मराठीभाषी समझ लेते हैं।

संस्कृतके अतिरिक्त किसीभी भारतीय भाषाका समूचे भारतवर्षमें प्रचार न होनेके कारण किसीभी एक भाषाका राज्य संपूर्ण भारतवर्षमें न चल सका था। परंतु अब वह असुविधा दूर हुई है। समुचे भारतवर्षमें हिंदी बोली तथा समझी जाती है। अतः भारतीयताकी परंपरा पुनः दृढ

करनेमें हिंदी द्वारा हम कटिबद्ध हो चुके हैं। मराठी भाषाभाषियोंके लिये हिंदी आसान है। सभी देशी भाषाएँ संस्कृतोत्पन्न होनेसे हिंदी भाषा यदि संस्कृतप्रचुर रही तो सभी प्रांत, हिंदी भाषा न सीखते हुएभी समझ सकेंगे। राज्यशासन और विज्ञानशास्त्र की शब्दावलि संस्कृतोद्भवही हो सकती है यह अब प्रकट हो चुका है। अन्य प्रांतीय या उर्दू आसान शब्दोंका उपयोग करनेसे हिंदी शब्दभंडार अवश्य संपन्न होगा।

मददगार, कचहरी (कचेरी), खटला या केस, दावा, पक्षकार, प्रतिपक्षी, नौकर, अधिकारी आदि शब्द मराठी भाषामें हैं।

समाज तथा राज्यशासनके संबंधमें जिन मराठी प्रतिशब्दोंकी आवश्यकता थी वे कुछ शब्द यहाँ दिए गये हैं। शेष हिंदीके अनुसारही मराठीमें चालू हैं।

* * *

५० : : गोग्रास

[इस कहानीमें मराठी भाषा का आविष्कार आप पाएँगे। अनुवाद करनेका यत्न करें। समालोचनासे कथाका भाव जान लीजिये।]

चार कच्चींबच्चीं, पांच पंचवीस रुपयांचें सामानसुमान व मंगळसूत्र याव्यतिरिक्त रागिणीच्या नवऱ्यानें घरांत कांहींहि शिल्लक ठेविलें नव्हतें. रागिणी मात्र चलाख व येईल त्या परिस्थितीशीं टक्कर देणारी होती. जन्मच मुळीं तिचा हाल-अपेष्टांत गेला होता. दुःखाकष्टांची तिला संवय झाली होती.

शेजाऱ्यापाजाऱ्यांच्या आश्रयावर चार दोन महिने कसेबसे तिनें काढले. शिकलीसवरलेली नसल्यामुळें मोलमजुरी करणें तिला प्राप्त झालें होतें. प्रथम ती कथा-पुराणाच्या रूपानें देवालयांत जाऊन बसूं लागली. अनेक आया-बहिणींच्या ओळखीपाळखी करून घेऊन

आपल्यावर गुदरलेल्या संकटांची तिनें त्यांना जाणीव करून दिली. त्यांचीं हृदयें कळवळून आलीं. आपल्या ओळखीपाळखीनें रागिणीच्या मैत्रिणींनीं तिला स्वैंपाकिणीची नोकरी लावून दिली.

रागिणीवर सोपविलेलीं कामें ती नेटनेटकीं करीत असे; परंतु मालकी आविर्भावामुळें तिचा क्वचित् प्रसंगीं अपमान होऊं लागला, आणि म्हणून रागिणी दुसरीकडे नोकरी शोधूं लागली. आतांपर्यंत तिनें सुमारें पंचवीस नोकऱ्या केल्या होत्या. मात्र प्रत्येक घरच्या मालक-मालकिणीला तिनें दुखावलें नाहीं किंवा त्यांची अवकृपाहि होऊं दिली नाहीं. यामुळें स्वैंपाक जरी सुटला असला तरी सर्व मालकिणीं-कडे रागिणीची ये–जा सुरू असावयाची.

रागिणीचीं मुलें आतां मोठीं झालीं होतीं. पांच माणसांचा खर्च सांभाळण्यास रागिणी असमर्थ ठरूं लागली. शिवाय तिचें वयहि झालें होतें. पन्नाशीच्या घरांत ती गेली होती. मुलांच्या शिक्षणाचा खर्चहि वाढत होता. रागिणीनें आपल्या घरीं आतांशा एक गाय बाळगली होती ! हाच तिचा मुख्य उद्योग झाला होता.

श्रीमंतांच्या घरांमधून तडानेल्या भुकेलेल्याला जरी अन्न आणि पाणी मिळत नसलें तरी पूजेला ब्राह्मण, गाईला गोग्रास घालण्यास ते विसरत नाहींत. दिवसेंदिवस गाई कमी होऊं लागल्या होत्या आणि म्हणून रागिणीच्या गाईला पन्नासपर्यंत गोग्रास मिळूं लागले. आपली नोकरीचाकरी संपल्यावर गोग्रास गोळा करीत करीत रागिणीला घरीं येण्यास ४–५ वाजावयाचे. हाच तिचा मुख्य उद्योग झाला होता.

कित्येक प्रसंगीं बायकांनीं रागिणीला गोमूत्र, गोदूध, गाईचें शेण मागितलें होतें. परंतु रागिणी तें देऊं शकत नव्हती. गोपूजेच्या दिवशीं आळींतील सर्व बायकांनीं गाईची पूजा करण्याचें ठरविलें; परंतु त्यांना गाय कुठेंच सांपडेना. शेवटीं एका बाईला रागिणीच्या गाईची आठवण

झाली. पण रागिणीचें घर कुणालाच माहीत नव्हतें. बायकांत चाललेली कुजबूज एका म्हाताऱ्यानें ऐकली व ' मी रागिणीचें घर शोधून गाईला घेऊन येतों ' असें तो म्हणाला व लगेच रागिणीच्या घराच्या शोधार्थ तो निघालाहि.

संध्याकाळची वेळ होती. रागिणी गोग्रास गोळा करीत करीत सहाच्या सुमाराला घरीं पोंचली. ती हल्लीं फारच थकल्यामुळें तिच्या हातून कामें होत नसत. म्हाताराहि तिच्या पाठोपाठ घरीं पोंचला. पण—

म्हाताऱ्यानें घरांत पाऊल टाकतांच ' आई ! भूक लागली ग ! ' करीत ४—५ मुलें तिच्याभोंवतीं गिल्ला करून गोग्रासांवर तुटून पडलीं.

म्हातारा मागच्या पावलीं परतला. भुकेनें व्याकुळ झालेल्या मुलांचें तें दृश्य पाहून त्याला गहिंवरून आलें. रागिणीच्या गाईचें वर्तमान सांगण्यास तो असमर्थ ठरला. रागिणी पुन्हा गोग्रास न्यावयास येऊं शकली नाहीं व रागिणीचे चार लाल भूकभूक, तहान तहान करून स्वर्गस्थ झाले.

श्रीमंतांच्या गोग्रासाचा प्रश्न मात्र सुटला नाहीं !

कठिन शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
कच्चींबच्चीं—नपुं.	बालबच्चे
पांचपंचवीस—वि.	पाँचपचास
सामानसुमान—नपुं.	साजोसामान, माल व असबाब
मंगळसूत्र—नपुं.	मंगलसूत्र
शिल्लक—स्त्री.	शेष, बाकी
टक्कर—स्त्री.	सामना
हालअपेष्टा—स्त्री.	दुःख, कष्ट
काढिली—क्रि.	निभाए
शिकली-सवरलेली—वि.	लिखी-पढी
मोलमजुरी—स्त्री.	मजदूरी
कथापुराण—नपुं.	भजनपूजन
आयाबहिणी—स्त्री.	माँ बहनें
ओळखीपाळखी—स्त्री.	जानपहचान
गुदरणें—क्रि.	बीतना
जाणीव करून देणें—	जानकारी देना

शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
संवय–स्त्री· आदत	कळवळणें–क्रि· मसोसना
शेजारीपाजारी–पुं· आडोसी-पडोसी	स्वयंपाकीण–स्त्री· रसोई पकानेवाली
कशीबशी–किसी हालतमें	सोंपविणें–क्रि· सौंपना
सुमारें–लगभग	नीटनेटकी–वि· साफसुथरी
केल्या–बजा लाईं	सांपडणें–क्रि· पाना, मिलना
दुखविले–कष्ट दिये	आठवण झाली–स्मरण हुआ
सुटणें–क्रि· त्यागना, मुक्त होना	कुजबुजणें-क्रि· कानाफूसी करना
जा-ये–आ जा	शोधणें–क्रि· ढूँढना
आतांशा–आजकल	लगेच–अव्य· तुरंत
भुकेलेल्याला–भूखोंको	भोंवतीं–अ· इर्दगिर्द
दिवसेंदिवस–दिन, प्रतिदिन	गिल्ला–पु· गडबड, शोर
वाजावयाचे–बजते थे	तुटून पडलीं–झपट पडे
शेण–नपुं· गोबर	मागच्या पावलीं–दबे पाँव
आळी–स्त्री· मोहल्ला, गली	परतला–क्रि· लौटा
	गहिंवरून–उमडकर

* * *

५१ : : 'गोग्रास' की समालोचना

[पाठके भावको समझानेके हेतु पाठकी समालोचना दी गयी है। इसकी सहायतासे पाठका भावानुवाद कीजिये। रागिणीका चरित्र चित्रण मराठीमें कीजिये।]

पाठका शीर्षक 'गोग्रास' है। शीर्षकसेही हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि इस कहानीमें उन्हीं महानुभावोंका चित्रण होगा जो सनातन होनेका ढिंढोरा पीटते हैं। या जो कहते हैं कि रूढी या रिवाजके

आधीन जो समाज हुआ है और सनातनत्वका दावा करता है उस समाजका यह रेखाचित्र है।

कहानी मराठीमें है। कहानीमें लोकभाषाका आविष्कार प्रत्येक वाक्यमें दीख पडता है। थोडेमें, अपने भावोंको सुस्पष्ट कर, दौलतमंद और दरिद्र जीवनका यथायोग्य वर्णन करनेसे कहानी स्वयं परिचय करा देनेमें समर्थ हुई है।

रागिणी का शरीर बिलकुल क्षीण बतलाया गया है। मन बहुतही तगडा। फिरभी मानसिक कमजोरीका विश्लेषण यदि पाठमें किया जाता तो अधिक अच्छा होता था। कहानीका अंत बहुतही अधूरे वाक्योंमें किया गया है। इन वाक्योंसे ज्ञात होता है कि अपने छोटे छोटे बालकोंके लिये रागिणीने कितने कष्ट उठाये हैं। कष्ट सहकर भी वह अपने बच्चोंका पालपोस करनेमें असमर्थ साबित हुई है। समाजकी निर्दयताका एक बढिया उदाहरण रागिणीके जीवनक्रमसे पाठकोंको ज्ञात होगा। साथ साथ सनातनी होनेका जो दावा करते हैं उनके लिये यह कहानी आदेश देती है कि गरिबोंको अपनी मेहनतसे जीने दो–इसीमें सनातनत्व है, अमरत्व है।

भाव—यद्यपि रागिणीके घरमें गौ नहीं थी परंतु फिरभी गौका बहाना बनाकर वह गोग्रास अिकट्ठा करती थी। केवल अिसीलिये कि गोग्रासकी धार्मिक भावनासे अपने परिवारका पालन पोषण हो। बालबच्चे कमसे कम एक जून क्यों न हो अधपेट रह सकें। 'गोग्रास' यह एक मात्र उसके परिवारका जीवन बन गया था। इसीलिये वह रसोयाका काम करती थी। शरीरने जब जवाब दे दिया और साथ साथ घरमें गौ नहीं है यह बात जब लोगोंके सामने प्रकट हुई तब अनायास उसके बालबच्चे मर गये। मात्र धनवानोंको दुःख हुआ कि हम गौको गोग्रास न खिला सके।

कहानीमें रागिणीका पात्र मूक चित्रित किया गया है। उसके जीवनपर एक बहुतही अच्छी और लंबी चौडी कहानी लिखी जा सकती है और वह बहुतही आवश्यक और उपयोगी सिद्ध हो सकती है। लेखकने इस कहानी का विस्तृत चित्रण करनेका कार्य पाठकोंको सौंपा है।

* * *

५२ : : इतिहास

शिवापूर फारच लहानसें खेडें होतें. अवघें दोन हजार वस्तीचें. शाळा नाहीं, वाचनालय नाहीं, रुग्णालय नाहीं किंवा कोणत्याहि संस्था नाहींत. तरी पण त्या खेड्याचें आरोग्य उत्तम होतें. लोकांत पुस्तकी ज्ञानाची वाढ जरी झाली नसली तरी लोक संघटित व कष्टाळू होते. मुलें, पुरुष, बायका सर्वच कामें करीत असत. सर्वांची प्रकृति धडधाकट होती.

जागतिक सुधारणेचें लोण शिवापुरींहि कांहीं अंशानें पोहोचलें होतें. रात्रीची एक शाळा नुकतीच निघाली होती. नवाकाळ नांवाचें साप्ताहिकाहि शिवापुरांत येऊं लागलें होतें. गांवांतील चार-दोन म्हातारीं माणसें आपल्या अनुभवाचे धडे गांवांतील सर्व लहान-मोठ्या मंडळींना देत असत. हीं म्हातारीं माणसेंच गांवांतील पंच मंडळी होती. त्यांच्या आदेशाप्रमाणें सर्व गांवकरी वागत. येवढीच सुधारणा या गांवांत झाली होती.

गांवांत एक विहीर होती व एक नदीहि होती. लहान लहान टेकड्यांच्या रांगांनीं गांवाची शोभा वाढविली होती. इतिहासांत जसें हें गांव गाजलें तद्वतच ३०, ३२, ४२ च्या चळवळींतहि या गांवानें आपली ऐतिहासिक भूमिका सार्थ केली होती.

पंजाब, काश्मीर, बंगाल, हैदराबाद आदि ठिकाणीं भीषण हत्याकांड होऊनसुद्धां खुद्द शिवापूर गांवांत कसलीहि गडबड झाली नव्हती. उलट गांवांतील मंडळींनीं एकजूट करून त्या प्रांतांना साहाय्यच केलें. कांहीं निर्वासित शेतकऱ्यांना शेती देऊन त्यांच्या मुलांबाळांची जन्माची सोय केली.

देशपांडे हे सर्वांत जुने गांवकरी होते. देशपांडे घराण्याचा विस्तार खूप मोठा वाढला होता. परंतु त्यांच्यांत फूट पडली नव्हती. वांटण्या झाल्या नव्हत्या. देशपांडे मंडळी जातीनें ब्राह्मण जरी असली तरी गांवांतील बहुजन समाजांत तीं एकरूप झालीं होतीं. स्वतः जातीनें ते शेतकी करीत असत. शेतकऱ्याच्या सुखदुःखांत ते गढून गेले होते.

प्रकाश, हवा, पाणी व शेती यांचा संपूर्ण सदुपयोग गांवकरी घेत असत. विलायती नांगर गांवांत आले नव्हते. मात्र कुठलीहि शेती नांगराच्या अभावीं पडून राहात नसे. सर्व शेतकरी व मजूर सहकार्यानें उद्योगधंदा करीत असत.

श्रीमंत, व्यापारी, वकील, डॉक्टर, यांनीं शिवापूरला भेटी देऊन आपला उद्योगधंदा वाढविण्याचा यत्न केला; परंतु त्यांची तेथें डाळ शिजली नाहीं.

कारण गांवांत भांडणें नव्हतीं. सहसा कोणी आजारी पडत नसत. आजारी पडले तरी देशी औषधांचा ते उपयोग करीत असत. शिवाय जीवनांत अडून राहील अशी एकहि वस्तु व्यापाऱ्यांकडून घेण्याची गरज त्यांना नसे.

कठिन शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
खेडें—नपुं.	ग्राम	रांग—स्त्री.	कतार, पंक्ति
अवघें—वि.	केवल	गाजणें—क्रि.	मशहूर होना
वस्ती—स्त्री.	लोकसंख्या, आबादी	ठिकाण—नपुं.	स्थान

शब्द	अर्थ
कोणतीहि	अव्य. कोईभी
तरी पण	अव्य. यद्यपि, परंतु, फिरभी
वाढ	स्त्री. उन्नति
धडधाकट	वि. सुदृढ
सुधारणा	स्त्री. सुधार
लोण पोहोंचविणें	समस्या भिडाना
कांहीं अंशानें	किसी अंशमें
नुकतीच	अव्य. थोडेही दिनोंमें
देत असत	क्रि. देते थे
गांवकरी	पु. ग्रामीण
वागणें	क्रि. बरतना
विहीर	स्त्री. बावडी
पडून राहात नसे	विना जोते न रहती थी
भेट	स्त्री. भेंट, मुलाकात
डाळ शिजली नाहीं	दाल नहीं गली

शब्द	अर्थ
गढून	मग्न होकर
खुद्द	अव्य. स्वयं
गडबड	स्त्री. गडबडी
झाली नव्हती	क्रि. न हुई थी
उलट	अव्य. विरोधमें, अपितु
एकजूट	स्त्री. संगठना
सोय	स्त्री. प्रबंध
फूट	स्त्री. विद्रोह, मतभेद
वांटणी	स्त्री. भाग, हिस्सा
जातीनें	स्वयं
पुरी झाली ऊसली तरी	पूर्ण होने-पर भी
नांगर	पु. हल
अडून राहील	रुक सकेगी
गरज	स्त्री. आवश्यकता, जरूरत
भासणें	क्रि. प्रतीत होना, महसूस करना

* * *

सणांची योजना एका विशिष्ट उद्देशानें केलेली असते. प्रत्येक सणाच्या मागें फार मोठा इतिहास असतो. तो इतिहास विसरून केवळ गोडधोड खाणें व चैन करणें हेंच जेव्हां समाज आचरतो तेव्हांच खरें त्या सणाचें महत्त्व नष्ट होतें. गोड खाणें, चैन करणें व लोळत पडणें, हें सणांचें मुख्य लक्षण नसून ज्याकरितां सणांची आयोजना केली असेल त्या घटनेचा फेरविचार करणें हा खरा सणांचा हेतु असतो. शिवाय 'जेवढें खाल तेवढें पचवा' हा आरोग्यशास्त्राचा नियमहि आम्ही पाळीत नाहीं.

अत्यंत आणीबाणीच्या परिस्थितींत झाडून साऱ्या शक्ति एकवटून जेव्हां जेव्हां आमच्या पूर्वजांनीं शत्रूवर मात करून विजय संपादन केले तेव्हां तेव्हां ते ते विजयदिन म्हणून सणांच्या रूपानें साजरे झाले. काळ पालटला आहे, परिस्थिति बदलली आहे. आतां तेच सर्वच्या सर्व विजय-दिन पाळण्याचें कारण नाहीं आणि जरी ते पाळले तरी सध्यांच्या रूपांत तर मुळींच पाळले जाऊं नयेत. या सणांचा साधार राष्ट्रीय इतिहास मात्र प्रत्येकानें अवश्य वाचला पाहिजे.

सध्यांचे आमचे राष्ट्रीय सण

२६ जानेवारी--प्रजासत्ताक दिन. ४ मार्च—मार्क्स दिन. १ मे—आंतरराष्ट्रीय कामगार दिन. १० मे—१८५७ स्वातंत्र्य-युद्ध दिन. १ ऑगस्ट—टिळक पुण्यतिथि. ७ ऑगस्ट—टागोर पुण्यस्मृति. १५ ऑगस्ट—स्वातंत्र्य दिन. २ ऑक्टोबर—म. गांधी जयंती. १४ नोव्हबर—जवाहर जन्मदिन. २८ डिसेंबर--कॉंग्रेस जन्मदिन.

याव्यतिरिक्त सुभाषचंद्र बोस, डॉ. आंबेडकर, बॅ. सावरकर आदि राष्ट्रीय नेत्यांचे वाढदिवस पाळले पाहिजेत.

पाडवा, धूलिवंदन, गोकुळअष्टमी, गणेशचतुर्थी, दसरा, दिवाळी आदि सणांचें महत्त्व समजून घेऊन ते पाळणें आवश्यक आहे.

शिवाजी, गुरु नानक, राणा प्रताप, समर्थ रामदास आदि स्वर्गस्थ पुढाऱ्यांच्याहि पुण्यतिथ्या साजऱ्या केल्या पाहिजेत.

उत्सव-समारंभामधून संघटन व राष्ट्रोन्नति हें ध्येयच केवळ डोळ्या-पुढें ठेवलें पाहिजे. मंगल तिथ्या, पुण्यात्मे व राष्ट्रीय महोत्सव भारतांत कमी नसून ते ते समारंभ साजरे करण्यास दिवस कमी आहेत.

कठिन शब्दार्थ

शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
सणवार–पु. त्योहार	झाडून–क्रि. समूचे, सर्व
विसरणें–क्रि. भूलना	एकवटून– क्रि. एकत्र होकर
गोडधोड–वि. मीठा	पूर्वज–पु. पुरखा
लोळणें–क्रि. लेटना	मात करणें–क्रि. विजय पाना
पाळणें–क्रि. आचरना, रखना	पालटला–क्रि. बीता,
आणीबाणीच्या–वि. नाजूक हालतमें	पाळणें–क्रि. मनाना
ठरणें–क्रि. निश्चय करना	वाढदिवस–पु. जन्मगाँठ

* * *

५४ : : धंद्यांचें राष्ट्रीयीकरण

(मराठी ग्रामीण भाषाका नमूना)

महादू:—धनी ! बारा वर्षं झालीं. माझा पगार है तिथचं है. म्होरल्या वर्सांपासून पगारवाढ झालीच पाहिजे.

शेठजी:—शहरांतल्या मजुरांच्या नादीं लागून खेड्याचेहि मजूर बिघडले आहेत. महादू, मीं पगार वाढविला नाहीं हें खरें; परंतु तूं आजारी पडलास, लग्नाला गेलास, तरी तुझा पगार कापून घेतला का

महादू:—आमाला सुटी तरी कुठं देताव तुमी ? रजा तर बाजूलाच राहिली ! खाडे धरले नाहींत म्हून काय झालं ?

शेठजी:—खाडे धरणें, सुट्या देणें, रजा देणें हें सर्व मला मान्य आहे. पण तूंहि तसें काम करावयास पाहिजे. आम्ही तुमच्यामागें सारखें राहात नाहीं. कामाच्या बाबतींत तुमच्यावरच विश्वास ठेवतों कीं नाहीं ?

महादू:—मग काय झालं ? आमी काय शहराच्या मजुरावानी तासावर काम करीत नाई. सकाळपून सांज होईतवर काम करतों. कामांत कदीबी हयगय व्हायची नाहीं.

शेठजी:—तुझ्या कामाबद्दल मी तरी कुठं तक्रार करतों !

महादू:—जेवडं आमी काम करतों तेवडा पगार मिळाया हवा !

रामा:—शेतांत राबून काळ्याचं पांढरं झालं है माझं, मग मालकानं पगार का चढविला नाहीं. मीबी आतां दुसरीकडं नोकरी धरीन. कुटंबी चार घमेलं टाकायचं व पोटाला खायचं. मग इथंच काय गाठुडं पुरलं है ?

शेठजी:—रामा, तूंहि महादूच्या नादीं लागून बिघडलास वाटतं ? अरे, तुम्ही जर नोकऱ्या केल्या नाहींत तर जग ओस पडलं आहे का आम्हांला ? दुसरे नोकर आम्ही ठेवूं. बाकी खंडूसारखे नोकर विरळा.

रामा:—मालक, खंडूची कशाला बरोबरी करतां ? त्याचा मालकबी तसाच है. लगीन, सनवार समदं तो बगतो. त्याला एक श्यातबी त्याच्या मालकानं दिलं आहे. तो मरमर मरतो; पण त्याचं चीजबी त्येचा मालक करतो.

शेठजी:—तुम्हांला मी कांहीं पगार कमी देत नाहीं. तुम्हांला त्या पगारांत भागवितां येत नाहीं त्याला मी काय करूं ?

खंडू:—फाकडू बोललांत धनी! महादू झाला काय न् रामा झाला काय दोघवी सारखेच. 'आसन त्या दिवशीं दिवाळी व नसन त्या दिवशीं शिमगा.' त्येंच्या खर्चाला सुमारच नाहीं.

शेठजी:—कसं बोललास खंडू! सांग त्यांना जरा समजून.

महादू:—आमी दारू पिऊं, नाहींतर तमाशाला जाऊं; मालकासनी काय करायचं? काम चोख घ्यावं न दाम रोख द्यावा म्हंजे झालं.

दुसरे शेठजी:—तसं नव्हे महादू! तुम्ही कांहीं लोखंडाचें यंत्र नाहीं आहांत. घातलं तेल कीं झालं मशीन चालू किंवा निर्बुद्ध गाढव नाहीं आहांत. तुम्ही माणसं आहांत. माणुसकीनं चाला म्हणजे तुम्हांला देव कांहींहि कमी पडूं द्यावयाचा नाहीं. आमचा खंडू पाहा, राबतो, मिळवितो, सुखानें राहतो.

पाहिला शेठजी:—मी हेंच सांगतों यांना, पण ऐकतात कोठें?

दुसरा शेठजी:—हें पाहा कचरूलाल! सांगण्यासवरण्याचे दिवस गेले आतां. वागण्याचे दिवस आले आहेत. आपलें जेवढें उत्पन्न आहे तें सर्व राष्ट्राच्या मालकीचें आहे. आपण आतां स्वतंत्र झालों आहोंत. आपल्या संपत्तीचा शक्य तितका उपयोग राष्ट्राला करून दिला पाहिजे.

चांगलं खाल्लं पिलं कीं माणसाचीं शरीरं चांगलीं होतात, राष्ट्राचें उत्पन्न वाढतें आणि मग राष्ट्राचें शिक्षण, आरोग्य, धंदा हा सुरळीत चालतो. मानसिक व शारीरिक संपत्ति ज्या राष्ट्राजवळ भरपूर आहे तेंच राष्ट्र उत्तम. भारतवर्ष या दोन्ही दृष्टींनीं संपन्न आहे. तेव्हां आपल्या स्वतःच्या पायापुरतें न पाहतां आपल्या राष्ट्राच्या हिताकडे आतां अधिक बघितलें पाहिजे. गुणांचें चीज करणें व पैशाचा सदुपयोग करणें हें धंद्यांचें राष्ट्रीयीकरण केल्यानेंच साधणार आहे. तुझा पैसा आतां तुझ्या मालकीचा राहिला नसून तो राष्ट्राच्या मालकीचा झाला आहे. त्यांतले मुख्य भागीदार मजूर व शेतकरी हे होत.

कठिन शब्दार्थ

[इस पाठमें ग्रामीण भाषाका प्रयोग किया गया है। अनुमानसे शब्दोंका विकृत रूप समझना आसान है। पर फिरभी ग्रामीण शब्दोंके मराठी प्रचलित शब्द भी अर्थके साथ यहाँ दिये गये हैं।]

म्होरं, पुढच्या–आगामी
वाढणें–बढना
नादीं लागणें–आधीन होना
बिघडणें–खराब होना
खरें–सच
आजार–बीमारी
आठवण होणें–याद आना
हवा–चाहिये
राबणें–मेहनत करना
पांढऱ्याचे काळे–धूपसे सफेद बाल
भागीदार–हिस्सेदार
धरणें–स्वीकारना, पकडना
कुठबी, कोठेंहि–कहीं भी
घमेले–टोकरिया
गाठुडें–गठरी
ओस–वीरान
विरळा–क्वचित्, इनागिना
बरोबरी–तुलना, बराबरी
समदं, सर्वच–सभी
मर मर मरतों–जान तक देता हूँ
बाजूलाच–अलगही
मग काय झालं–फिर क्या हुआ
मजुरावानी, मजुरासारखे–मजदूरोंके अनुसार
हयगय–आनाकानी
व्हायची, व्हावयाची-होनेवाली
तक्रार–शिकायत
मी काय करूं–मैं क्या कर सकता हूं
फाकडु, उत्तम–बहुत अच्छा
आसन, असेल–होगा
सुमार–सीमा
करायचं, करावयाचें–करना है
चोख–चोखा
रोख–नकद
तसें नव्हे–यों नहीं
सांगण्यासवरण्याचे–कहने सुनानेके
सुरळीत–बे रोकटोक, अच्छा
पायापुरतें पाहणें-अपनें तईं सोचना

* * *

५५ : : सहवासोत्तर विवाह

[विवाह और सहवासोत्तर विवाहके संबंधमें महाराष्ट्रकी अवस्था इस कहानीमें ग्रथित की गयी है।]

गरजा वाढलेल्या नि त्या भागविण्याचीं साधनें कमी झाल्यामुळेंच सर्वच समाजाची पण त्यांतल्या त्यांत वधूपित्यांची कोण त्रेधा उडून गेली आहे ! लग्नसराई आली कीं वधूवरसूचक मंडळाचे व वरपित्यांचे उंबरठे झिजवितांना वधूपित्यांच्या नाकीं नऊ येतात.

लग्न होत नाहीं म्हणून शिक्षण चालू व शिक्षण पूर्ण व्हावयाचें म्हणून लग्न रहित. अशा विचारांत मुली बी. ए. एम्. ए. झाल्या तरी त्यांचीं लग्नें म्हणून होत नाहींत, आणि मग मुलगी अधिक शिकलेली व वयस्क म्हणून तिला वर पसंत करीत नाहींत. शेवटीं नाइलाजानें बिजवर, तिजवर, गरीब अथवा अशिक्षित वराबरोबर सुशिक्षित मुलीला लग्न करण्याची पाळी येते. जीवनाच्या गरजा भागवितां येत नाहींत म्हणून तरुणहि लौकर लग्नें करीत नाहींत.

नरहर आय्. सी. एस्. झाला होता. त्रिवेणीहि बी. ए. होती. दोघांनीं जवळ जवळ एक वर्ष एकत्र राहून लग्न केलें होतें. आचारविचार, ध्येय, धोरण आदि विषयांचा सांगोपांग विचार दोघांनींहि केला होता. जाति, गण, गोत्र, आदि नेहमींच्या पद्धतीनें वधूवरांची निवड झाली नसल्यामुळें दोघांचेहि आई, वडील, भाऊ, बहिणी दोघांच्यावरहि असंतुष्ट होत्या.

तारुण्याचा उन्माद ओसरल्यावर, लग्न झाल्यानंतर एक वर्षाच्या आंतच नरहर व त्रिवेणी यांच्यांत मतभेद निर्माण होऊं लागले. कुत्रा बाळगणें, रात्रीं दिवा मालवणें, सकाळीं लौकर उठणें, संडासांत वृत्तपत्रें वाचणें, आदि मतभेदांचीं कारणें पुनः पुनः घडूं लागलीं. दोघेहि नोकर होते. हजार पंधराशें रु. महिना मिळवीत असत. घरांत नोकर-चाकर, बाहेर मानसन्मान परंतु दोघांचींहि मनें मतभेदामुळें खिन्न होऊं

लागलीं. समजूत घालवयास व एकोपा घडवून आणावयास कोणीहि जवळ नव्हतें व तें जवळ येणेंहि शक्य नव्हतें. मतभेदाला व ह्या मतभेदामुळें निर्माण झालेल्या मानसिक खिन्नतेला कंटाळून शेवटीं दोघांनींहि विभक्त व्हावयाचें ठरविलें.

आज सायंकाळीं सोक्षमोक्ष करावा या उद्देशानें त्रिवेणी बागेंत विचारमग्न अवस्थेंत बसली होती. माळीण झाडांना पाणी घालीत होती. माळिणीकडे पाहून तिच्या लहानशा सुखी संसाराचें चित्र त्रिवेणीच्या डोळ्यापुढें उभें राहिलें. नवराबायको, दोन मुलें, दीर व नणंद अशीं सहा माणसें त्या कुटुंबांत होतीं. राहण्यास फक्त एक खोली, कष्टाला सीमा नाहीं. दागदागिने व कपड्यालत्त्यांचें फक्त दर्शन; तेंहि क्वचित् प्रसंगीं घडलेलें. अशाहि स्थितींत माळी आणि त्याची बायको आनंदानें जीवन कंठीत होतीं. त्रिवेणीनें आपल्यासारखेच मतभेद यांच्यांतहि असतील म्हणून माळणीला कांहीं प्रश्न विचारले, परंतु माळीण सर्वस्वीं सुखी असलेली त्रिवेणीला दिसली. "आपलें काम आपण करावें, पुरुषांच्या मध्यें बायकांनीं पडूं नये; वेळेला जेवण वाढलें कीं पुरुष बोलत नाहींत; मी कांहीं नेहमींच नोकरी करीत नाहीं; दोन मुलें खेळतीं आहेत म्हणून करतें; बायका त्या किती मिळविणार?" या माळणीच्या उत्तरांनींच त्रिवेणी भानावर आली. सहवासोत्तर विवाह सार्थ करण्यास शेवटीं माळीण कारणीभूत झाली.

कठिन शब्दार्थ

गरजा—स्त्री. आवश्यकताएं, जरुरतें
भागविणें—क्रि. निभाना
त्यांतल्या त्यांत—उसीमें
कोण त्रेधा—कितनी दुर्दशा
उडून गेली—हुई, होती रही

नाइलाजानें—लाचारीसे
बिजवर—पु.—द्वितीय लग्नेच्छु
सांगोपांग—अव्य. सविस्तर
निवड—स्त्री.—चुनाव
तारुण्याचा—वि.—जवानीका
बहर—वि. बहार

लग्नसराई--स्त्री. ब्याहके दिन
उंबरठा--पु. देहलीज
झिजविणें--क्रि. घिसाना
नाकीं नऊ येणें--नाकमें दम भर आना
राहित--कि.--मुल्तवी
विभक्त--अव्य.--अलग
सोक्षमोक्ष--पु.--निर्णय, अंत
माळीण--स्त्री.--मालन
उभे--अव्य.--खडे
दीर--पु.--भाया, जेठजी
नणंद--स्त्री.--ननद
कपडालत्ता--पु.--कपडावपडा
पडूं नये--न जाना चाहिये
ओसरणें--क्रि.--कम होना
बाळगणें--क्रि. रखना, पालपोसना
मालवणें--क्रि.--बुझाना
समजूत--स्त्री.--समझौता
एकोपा--पु.--एकता, इकाई
कंटाळणें--तंग आना
शेवटीं--अव्य.--आखिरकार
वाढणें--क्रि.--परोसना
बोलणें--क्रि.--कहना, बोलना
खेळती--क्रि.--खिलाडी
मिळविणें--क्रि.--कमाना, प्राप्त करना
भानावर आली--होशमें आई
कारणीभूत--कारण

* * *

५६ : : धाडसी मुलगा

कथा १

[केवल पढाई और अभ्यासके लिये ये कथाएँ दी गयी हैं। मराठी बालवाङ्मय आप पढें। अभ्यस्त बनेंगे।]

कांत नांवाचा एक मुलगा होता. तो अभ्यासांत हुशार होता. आज्ञाधारक असल्यामुळें त्याचे सर्वच जण कौतुक करीत होते. शरिरानें व तसेंच मनानें पण तो घट्टपुष्ट होता.

१९३७ सालीं हैदराबाद राज्यांत वंदे मातरम्‌करितां शाळेंत संप झाला. सर्वपरीनें प्रयत्न करूनहि वंदे मातरम् म्हणण्याला सरकार

अनुज्ञा देईना. तेव्हां राज्यांतील विद्यार्थ्यांच्या मध्यवर्ती मंडळानें सत्याग्रह करण्याचें ठरविलें. कांत हा दहावींत होता. हायस्कूलच्या वतीनें त्याची मध्यवर्ती मंडळांत निवड झाली होती.

कांत दृढनिश्चयी व बाणेदार असल्यामुळें विद्यार्थिवर्गांत तो प्रिय होता. जेव्हां सत्याग्रह सुरू झाला तेव्हां कांत पहिल्या तुकडीचा नेता बनला. या तुकडीचा सरकारनें भयंकर छळ केला. कांतला तर चाबकांनीं बडविलें. परंतु कांत डगमगला नाहीं. उलट दर चाबकागणिक वंदे मातरम् म्हणून आपल्या न्याय्य मागणीचा प्राणपणानें त्यानें पाठपुरावा केला. त्याला एकवीस फटके मारले. बेशुद्ध होईपर्यंत तो वंदे मातरम् म्हणतच होता. जेव्हां तो शुद्धीवर आला तेव्हां त्याच्या तोंडून प्रथम ' वंदे मातरम् ' हेंच घोषवाक्य निघालें.

कांतनें वंदे मातरम्करितां जे हाल सोसले त्यामुळेंच वंदे मातरम्ची चळवळ फोफावली व शेवटीं हैदराबाद सरकारला शाळेमधून वंदे मातरम् गीत म्हणण्याची अनुज्ञा द्यावी लागली. कांत वंदे मातरम् झाला. त्याचें नांव वंदे मातरम् पडलें. आजहि वंदे मातरम् म्हणूनच तो ओळखला जातो.

कठिन शब्दार्थ

आज्ञाधारक–वि. आज्ञाकारी, कौतुक करणें–क्रि. सराहना, धुष्टपुष्ट –वि. तगडा, संप–पु. हडताल, सर्वपरीनें–स. सब तरहसे, देईना– क्रि. न दे सकी, तेव्हां–अ. तब, ठरविलें–क्रि. तय किया, दहावींत– वि. दसवीं कक्षामें, निवड–स्त्री. चुनाव, बाणेदार–वि. आनपर जान देनेवाला, तुकडींत–स्त्री. कक्षामें, बनला–क्रि. हुआ, बना, छळ केला–क्रि. सताया, चाबकानी–पु. कोडेसे, बडविलें–क्रि. पीटा, उलट –अ. बदले, गणिक–अ. हर (कोडेपर), प्राणपणानें–पु. जी जानसे पाठपुरावा – पु. पीछा, बेशुद्ध–स्त्री. बेहोश, सोसलें–क्रि. सहे, फोफावली–क्रि. बढी, ओळखला जातो–क्रि. पहचाना जाता है ।

* * *

५७ : : भूदान

कथा २

'भूदान' यज्ञ पू. विनोबा भावे यांनीं १९४८ सालीं सुरू केला. हा यज्ञ धार्मिक आहे. कारण स्वेच्छेनें व श्रद्धेनें तो पूर्ण करावयाचा आहे. हा यज्ञ सामाजिक आहे. कारण सामाजिक शांतता आणि सुव्यवस्था या यज्ञांतून निर्माण व्हावयाची आहे. हा यज्ञ राजकीय आहे; कारण यानें राज्य संपन्न करावयाचें आहे आणि म्हणून भूदान यज्ञ धार्मिक, सामाजिक व राष्ट्रीय आहे.

भारत देश शेतीप्रधान आहे, शेती हाच येथील लोकांचा व्यवसाय आहे. हा व्यवसाय जर सुव्यवस्थित झाला तर भारतवर्ष सुवर्णभूमि झाल्याशिवाय राहणार नाहीं. शेतीचें विभाजन धड नाहीं. पुष्कळशा लोकांकडे खूप शेती आहे. यामुळें या लोकांकडील सर्व शेती वहीत होत नाहीं. कायद्यानें जर शेतीची पुनर्वाटणी झाली तर आपसांत मतभेद निर्माण होतील म्हणून या भूदान यज्ञाचें महत्त्व अधिक जाणवतें. भारतांतील सर्व शेती आधुनिक साधनांनीं व सामुदायिक रूपानें जर वहीत झाली तर—

(१) बेकारीचा प्रश्न सुटेल.

(२) सामुदायिक जीवन जगण्याची संवय होईल.

(३) यामुळें आपसांतील प्रेमसंबंध वाढतील.

(४) मतभेद टळतील.

(५) भारत देश उद्योगप्रधान व श्रमसहिष्णु बनेल.

आणि म्हणून पू. विनोबा भावे यांनीं हा यज्ञ सुरू केला आहे. ज्यांना स्वतःची जमीन नाहीं व ज्यांचा शेती हाच व्यवसाय आहे अशांनाच ते शेती देतात. या यज्ञांत सर्वांनाच सहभागी होतां यावें म्हणून भावेजी म्हणतात.

(१) ज्यांच्या जवळ जमीन आहे त्यांनीं भूमिदान करावें.

(२) ज्यांच्याजवळ शेती नाहीं पण धन आहे अशांनीं धनदान करावें.

(३) ज्यांच्याजवळ भूमि नाहीं व धनहि नाहीं पण शक्ति आहे अशांनीं श्रमदान करावें.

(४) भूमि, धन व श्रमहि ज्यांच्या जवळ नाहीं त्यांनीं मनदान द्यावें म्हणजे आशीर्वाद द्यावा.

हा यज्ञ संपन्न करतां यावा म्हणून सर्वांच्याकरितां सर्वांनीं झटावें या सद्‌भावनेनें हा यज्ञ सुरू केला आहे. पर्यायानें आमचेंहि हित या यज्ञामुळें होणार आहे, म्हणून आपण आजच भूदान यज्ञ यशस्वी करण्याकरितां यत्नशील होऊं या.

कठिन शब्दार्थ

सालीं–नपुं. वर्षमें, यज्ञांतून–पु. यज्ञसे, व्हावयाची–क्रि. होनेवाली, झाल्याशिवाय–क्रि. हुए बिना, धड–वि. ठीक, उचित, वहीत होणें–क्रि. जोतना, वांटणी–स्त्री. बँटवारा, विभाजन, सामुदाइक–वि. सामूहिक, जगण्याची–क्रि. जीनेका, संवय–स्त्री. आदत, टळतील–क्रि. टलेंगे, नष्ट होंगे, करतां यावा–क्रि. कर सकें, होऊं या–बनें.

* * *

५८ : : शिक्षण

कथा ३

शिक्षणानें जीवन संपन्न होतें. शिक्षणानें अज्ञान दूर होतें. शिक्षणानें चांगल्या संवयी जडतात. शिक्षणानें जगाची प्रगति कळते. शिक्षणानें आत्मज्ञान होतें. शिक्षणानें उद्योगशीलता वाढते. शिक्षणानें दुर्गुणांची जाणीव होते व सद्‌गुण आत्मसात कसे करावे हें कळतें.

म्हणून जीवनांत शिक्षणाचें फार मोठें स्थान आहे. शिक्षणाला ठराविक कालमर्यादा नसते. तें जन्मभर घ्यावयाचें असतें. ठराविक मर्यादेंत घेतलेलें पुस्तकी शिक्षण निरुपयोगी असतें. पुस्तकी शिक्षणानें जीवनाचे प्रश्न सुटत नाहींत. जीवन गुंतागुंतीचें असतें. अनेक बंधनांनीं तें व्याप्त असतें. अनेक प्रश्नांनीं तें गांजलेलें असतें. गुंतागुंती व गांजणुकींतून तें मुक्त करावयाचें असतें. ही मुक्तता पुस्तकी ज्ञानानें होत नाहीं. याकरितां प्रात्यक्षिक शिक्षण हवें.

प्रात्यक्षिक शिक्षण जीवनाशीं संबंधित असावें. जीवन जगण्याची कला प्रथम विद्यार्थ्यांना शिकवावी. जीवन जगत असतांना जे प्रश्न उत्पन्न होतील ते त्यांच्याकडूनच सोडवून घ्यावेत. यामुळें कल्पकता वाढेल व ती पूर्ण करण्याची शक्तिहि त्याबरोबरच निर्माण होईल. याच कल्पनेनें श्रीकृष्णानें अर्जुनाला रणांगणांत गीता सांगितली. ऋषींनीं बाल वयांत राम व लक्ष्मणाकडून यज्ञाचें रक्षण करविलें. राक्षसांना मारविलें.

मी कोण आहें, माझें कर्तव्य काय आहे, याची जाणीव प्रत्येकाला झाली पाहिजे. असें जर न झालें तर त्याचें एकाकी जीवन कष्टदायक होईल. जीवन हें एकाकीच असतें. कारण जन्म व मृत्यु हा एकट्यानेंच भोगावयाचा असतो, आणि म्हणून शिक्षण हें प्रात्यक्षिक व्हावें.

नुसत्या कल्पनेला जीवनांत कांहीं स्थान नसतें. कल्पनेचा अनुभव व विस्तार केल्यानेंच जीवन सुखी व संपन्न बनतें. जीवनाची सफलता ही शिक्षणावर अवलंबून असते. तेंव्हां शिक्षण अनुभवानें व प्रत्यक्ष-ज्ञानानें व्हावें.

कठिन शब्दार्थ

शिक्षण—नपुं. शिक्षा, पढाई, संवय—स्त्री. आदत, कळणें—क्रि. जानना, वाढणें – क्रि. बढना, जाणीव—स्त्री. अनुभव, ठराविक—वि. मर्यादित, घ्यावयाचे—घेणें, असतें—असणें—लेनी (प्राप्त करनी) होती है,

निरुपयोग–वि. निकम्मा, बेकार, सुटत–सुटणें–क्रि. हल होना, गुंतागुंत– वि. उलझन, गांजलेलें–गांजणें–क्रि. त्रस्त होना, हवें–क्रि. हो, चाहिये, असावें–असणें–हो, रहे, जगण्याची–जगणें – क्रि. जीना, कडूनच–अ. द्वाराही, सोडवून–सोडविणें–क्रि. हल करना, रणांगण–नपुं. लडाईका मैदान, सांगितली–सांगणें–क्रि. कहना, करविलें–करणें क्रि. करना, मारविलें–क्रि. मरवाया, कोण–स. कौन, एकाकी–वि. तनहा, कष्टदायक–वि. दुःखप्रद, नुसत्या–नुसता–अ. केवल, विस्तार –पु. फैलाव

* * *

५९ : : माझें गांव

कथा ४

मी बी. ए. झालों. नोकरीच्या उद्देशानेंच मला कॉलेजचें शिक्षण दिलें. पण वडील वारल्यामुळें कर्मधर्मसंयोगानें मला गांवींच राहावें लागलें. संसाराचा भार मजवर पडला. घरीं शेती बरीच होती. गांवीं राहण्यानेंच तिचें उत्पन्न वाढणार होतें. शेती पुरेशी असल्यामुळें, नोकरी मिळत नसल्यामुळें व शेतकऱ्यांना सरकार साहाय्य देत असल्यामुळें शेती करण्याचेंच मीं ठरविलें. मी शेतकरी झालों.

मी सुसंस्कृत, शिकलेला शेतकरी असल्यामुळें प्रथम प्रथम इतर शेतकरी माझ्याशीं बिचकून वागत. पण हळूहळू ते माझ्यांत रमले व मी त्यांच्याशीं एकरूप झालों.

शाळा, दवाखाना, वाचनालय, रेडिओ आदि आधुनिक साधनांनीं माझें गांव मला थोड्याच दिवसांत भूषवितां आलें. साहचर्यानें गांवांत एकोपा निर्माण झाला. यामुळें आपोआपच गांवाची रचना, आरोग्य व मैत्रींत वाढ झाली.

माझ्या गांवांत पाण्याचा दुष्काळ नाहीं.
माझ्या गांवांत धान्याची कमतरता नाहीं.
माझ्या गांवांत भांडणें होत नाहींत.
माझ्या गांवांत आजार प्रवेश करीत नाहीं.
आजाराला थारा मिळत नाहीं.
लोक अनेक लहानमोठे ग्रामीण उद्योग करतात.
यामुळें माझें गांव स्वयंभू झालें.
गांवाचा कारभार गांवकरीच करतात.
भांडणें, मतभेद, अडीअडचणी गांवकरीच प्रेमानें दूर करतात.
गांवाचे शास्ते गांवकरीच आहेत.
यामुळें माझें गांव आदर्श झालें.

मला तें प्राणापेक्षांहि प्रिय आहे. मात्र मी नेहमीं कुठल्याहि गोष्टीचें नेतृत्व आपण होऊन पत्करीत नाहीं. तरी पण हळू हळू तें मजकडेच येत आहे. माझ्या या वागण्यामुळें माझ्या शेतांतील शेतकरी व मजूर मोठ्या प्रेमानें कामें करतात आणि त्याचेंच फळ कीं काय माझें उत्पन्न तीस हजार रुपये झालें आहे. माझें गांव शहराचा नमुनाच आतां झालें आहे. या सर्व गोष्टीला कारण जर कोणतें असेल तर तें एकच आहे आणि तें म्हणजे—

'जो काम करतो तो खातो व जो रिकामा राहतो तो उपाशी मरतो' हा दंडक आमच्या गांववाल्यांनीं आपल्यावर लादून घेतला.

काशीरामसिंग हजारे
हैदराबाद राज्य

कठिन शब्दार्थ

वारल्यामुळें—वारणें—क्रि. मरजानेके कारण
पुरेशी—अ. काफी
कमतरता—स्त्री. कमी
भांडणें—भांडण—नपुं. झगडा
आजार—पु. बीमारी

शेतकरी–पु. किसान
झालों–होणें–क्रि. हुआ
बिचकून–वि. बिना गलतीके
वागत-वागणें–क्रि. बरताव करते
रमले–रमणें–क्रि. रममाण होना
एकोपा–पु. एकी–स्त्री. ऐक्य
आपोआप–अ. अनायास, सहज
दुष्काळ–पु. अकाल
थारा–पु. आधार
कारभार–पु. कारोबार
अडीअडचण–स्त्री. समयअसमय, सुविधा असुविधा
कीं काय–अ. न जाने
दण्डक–पु. सिद्धान्त
लादून–क्रि. लादकर

* * *

६० : : म्हणी

[मुहावरे और कहावतें भाषाका प्राण हैं। अन्यत्र मुहाविरे दिये गये हैं। अब यहाँ कहावतें दी जाती हैं। मात्र हिंदी कहावतोंको यहाँ प्राधान्य दिया गया है। जिनका पर्याय मराठी कहावतों द्वाराही दिया गया है। अध्ययनके लिये कतिपय कहावतोंका उपयोगभी किया गया है।]

(१) हाथकंगनके लिये क्या आरसी।

हातच्या काकणाला आरसा कशाला ?

चंद्रकांत उद्यांपरवां गांवाहून येईल. तो आला म्हणजे सर्व कांहीं कळेल. हातच्या काकणाला आरसा कशाला ?

(२) ऊँची दूकान फीका पकवान।

नांव सोनूबाई व हातीं कथलाचा वाळा.

देशपांडेची स्थिति "नांव सोनूबाई नि हातीं कथलाचा वाळा" यासारखी झाली आहे. त्याच्या जवळ आतां एक पैहि राहिली नाहीं.

(३) गंगा गये गंगादास, जमना गये जमनादास ।

वारें वाहील तशी पाठ फिरविणें.

रामेश्वर वारे वाहील तशी पाठ फिरविण्यांत मोठा वस्ताद आहे.

(४) अधजल गगरी छलकत जाय ।

उथळ पाण्याला खळखळाट फार.

गंगाधर बोलका आहे म्हणून त्याच्याविषयीं लोक हें समजतात कीं उथळ पाण्याला खळखळाट फार. पण तसें नव्हे, तो फार गंभीर आहे.

[ऊपरकी चार कहावतोंके समान निम्न कहावतोंका वाक्योंमें प्रयोग कीजिये]

(५) कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली ।

कुठें इंद्राचा ऐरावत नि कुठें शामभटाची तट्टाणी.

(६) जिसकी लाठी उसकी भैंस ।

ज्याच्या हातांत ससा तो पारधी.

(७) ते तो पाँव पसारिये जेती चादर होय ।

हंथरूण पाहून पाय पसरणें.

(८) कंगालीमें आटा गीला ।

दुष्काळांत तेरावा महिना.

(९) काटो तो खून नहीं

पांढरा फक्क, सर्द.

(१०) खोदा पहाड निकली चुहिया ।

डोंगर पोखरून उंदीर काढणें.

(११) दिमाग ठिकाणे आना ।

वठणीवर येणें.

(१२) चिराग तले अंधेरा ।

दिव्याखालीं अंधार.

(१३) गुडपर मक्खियाँ टूटना ।

गुळाला मुंगळे चिकटणें.

(१४) लोटपोट हो जाना।
हंसून हंसून मुरकुंडी वळणें.

(१५) न लगे हर फिटकिरी और रंग चोखा!
परस्परा पावणें बारा.

(१६) सुईके छेदमेंसे निकल जाना।
सहीसलामत सुटणें.

(१७) मजा किरकिरा होना।
आनंदावर विरजण पडणें.

(१८) लहूका घूँट पीकर रह जाना।
अपमान गिळणें.

(१९) मुँहके बल गिर पडना।
तोंडघशी पडणें, मूग गिळणें.

(२०) बारूदके ढेरपर दिया सलाई।
आगींत तेल.

(२१) अंधेके हाथ बटेर लग जाना।
घबाड साधणें.

(२२) चोरी और सीना जोरी।
चोर तो चोर आणि वर शिरजोर.

(२३) कलेजा मुँहको आना।
प्राण कंठाशीं येणें.

(२४) घीके चिराग जलाना।
दिवाळी साजरी करणें.

(२५) दूरके ढोल सुहावने।
दुरून डोंगर साजरे.

(२६) बंदर क्या जाने अदरकका स्वाद ।
गाढवाला गुळाची चव काय ?
(२७) धोबीका कुत्ता न घरका न घाटका ।
त्रिशंकु.
(२८) नंगी क्या न हो एगी क्या नीचो डेगी ?
ज्याच्या शेती नाहीं माती तो काय पिकविणार माती?
(२९) नानीके आगे ननिहालकी बातें ।
आजीपुढें आजोळच्या गोष्टी.
(३०) सौ चूहे खायके बिल्ली चली हजको ।
करून करून भागले नि देवपुजेला लागले.
(३१) फटकचंद गिरधारी, पास न लोटा, पास न थाली ।
बारा पिंपळावरचा मुंजा.
(३२) सीधी ऊँगलीसे घी नहीं निकलता है ।
सरळपणानें काम होत नाहीं.
(३३) आगसे निकला और चूल्हेमें गिरा ।
आगींतून निघाला आणि फुफाटयांत पडला.
(३४) लेना एक न देने दो ।
घेणं नास्ति देणं नास्ति.
(३५) मुल्लाकी दौड मसजिद तक ।
सरडयाची धांव कुंपणापर्यंत.
(३६) मरता क्या नहीं करता
मेलेलें कोंबडें आगीला भीत नाहीं.
(३७) बकरीकी जान गयी, खानेवालेको मजा न आयी ।
शेळी गेली जिवानिशीं खाणार म्हणतो वातड.
(३८) जो गरजता है वह नहीं बरसता है ।
गर्जेल तो पडेल काय ?

(३९) चलती गाडीमें रोडा अटकाना।
चालत्या गाडीला खीळ घालणें.

(४०) गोदमें लडका शहरभर ढिंढोरा।
हातांत कळसा गांवाला वळसा.

कठिन शब्दार्थ

काकण—नपुं. चूडी, कंगन
आरसा—पु. आईना
कथील—नपुं. एक सामान्य धातु
वारें—नपुं. हवा
वाहणें—क्रि. बहना
उथळ—वि. ओछा
खळखळाट—पु. पानीका बहाव
ऐरावत—पु. हाथी
तट्टाणी—स्त्री. घोडी
ससा—पु. खरगोश
हंथरूण—नपुं. बिछौना
पोखरणें—क्रि खोदना
वठणीवर—वि. रास्तेपर
चिकटणें—क्रि. सटना
परस्परा—पु. दूसरोंसे
विरजण—नपुं. आवरण
गिळणें—क्रि. निगलना
चव—स्त्री. स्वाद, रुचि
माती—स्त्री. मिट्टी
आजोळ—नपुं. ननिहाल
गोष्ट—स्त्री. बात, कहानी
भागले—क्रि. थक गये
पिंपळ—पु. पीपल
मुंजा—पु. एक देवता
फुफाटा—पु. धूल
धाव—स्त्री. दौड
कुंपण—नपुं. बाढ
कोंबडा. पु. मुर्गा
शेळी—स्त्री. बकरी
खीळ—स्त्री. रोडा
कळसा—पु. घडा
वळसा—पु. चक्कर

* * *

हम जिस प्रांतमें रहते हैं वह आर्यानिवासी प्रांत है। आर्योंकी भाषाको संस्कृत, गीर्वाण या देवभाषा कहते हैं। इन्हीं भाषाओंका प्राकृतरूप मराठी भाषा है।

संस्कृत मंजी हुई नियमबद्ध भाषा है। इसलिये इस भाषामें कोई फरक नहीं हुआ। द्रविड और आर्य जातीके संपर्क से लोकव्यवहारकी भाषामें जो परिवर्तन होते गये वे अभी भी जारी हैं। स्वयं मराठीके भी कई रूप हैं। पुणेंकी मराठी, कोकणी, वऱ्हाडी, खानदेशी, नागपुरी आदि प्रकार मराठी भाषाके भी पाये जाते हैं। पुणेंकी भाषा अधिक स्पष्ट, शुद्ध और मंजी हुई मानी जाती है।

आर्य भाषाका साधार इतिहास आज उपलब्ध नहीं है। बौद्ध धर्मका प्रचार इ. स. पूर्व छटी शताब्दिमें भारतवर्षके कोनेकोनेमें हुआ था। उन दिनोंमें लिखे गये शीलालेखोंसे पता चलता है कि प्राकृत भाषाएँ उस समय प्रचलित थीं। जैन, बौद्ध, धर्मके प्रचारवाङ्मयसे पता चलता है कि आठवी शताब्दितक ये भाषाएँ रायज थीं। लगभग दसवीं शताब्दिमें जिन प्राकृत भाषाओंका रूप निर्धारित हुआ उन्हीमेंसे हिंदी, गुजराथी, मराठी भाषाओंके पूर्वरूप पैदा हुए। १ आर्य भाषा, २ प्राकृत, ३ तथा देशभाषाएँ ये भाषाओंका क्रम है।

लोकभाषाओंका स्वरूप दिनप्रतिदिन सुगमताके कारण बदलता है परंतु संस्कृत भाषाका न कभी बदला और न बदल सकता है। देशी भाषाओंका जन्म संस्कृतसे हुआ। संस्कृतमें शब्दसंपात्ति पर्याप्त है, और वह व्याकरणबद्धभी है। इसीलिये भाषाविषयक जो भी प्रश्न उपस्थित होंगे वे संस्कृतद्वाराही सुलझ सकते हैं।

महाराष्ट्री

सभी देशी भाषाओंके साथ याने आठवी शताब्दिमें मराठीने (महाराष्ट्री) भी जन्म लिया है। यह भाषा वऱ्हाड प्रांत, खानदेश प्रांत,

कोकण प्रांत और महाराष्ट्र प्रांतमें तथा सागर, जबलपूर, देवगड विभागोंमें प्रचलित थी। दसवीं शताब्दितक इस भाषाको महाराष्ट्री कहते थे। आज वह मराठीके नामसे परिचित है। आजकी मराठी भाषापर महाराष्ट्रीका असर करीब १६ वीं शताब्दितक था।

मराठीके नियम, ढाँचा, ढंग, रूप संस्कृतोद्भव है। परिस्थितिके अनुसार भाषामें फरक होताही रहता है। संस्कृतके कई शब्दोंको, रूपोंको और नियमोंको मराठीने अपनाया है। कहीं अपभ्रंश, कहीं तद्भव, कहीं तत्सम रूपोंकोही मराठीने अपनाया है।

मुसलमानोंके जमानेमें मराठीपर अरबी, फारसी का प्रभाव था। अंग्रेजोंके जमानेमें अंग्रेजीका था और आज मराठीपर हिंदी भाषाका प्रभाव है। सीमाप्रांतीय भाषाएँ हमेशा मिश्रित हुआ करती हैं। दिन प्रतिदिन भाषाका स्वरूप परिणत और आसान होता रहता है। मात्र यह सब संस्कृतहीके कारण होता है और होता रहेगा। क्यों कि संस्कृत अमर है।

भाषा-काल

सुगमताके लिये प्रचलित मराठी भाषाके पाँच कालखण्ड निर्धारित हो सकते हैं।

प्रथम काल— प्रारंभसे सन १५५० तक। संत ज्ञानेश्वरजी, मुकुंदराय, नामदेव आदि संतोंका साहित्य बडाही रोचक और भक्तिमार्गी है वह काव्यरूपमें अत्यधिक पाया जाता है।

दूसरा काल—१५५० ता १६५० तक। संतकवि एकनाथ, मुक्तेश्वर, रघुनाथपंडित, आनंदतनय, विठ्ठल, श्रीधर आदि संतोंके अनुभव और मार्गदर्शन काव्यद्वारा हम पा सकते हैं।

तीसरा काल—सन १६५० ता १७५० तक। इस कालमर्यादामें समर्थ रामदास, संत तुकाराम, वामन आदि महापुरुषोंके दर्शन हमें होंगे।

चौथा काल— १७५० ता १८५० तक। इस अवधिमें कवि मोरोपंत, महिपतीबुवा, अमृतराय, रामजोशी, अनंतफंदी आदि महानुभाव हुए हैं।

पाँचवा काल—सन १८५० ता आज तक याने प्रचलित कालखण्ड। इस कालखण्डमें चिपळूणकर, लोकमान्य तिलक, केळकर, आगरकर, डॉ. केतकर, नाथमाधव आदि लेखक और कवि स्वर्गस्थ हो चुके हैं। वीर सावरकर, आपटे, फडके, खांडेकर, सरदेसाई, माडखोलकर आदि अनेक लेखक और कवि इस कालखण्डमें हैं। सन १९३५ के बाद आधुनिक काल।

मराठी तीन करोड लोगोंकी मातृभाषा है। समूचे भारतवर्षमें महाराष्ट्रीय बिखरे हुए हैं। इस तीन करोडके अतिरिक्त कोंकणी आदि भाषीय हैं। भाषावार प्रांतरचना जब होगी तब महाराष्ट्र, बृहन्महाराष्ट्रमें परिवर्तित होकर विशाल महाराष्ट्र बन जाएगा।

मराठी साहित्य हमेशा तुलनात्मक, रोचक और मधुर रहा है। संशोधक अनुसंधान करनेकी प्रवृत्ति महाराष्ट्रमें अधिक पाई जाती है। भाषाविषयक सभी विभागोमें योग्यतापूर्वक लिखा जाता है और ये लेखनभी सफल होता है। मराठीका इतिहास, गुणधर्म, संस्कृति, शूरता का प्रत्यक्ष दर्शन आप तभी कर सकेंगे जब मराठी सीख जाएँगे।

अभ्यास

मराठीमें उत्तर दीजिए—

१. यदि गोग्रासकी प्रथा न होती तो रागिणी अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत कर सकती? क्या उसका जीवन सफल होता? वह कैसे?

२. क्या मराठी लिपि सुधारका ढंग ठीक है?

३. सहवासोत्तर विवाहमें जो विचार प्रदर्शित किये हैं, क्या इन विचारोंसे आप सहमत हैं? नहीं तो क्यों नहीं?

४. हिंदी भाषाका इतिहास ५ पृष्ठोंमें लिखिए।

[निम्न प्रश्नोंके उत्तर मराठीमें दीजिये]

१ राष्ट्र म्हणजे काय? त्याचीं लक्षणें कोणतीं?

२ भाषा, संस्कृति, इतिहास, भौगोलिक मर्यादा व धर्म या दृष्टीनें भारत हें राष्ट्र होऊं शकेल काय?

३ हिंदी राष्ट्रभाषा म्हणून ठरविण्याचा कोणीं यत्न केला?

४ देशी भाषेंतील परकीय रूढ शब्द काढून टाकावेत काय?

५ हिंदी भाषेंत किती प्रतिशत परकीय शब्द आहेत?

६ नवीन शब्द घेणें झाल्यास कोणत्या भाषेंतून घ्यावेत व कां?

* * *

६२ : : शब्दसाम्य व अर्थभिन्नता

[हिंदी और मराठीवालोंके लिये मार्गदर्शक शब्दसंग्रह]

साँस—स्त्री. श्वास पु.

सांड पु.—पोळ पु.

अगूठा पु.—आंगठा पु.

छाता पु.—छत्री स्त्री.

घडा पु.—घागर स्त्री.

घडियाल पु.—मोठी घंटा स्त्री.

मगर पु.—सुसर स्त्री.

छडा पु.—एकटा पु.

माली पु.—माळी पु.

चौपट वि.—नष्ट वि.

यात्रा स्त्री.—प्रवास पु.

चेष्टा स्त्री.—प्रयत्न पु.

सास स्त्री.—सासू स्त्री.

सांडनी स्त्री.—उंटाची मादी स्त्री.

अंगूठी स्त्री.—अंगठी स्त्री. अंगीठी—शेगडी स्त्री.

छत पु.—गच्ची स्त्री.

घड़ी स्त्री.—घड्याळ नपुं.

घडियाल पु.—मगर, सुसर स्त्री.

मगर अ.—परंतु अ.

छडी स्त्री.—छडी स्त्री.

माला स्त्री.—माळ स्त्री.

चौगुना वि.—चौपट वि.

मेला पु.—यात्रा स्त्री.

दिल्लगी स्त्री.—चेष्टा स्त्री.

शिक्षा स्त्री.–शिक्षण नपुं.
जलसा पु.–सभा स्त्री.
कोई–सर्व. कोणी
गर्मी स्त्री.–उष्णता स्त्री.
जाडा पु.–हिवाळा पु.
भारी वि.–जड वि.
रोडा पु.–व्यत्यय पु.
दादा–पु. आजोबा (मराठींमें बडा भाई)
पेरना क्रि.–गाळणें. क्रि.
शहद पु.–मध. पु.
कमरे–पु. खोल्या स्त्री.
बोरे पु.–पोतीं नपुं.
कम वि.–थोडें वि.
दिन पु.–दिवस पु.
नशा स्त्री.–निशा स्त्री.
पता पु.–पत्ता पु.
क्यों–कां
दूर वि.–लांब वि.
कै स्त्री.–वांती स्त्री.
झाड पु.–मोठें रोपटें नपुं.

सजा स्त्री.–शिक्षा स्त्री.
बैठक स्त्री.–(गानेकी) जलसा पु.
कुछ अ.–कांहीं अ.
गर्मी स्त्री.–उन्हाळा, उकाडा पु.
मोटा पु.–जाडा, लठ्ठ पु.
जड स्त्री.–मूळ नपुं.
आपत्ति स्त्री.–संकट नपुं.
दादी–स्त्री. आजी स्त्री.

बोना–क्रि. पेरणें (बी) क्रि.
शहीद पु.–हुतात्मा पु.
कमरें स्त्री.–कंबरा स्त्री.
बेर पु.–बोरें नपुं.
कमी–वि. उणेपणा
दीन–वि. गरीब
निशा स्त्री.–रात्र स्त्री.
पत्ता पु.–पान नपुं.
क्या–काय
दूरी–स्त्री. अंतर
कई–वि. कित्येक
पेड पु.–झाड नपुं.

अनुस्वार अंकित शब्दार्थ

ज़रा–थोडें
सज़ा–दण्ड, शिक्षा
ख़ाना–स्थान, ठिकाण
तेज़–जलद, गति

जरा–म्हातारपण
सजा–सजव
खाना–जेवण
तेज–प्रकाश

क़िला–किल्ला	कीला–खिळा
गुल–नाहींसा	गुल–फुल
गंज़–मोजण्याचा 'गज'	गज–हत्ती
ज़माना–काळ, वेळ	जमाना–जमविणें, लगाविणें
बाग़–उद्यान	बाग–लगाम
बाज़–कांहीं	बाज–एक पक्षी
नाज़–गर्व	नाज–अनाज
राज़–रहस्य, राज़–गवंडी	राज–राज्य
दाग़–कलंक	दाग–नग, डाग

[इन शब्दोंसे नुक्तेका महत्त्व क्या है यह आप जान सकते हैं। फिरभी मराठीमें यह बंधन या सुविधा नहीं है।]

प्रश्न–पत्र २

१ ला प्रश्न—आपल्या वडिलांस एक पत्र लिहून सहलीकरितां (सैरके लिये) पन्नास रुपये मागवा.

२ रा प्रश्न—'गरिबी हें पाप नव्हे' या विषयावर २५ ओळी निबंध लिहा.

३ रा प्रश्न—दिल्लीची माहिती थोडक्यांत लिहा.

४ था प्रश्न—एका शेतकऱ्याच्या वेषभूषेचें वर्णन करा.

५ वा प्रश्न—महाराष्ट्रांतील पुढाऱ्यांचा परिचय करून द्या.

६ वा प्रश्न—मराठी व हिंदी भाषेंतील अंतर व साम्य सांगा.

७ वा प्रश्न—लिपीच्या सुधारणेबद्दल तुमचें काय मत आहे ?

८ वा प्रश्न—गाय, तुळस यांना आम्ही कां गौरवितों हें सांगा.

९ वा प्रश्न—महाराष्ट्राबद्दल तुमचें काय मत आहे ?

१० वा प्रश्न—मराठी शिकून तुम्ही काय करणार ? थोडक्यांत लिहा.

११ वा प्रश्न—बैलाची उपयुक्तता लिहा.

समाप्त

दोषभाजन अर्थात् शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४	१०	(पाठ-क्रमांक) ८	७
२१	२५	जबनपर	जबानपर
२२	१२	गडरियाकी	गडरियोंकी
२८	शब्दार्थ १	मेर	मेरा
३५	१	बारम	बारेमें
३६	८	वाहानुसार	अनुसार
३६	१९	कारान्त	एकारान्त
३६	२४	ान	लहान
४०	१०	हमे	हम
४२	९	संज्ञाओंके	संज्ञाओंको
७०	१२	ए. व., द्वितीयाका	ए. व, 'ला' द्वितीयाका
७०	२१	प्रत्यय	रूप
७५	१२	पडणारे	पाडणारे
९८	१६	बनाना	बनना
१०५	११	भीती	भाँति
१०६	६	हिंदी आहेत	आहेत
११५	११	वाटवी	वाटती
१२०	१५	कचमूरके	कचूमरके
१२१	२३	गूड	गुड
१२३	१६	जानता	जाणतां

• • •

किंमत : रु. ३·५०

चित्रशाळा प्रकाशन